विनोदशतकम्

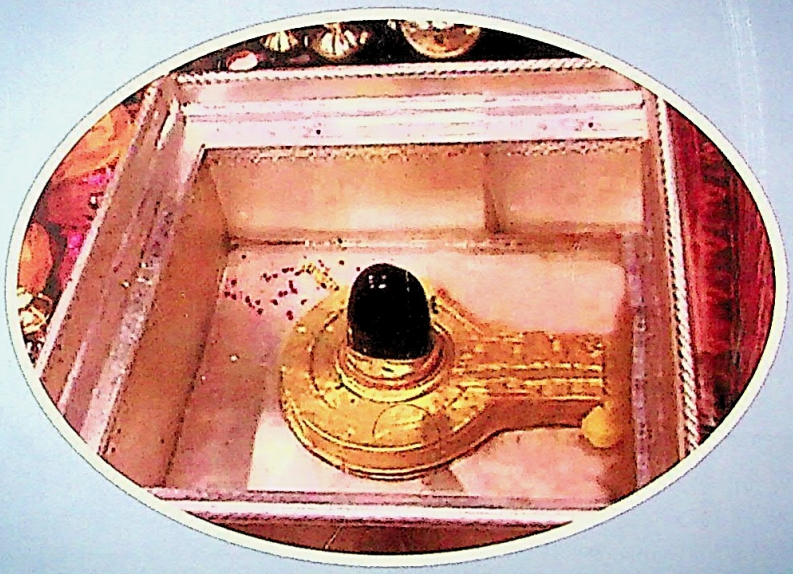

संकलन, सम्पादन एवं अनुवाद

डॉ. प्रमोदिनी पण्डा

शैवभारतीशोधप्रतिष्ठानम्

डी. ३५/७७, जंगमवाड़ीमठ, वाराणसी- २२१००१

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शोधप्रकाशन-ग्रन्थमाला – ९२

विनोदशतकम्

संकलन, सम्पादन एवं अनुवाद
डॉ. प्रमोदिनी पण्डा

शैवभारतीशोधप्रतिष्ठानम्
डी. ३५/७७, जंगमवाड़ीमठ, वाराणसी - २२१००१

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रकाशकः
शैवभारती-शोधप्रतिष्ठानम्
डी. ३५/७७, जंगमवाड़ीमठ
वाराणसी-२२१००१

ISBN : 978-93-82639-32-9

© लेखिकाधीनम्

प्रथमं संस्करणम् : २०१८

प्रतयः – ५००

मूल्यम् : २५०.००

मुद्रकः
श्रीजी प्रिण्टर्स
नाटी इमली, वाराणसी

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्री श्री श्री १००८ जगद्गुरु विश्वाराध्य सिंहासन
डी ३५/७७ जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी - २२१००१ (यू. पी.)
Shri Shri Shri 1008 Jagadguru Vishwaradhya Simhasan
D 35/77, Jangamwadi Math, Varanasi - 221001 (U. P.)
Phone : 0542-2450546

पत्रांक : दिनांक

आशीर्वचनम्

अतिबृहत्संस्कृतवाङ्मयस्य कलेवरे गद्यपद्यचम्पूसाहित्यं समाहितमस्ति। एतेषु भारतीयपरम्परां क्रोडीकृत्य पद्यसाहित्यं महाकाव्य-शतक-समस्यापूर्ति-प्रहेलिकादिभिरुपर्बृहितं सत्स्वमहिमानं वर्धयद् राराजते। इदानीं संस्कृतज्ञाः काव्यरसिकाश्च महाकाव्यं शतकसाहित्यं च वर्धयन्ति। परन्तु समस्यापूर्ति-प्रहेलिकान्योक्तिसाहित्यमुपेक्षितं दृश्यते।

संस्कृतवाङ्मयेषु समुपलब्धेषु एतादृशसाहित्यमनुशीलयन्ती कतिपय चमत्कारविनोदपरकाणि संगृह्य ग्रन्थकर्त्या तिसृषु हिन्दी-अंग्रेजी-आडिआभाषास्वनुद्य सहृदयानां करकमलेषु उपस्थापयतीति महत आनन्दस्यावसरः। अनुवादो नितान्तं दुष्करं कर्म, यतो हि मूलग्रन्थस्य भावोऽविकलतया तत्रोपस्थापनीयो भवन्ति, अनतिसाधारणं कार्यं कृत्वा साधारणजनमानसमान्दोलयन्ती अनुवादकार्यं निष्पादयन्ती संस्कृतमातुर्महदुपकारः कृत इति विश्वसीमि।

अस्माकं शैवभारती-शोधप्रतिष्ठानमेतादृशं लोकहितकरं कार्यं प्रोत्साहयति। अयं हि श्रेष्ठोऽनुवादो मूलसंस्कृतस्य प्रतीतिं नूनं कारयिष्यतीति मे द्रढीयान् विश्वासः। अनुवाद्कर्त्रीं **डॉ. प्रमोदिनीपण्डामहं** साधुवादैः सभाजयामि। शिवार्पणमस्तु।

काशीस्थजंगमबाडीमठः इत्याशिषः

जगद्गुरु-विश्वाराध्य डॉ.चन्द्रशेखरशिवाचार्यः

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्राक्कथन

मानव जाति अपनी अस्मिता को लेकर गर्व अनुभव करती है। इसकी अनेक पहलू हैं जो विरासत से प्राप्त हुई हैं। इसलिए तो कहा गया है— **'भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा'**। संस्कृत के अन्तर्गत वैदिक वाङ्मय से लेकर लौकिक संस्कृत तक लिखे गये समग्र साहित्य को समावेश करते हुए संस्कृति के अन्तर्गत कला, इतिहास, जीवनशैली आदि अनेक पक्षों को लेते है। इस परम्परा को आगे बढ़ाने के लिए पूर्व सूरियों ने अथक परिश्रम किया है एवं अब भी वह श्रृंखला जारी है। इसीलिए तो क्रान्तद्रष्टा मनु ने कहा था—

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।।

आज विश्व दरबार में हमारा गर्व करने का कारण है—हमारा इतिहास और सांस्कृतिक धरोहर।

वेदों में कही गई बात चिरन्तन सत्य है जो पहले थी, आज है, और कल भी रहेगा। वैदिक वाङ्मय को न कोई परिवर्तन कर सकता है न करने का साहस करेगा। इसीलिए शायद समग्र विश्व में उपलब्ध वैदिक वाङ्मय का कोई पाठान्तर नहीं है और सभी आस्तिक साहित्य वेद के प्रमाण को लेकर अपनी काव्य सृष्टि को धरातल पर उतारते हैं। वेदों के पश्चात् वैदिक दर्शन एवं दो आर्ष काव्य-रामायण और महाभारत आते है। उपर्युक्त समस्त साहित्यों को उपजीव्य मानकर न केवल संस्कृत में अपि तु प्रान्तीय भाषा में साहित्य रचे गये हैं। उनमें अनेक कालजयी हो गये हैं। हिन्दी में रचित रामचरित मानस, बंगाली भाषा में रचित कृत्तिवास रामायण और द्रविड़ भाषा में रचित कम्ब रामायण को हम नमूने के तौर पर ले सकते हैं। इस प्रकार महाभारत भी प्रान्तीय भाषा में रचित होकर संस्कृत भाषा के अनभिज्ञ लोगों के उत्साह को वर्द्धित करता है। यह रामायण एवं महाभारत संस्कृति की यात्रा भारत के बाहर जावा, सुमित्रा, मैनमार, श्रीलङ्का, इण्डोनेशिया आदि देशों में पहुंच कर वहाँ की लोक संस्कृति की हिस्सा बन गई है।

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

संस्कृत के इस धरोहर को दो भाग में बाँट सकते हैं—विद्या और कला। विद्या के अन्तर्गत चौदह विद्यायें हैं।

अङ्गानि वेदाश्चत्वारो मीमांसान्यायविस्तारः।
धर्मशास्त्रं पुराणं च विद्या ह्येताश्चतुर्दश।।

इन चौदह ऋक्, यजु, साम, अथर्व, शिक्षा, छन्द, कल्प, ज्योतिष, निरुक्त, व्याकरण, न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र एवं पुराण के साथ चार उपवेद–आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद एवं स्थापत्य वेदों को मिला देने से विद्याओं की संख्या अठारह हो जाती है। विद्याओं के पश्चात् कलाओं को हम भारतीय अस्मिता की कोटि में लाते है। जब विद्या ज्ञान से संबद्ध है, तब कला कौशल की बात करती है। यह कोई आवश्यक नहीं है कि कला विद्या से सम्बद्ध हो–जैसे वास्तुकला, चित्रकला, काष्ठकला आदि। परन्तु बहुत सारी कलायें ऐसी हैं जो विद्या के बिना पनप नहीं सकती हैं। इन श्रृंखला में प्रहेलिका, समस्यापूर्ति आदिओं का भी ग्रहण होता है।

काव्य शास्त्रों में इन प्रहेलिका एवं समस्यापूर्ति साहित्य को उत्तम और मध्यम काव्यों की कोटि में न रख कर रस, ध्वनि आदि न होने के कारण अधम काव्य की श्रृंखला में रख दिया गया है। इन साहित्य के लुप्त होने का कारण यह भी हो सकता है, उनका अधम काव्य होना। पहले विवाह के पश्चात् वर वधू को एकत्र बैठाकर ब्राह्मणों के द्वारा आशीर्वाद दिलवाया जाता था एवं उस समय शास्त्र प्रदर्शन का गम्भीर वातावरण न होकर आनन्द का अवसर होने से आशीर्वाद के श्लोक भी हास्य रस के साथ जूड़ा रहता था। जैसे—

विष्णोरागमनं निशम्य सहसा कृत्वा फणीन्द्रं गुणं
कौपीनं परिधाय चर्म करिणः शम्भुः पुरो धावति।
दृष्ट्वा विष्णुरथं सकम्पहृदयः सर्पोऽपतद् भूतले
कृत्तिर्विस्खलिता ह्रिया नतमुखो नग्नहरः पातु वः।।

अर्थात् विष्णु के कैलास आगमन की खबर सुन कर शम्भु जब उनकी आगवानी के लिए आते हैं, तब गरुड़ को देख कर शिव के कमर में स्थित सर्प डर से चले जाने के कारण गज चर्म रूपी वस्त्र नीचे गिर जाता है। ऐसे

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लज्जा के कारण अवनत शिर वाले शिव आपकी रक्षा करें। इस प्रकार आशीर्वाद परक श्लोकों की संख्या विरले हैं।

इस प्रकार अनेक अन्योक्ति परक काव्य लिखे गये जिनके अध्ययन से मन प्रफुल्लित हो जाता है। पण्डित राज जगन्नाथ का भामिनी विलास का एक पद्य यहाँ उल्लेख करना चाहुँगी—

स्वच्छन्दं दलदरविन्द ते मरन्दं
विन्दन्तो विदधतु गुञ्जितं मिलिन्दाः।
आमोदानथ हरिदन्तराणि नेतुं
नैवान्यो जगति समीरणात्प्रवीणः।।

अर्थात् हे विकसित कमल! तुम्हारे झरते पराग का यथेच्छ आस्वादन करने वाले ये भौंरे तुम्हारे आसपास भले ही गुनगुनाया करें, किन्तु दश दिशाओं में तुम्हारी सुगन्ध को फैलाने में तो वायु के सिवा दूसरा कोई निपुण नहीं है। ठीक इसी प्रकार एक अन्योक्ति मैंने गुरुवर पिता प्रतिम प्रो. श्रीनिवास रथ जी से सूनी थी—

गदाधर पदाकृतिं वहसि बान्धवस्ते रवी
रमा त्वयि समाश्रिता कमलभूस्त वैवान्वयः।
तथापि च वृथाऽभवत्तव सरोज! सर्वं यशोऽ-
लिनाऽतिमलिनात्मना सह दिनानि ते यान्ति वै।।

अर्थात् कमल तुम गदाधर विष्णु के पदकमल को धारण करते हो, सूर्य तुम्हारा मित्र, कमलिनी लक्ष्मी तुममें निवास करती है, कमलभू ब्रह्मा को तुम जन्म देते हो, इतने उच्च होने पर भी तुम्हारा समय भौंरे की चाटुकारिता सुन कर बितता है। यह कमल पर अन्योक्ति के माध्यम से उच्चकुल सम्पन्न व्यक्ति को कुसंग से निवारित कर सत्कार्य में प्रेरित होने की बात कही गई है। आज इस विद्या में काव्य पाना दुर्लभ सा हो गया है।

इस कोटि में आनन्द देने वाला काव्य है समस्यापूर्ति, जो समाज से लुप्तप्राय है। उस पर काव्य लिखकर केवल आनन्द के लिए अलौकिक विलास की बात कही गई है। जैसे—

पति श्वशुरता ज्येष्ठे पतिदेवरताऽनुजे।
इतरेषु तु पाञ्चाल्याः त्रितयं त्रितयं त्रिषु।।

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यहाँ त्रितयं त्रितयं त्रिषु की समस्यापूर्त्ति हेतु कवि ने द्रौपदी पर घटाने का प्रयत्न किया है। जैसे–द्रौपदी का युधिष्ठिर में दो सम्बन्ध है, जेठ एवं पति; सहदेव में दो सम्बन्ध–पति एवं देवर, शेष तीन भीम, अर्जुन एवं नकुल में द्रौपदी की तीन सम्बन्ध है–जेठ, पति और देवर। इस प्रकार समस्यापूर्ति परक काव्य तो मिलते हैं, परन्तु चमत्कार करनेवाली समस्यापूर्ति की सृजन कम दृष्टि गोचर है।

इस प्रकार मन को बहला कर काव्य सुधा के आस्वादन पर प्रहेलिका साहित्य भी संस्कृतवाङ्मय का महत्त्वपूर्ण हिस्सा था, जिससे संस्कृत पढ़ने हेतु आगत छात्रों को उत्साहित करने के लिए मनोरञ्जक होता था। जब अष्टमी और प्रतिपदा आदि अनध्याय की तिथियों में वेदाध्ययन नहीं होता था, तब गुरुकुल में काव्य साहित्य की शिक्षा के अन्तर्गत प्रहेलिका और समस्यापूर्ति आदि के प्रशिक्षण के माध्यम से बुद्धि को तीक्ष्ण करवाया जाता था। उन प्रहेलिकाओं में भी चमत्कार का अनुभव होता है। जैसे—

अवदो दूरगामी च साक्षरो न च पण्डितः।
अमुखः स्फुटवक्ता च यो जानाति स पण्डितः।।

इसका उत्तर है—पत्र। अर्थात् पैर नहीं पर दूरगामी, साक्षर होने पर भी अपण्डित मुख न होने पर भी वह स्फुटवक्ता है। इस विद्या में और उदाहरण मन में आता है—

वने जाता वने त्यक्ता वने तिष्ठति नित्यशः।
पण्यस्त्री न तु सा वेश्या यो जानाति स पण्डितः।।

इसका उत्तर है—नौका। आनन्द और हर्ष के माध्यम से बच्चों को अमर कोश का ज्ञान भी दिया गया। जैसे वन का अर्थ जल और अरण्य भी है। नौका अरण्य की लकड़ी से बनती है, दूसरा अर्थ है जल। अर्थात् वह जल में रहती है। पैसा देकर पार होने से स्त्रीलिंग के कारण वह पण्यस्त्री भी है।

मेरे मन में यह विचार आया है कि ऐसे प्रसिद्ध अन्योक्ति, प्रहेलिका, समस्यापूर्ति एवं चाटुश्लोक जो केवल परम्परा में है और पुस्तकों में सर्वत्र उपलब्ध नहीं है, उन सबको एकत्र कर छात्र एवं सहृदयों के लिए एक

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

संकलन निकाला जाय। विभिन्न भाषाओं में अनुवाद करने से तद् तद् भाषा भाषियों के लिए सहज बोधगम्य होगा। अतः मैंने उन आनन्द एवं विनोदात्मक पद्यों का हिन्दी, अंग्रेजी और ओडिआ भाषाओं में अनुवाद किया। आशा करती हूँ कि यह संस्कृत एवं अन्य भाषी छात्रों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। यदि मेरा यह संग्रह सहृदय हृदय रञ्जन करेगा, तब मेरा श्रम सार्थक होगा।

इस पुस्तक के लिए जंगमबाड़ी मठ के मठाधीश एवं वीरशैव संप्रदाय के परम उपासक एवं संचालक ज्ञानसिंहासन पीठाधीश्वर जगद्गुरु डॉ. चन्द्रशेखर शिवाचार्य महास्वामी ने आशीर्वचन लिखा। इससे पूर्व उन्होंने मेरे सारस्वत साधना को उत्साह देने हेतु 'श्री सिद्धान्त शिखामणि' एवं 'वीरशैव अष्टावरण विज्ञान' के अनुवाद ग्रन्थों का भी अपने शैव भारती शोध प्रतिष्ठान के माध्यम से प्रकाशित करवाया था। अतः मैं उनका आभारी हूँ।

इस कार्य के लिए मेरे पूज्य गुरुदेव प्रो. लडुकेश्वर शतपथी एवं प्रो. श्रीनिवास रथ जी ने प्रेरणा दी। मेरे पिता, माता, श्वसुर एवं शाशु का आशीर्वाद मेरे साथ सदैव रहता है, जिसके कारण मैं सारस्वत साधना कर पाती हूँ। अतः मैं उन सबको सश्रद्ध प्रणाम करती हूँ। एक गृहिणी के द्वारा गृहकार्य के साथ साथ इस प्रकार कार्य करना सम्भव तब होता है, जब उसका परिवार उसका साथ देता है। अपने पति प्रो. गङ्गाधर पण्डा एवं पुत्र श्रीनिवास एवं सत्यव्रत एवं पुत्रवधू श्वाश्वती को धन्यवाद देती हूँ कि उन्होंने मेरा सहयोग किया। पुस्तक के मुद्रण कर्ता श्री अनूप कुमार नागर को मैं साधुवाद देना चाहूँगी कि वे मेरे पुस्तक को निर्दुष्ट एवं सुन्दर कलेवर के साथ समाज को उपलब्ध कराया।

अन्त में मैं परम कारुणिक श्री जगन्नाथ एवं भूतभावन श्रीविश्वनाथ के चरणकमलों में सभक्तिक प्रणाम करती हुई उन्हें यह पुस्तक को समर्पित करती हूँ।

विनयावनता

प्रमोदिनी पण्डा

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विनोदशतकम्

नवीनमेघमण्डलीनिरुद्धदुर्धरस्फुरत्-
कुहूनिशीथिनीतमःप्रबन्धबन्धकन्धरम्।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं मखच्छिदं गजच्छिदं
गजान्तकान्तकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे।।१।।

जिसके कन्धे नवीन मेघ-मण्डल से निरुद्ध और चमकती हुई अमावस्या की रात्रि के अन्धकार से पूर्णत: निबद्ध हो गये हैं, कामदेव के नाशक, त्रिपुर-नाशक, (दक्ष)यज्ञनाशक, गज(गजासुर)नाशक, गज-नाशक के नाशक, अन्त करने वाले के नाशक उन (रुद्र) का भजन करता हूँ।

Whose shoulders are surrounded by the group of new clouds and look dark like the moonless night, I pray to that God who is destroyer of cupid (Smara), Tripurasura, the sacrifice of Daksha, elephant demon, destroyer of elephant and the god of death.

ଯାହାଙ୍କର ସ୍କନ୍ଧ ନୂତନ ମେଘ ମଣ୍ଡଳରେ ଆଚ୍ଛାଦିତ, ଅମାବାସ୍ୟା ରାତ୍ରିର ଅନ୍ଧକାରରେ ନୀବିଡ ଭାବରେ ଆବଦ୍ଧ, ଯେ ସ୍ମର (କାମଦେବ)ଙ୍କର ନାଶକ, ପୁର (ତ୍ରିପୁର) ନାଶକ, ଯଜ୍ଞ (ଦକ୍ଷ ଯଜ୍ଞ) ନାଶକ, ଗଜ (ଗଜାସୁର) ନାଶକ, ଗଜର ଅନ୍ତକ (ନାଶକ)ଙ୍କର ନାଶକ, ମୃତ୍ୟୁ (ଯମ)ର ଯେ ନାଶକ, ସେହି ଶିବଙ୍କୁ ମୁଁ ଭଜନ କରୁଛି ।

कस्त्वं? शूली, मृगय भिषजं, नीलकण्ठः प्रियेऽहं
केकामेकां कुरु, पशुपतिर्नैव दृश्ये विषाणे।
स्थाणुर्मुग्धे, न वदति तरुर्जीवितेशः शिवायाः
गच्छारण्यं प्रतिहतवचा, पातु वश्चन्द्रचूडः।।२।।

पार्वती —तुम कौन हो?

शंकर —मैं शूली हूँ? (शूली=शंकर, पीड़ित)।

पार्वती—तो वैद्य की खोज करो।

शंकर—हे प्रिये, मैं नीलकण्ठ हूँ। (नीलकण्ठ=शिव; मोर)

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पार्वती—एक केका वाणी करो। (मोर की ध्वनि को केका कहते हैं।)

शंकर—मैं पशुपति हूँ। (पशुपति=शंकर; श्रेष्ठ पशु)

पार्वती—तुम्हारी दोनों सींग तो दिख नहीं रही हैं।

शंकर—हे मुग्धे, मैं स्थाणु हूँ (स्थाणु=सूखा वृक्ष; शंकर)

पार्वती—(पर) वृक्ष (स्थाणु) तो बोलता नहीं।

शंकर—मैं शिवा का प्राणवल्लभ हूँ। (शिवा=पार्वती, सियारिन)

पार्वती—तो जंगल में जाओ।

जिनकी वाणी (पार्वती-द्वारा) प्रतिहत की गयी है, वे शङ्कर आपलोगों की रक्षा करें।

Parvati–Who are you?

Shiva–Shuli (Shuli=Lord Shiva and a colic)

Parvati–Go to a doctor.

Shiva–O beloved, I am Nilakantha. (Nilakantha = Lord Shiva or a peacock)

Parvati–Make the sound of a peacock.

Shiva–I am Pashupati. (Pashupati = Shiva, Bull)

Parvati–Horns are not seen.

Shiva–O Emotional lady, I am Sthanu. (Sthanu = Shiva or Tree)

Parvati–Tree never says.

Shiva–I am husband of Shivā. (Shivā=Pārvati and She Jackle)

Parvati–Go to the forest. Candracuda (Shiva), who was defeated by such dialogues of Parvati should protect you all.

ପାର୍ବତୀ-ତୁମେ କିଏ ?

ଶିବ- ମୁଁ ଶୂଳୀ । (ଶୂଳୀ = ଶୂଳ ରୋଗୀ,ଶିବ)

ପାର୍ବତୀ-ବୈଦ୍ୟଙ୍କ ପାଖକୁ ଯାଅ ।

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ଶିବ-ହେ ପ୍ରିୟେ, ମୁଁ ନୀଳକଣ୍ଠ ଅଟେ । (ନୀଳକଣ୍ଠ = ଶିବ, ମୟୂର)

ପାର୍ବତୀ-ଥରେ କେକା ରବ କର । (କେକା = ମୟୂରର ସ୍ୱର)

ଶିବ-ମୁଁ ପଶୁପତି ଅଟେ । (ପଶୁପତି = ଶଙ୍କର, ଶ୍ରେଷ୍ଠ ପଶୁ)

ପାର୍ବତୀ-ଶିଙ୍ଗ ଦୁଇଟି ଦେଖାଯାଉନି ।

ଶିବ-ହେ ମୁଗ୍ଧେ, ମୁଁ ସ୍ଥାଣୁ । (ସ୍ଥାଣୁ = ଶଙ୍କର, ଶୁଖିଲା ଗଛ)

ପାର୍ବତୀ-ବୃକ୍ଷ କଥା କହେନି ।

ଶିବ-ଶିବାଙ୍କର ପତି । (ଶିବା = ପାର୍ବତୀ, ଶୃଗାଳୀ)

ପାର୍ବତୀ-ଜଙ୍ଗଲକୁ ଯାଅ ।

ଏହିପରି ପାର୍ବତୀଙ୍କ ବାଣୀ ଦ୍ୱାରା ପରାସ୍ତ ହୋଇଥିବା ଚନ୍ଦ୍ରଚୂଡ଼ ଆପଣମାନଙ୍କର ରକ୍ଷା କରନ୍ତୁ ।

यां चिन्तयामि सततं मयि सा विरक्ता
सा चान्यमिच्छति जनं स जनोऽन्यसक्तः।
अस्मत्कृते च परितुष्यति काचिदन्या
धिक् तां च तं च मदनं च इमां च मां च।।३।।

मैं हमेशा जिसका चिन्तन करता हूँ, वह मुझसे विरक्त रहती है । वह किसी दूसरे पुरुष को चाहती है और वह पुरुष भी किसी अन्य स्त्री के प्रति आसक्त है, कोई अन्य स्त्री मुझमें आसक्त रहती है। धिक्कार है उस स्त्री को, और धिक्कार है उस पुरुष को, धिक्कार है उस कामदेव को, धिक्कार है इस स्त्री को और धिक्कार है मुझको।

She is not liking me about whom I am thinking (day and night) always. She is desiring another person who is attracked towards other. Certain lady is thinking about me; who is unknown. Blame to that lady, that person, the cupid, this lady and also me.

ମୁଁ ସର୍ବଦା ଯାହାକୁ ଚିନ୍ତା କରୁଛି, ସେ ମୋ ଠାରେ ବିରକ୍ତ ରହୁଛି । ସେ ଅନ୍ୟ ବ୍ୟକ୍ତିକୁ ଚାହୁଁଛି ଓ ସେହି ଜନ ଅନ୍ୟପ୍ରତି ଆକୃଷ୍ଟ । ମୋ ପ୍ରତି ଅନ୍ୟ କେହି (ନାରୀ) ଅନୁରକ୍ତା । ସେହି (ପ୍ରଥମ) ନାରୀକୁ, ସେହି ବ୍ୟକ୍ତିକୁ, ମଦନ (କାମଦେବ)ଙ୍କୁ, ଏହି ନାରୀକୁ ଏବଂ ମତେ ଧିକ୍‌କାର ।

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लोले! ब्रूहि कपालमालिनि! पिता कस्ते? पतिः पार्वतीसां,
कः प्रत्येति जलादपत्यजननं? प्रत्येति यः प्रस्तरात्।
इत्थं पर्वतसिन्धुराजसुतयोराकर्ण्य वाक्चातुरीं,
सस्मेरस्य हरेः हरस्य च मुदो विघ्नन्तु निघ्नन्तु वः।।४।।

पार्वती लक्ष्मी से कहती हैं—अरि चञ्चले! इसके उत्तर में लक्ष्मी कहती हैं—बोलो, अरि कपाल की माला धारणं करने वाली। पार्वती—तुम्हारे पिता कौन हैं? लक्ष्मी—जल की धाराओं के स्वामी समुद्र। पार्वती—कौन विश्वास करेगा कि जल से भी सन्तान की उत्पत्ति होती है। लक्ष्मी—जो यह विश्वास करेगा कि पत्थर से सन्तान की उत्पत्ति होती है। पर्वतराजपुत्री पार्वती और सिन्धुराज की पुत्री लक्ष्मी के इस प्रकार के वाक्चातुरी को सुनकर मुस्कुराते हुए हरि और हर का आनन्द आप सभी के विघ्नों का हरण करे।

Parvati–O Restless one (Frickle minded)!

Lakshmi–Tell, wearer of the garland of skulls!

Parvati–Who is your father?

Lakshmi–Ocean, husband of rivers.

Parvati–Who will believe the birth of offspring from water?

Lakshmi–Who believes this from a stone (mountain).

Having listen such type of clever talk, between daughters of mountain and ocean, the delightful pleasure of both Hara (Shiva) and Hari (Narayana) destroy your hurdles.

ପାର୍ବତୀ-ହେ ଚଂଚଳା !

ଲକ୍ଷ୍ମୀ-ହେ କପାଳମାଳିନୀ (ହେ କାଳୀ) କୁହ ।

ପାର୍ବତୀ-ତୁମର ପିତା କିଏ ?

ଲକ୍ଷ୍ମୀ-ଜଳର ପତି (ଜଳଧି = ସମୁଦ୍ର)

ପାର୍ବତୀ-ଜଳରୁ ସନ୍ତାନର ଉତ୍ପତ୍ତି କିଏ ବିଶ୍ୱାସ କରିବ ?

ଲକ୍ଷ୍ମୀ-ଯିଏ ପ୍ରସ୍ତର (ପର୍ବତ) ରୁ (ଉତ୍ପତ୍ତିକୁ) ବିଶ୍ୱାସ କରିବ ।

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ଏହିପରି ପର୍ବତରାଜ ଓ ସିନ୍ଧୁରାଜଙ୍କର କନ୍ୟା ଦୁହିଁଙ୍କର ଚତୁର ବାର୍ତ୍ତାଳାପକୁ ଶୁଣି ହାସ୍ୟମୁଖ ହୋଇଥିବା ହର ଓ ହରିଙ୍କର ଆନନ୍ଦ (ପ୍ରସନ୍ନତା) ଆପଣ ମାନଙ୍କର ବିଘ୍ନକୁ ଦୂର କରୁ ।

अङ्गुल्या कः कपाटं प्रहरति? कुटिलो, माधवः किं वसन्तो?
नो चक्री किं कुलालो? नहि धरणिधरः किं द्विजिह्वः फणीन्द्रः?
नाहं शेषाऽहिमर्दी, किमुत खगपतिर्नो हरिः किं कपीन्द्रः?
इत्येवं सत्यभामाप्रतिवचनजितः पातु वश्चक्रपाणिः।।५।।

सत्यभामा—कौन कुटिल व्यक्ति अङ्गुली से द्वार पर प्रहार कर रहा है?

कृष्ण—मैं माधव हूँ (द्वार खोलो)। (माधव=कृष्ण; वसन्त)

सत्यभामा—क्या वसन्त हो?

कृष्ण—नहीं, मैं चक्र-धारी हूँ। (चक्री=कृष्ण; कुम्हार)

सत्यभामा—तो क्या कुम्भकार हो?

कृष्ण—नहीं मैं पृथ्वी-धारी हूँ। (पृथ्वीधारी=कृष्ण; सर्प)

सत्यभामा—तो क्या दो जिह्वा धारण करनेवाला सर्पराज हो?

कृष्ण—मैं शेषनाग नहीं, सापों का मर्दन करने वाला हूँ। (अहिमर्दी= कृष्ण; गरुड़)

सत्यभामा—तो क्या गरुड़ हो?

कृष्ण—नहीं, मैं हरि हूँ (हरि=कृष्ण; वानर)।

सत्यभामा—तो क्या वानरराज हो?

इस प्रकार सत्यभामा के उत्तरों से पराजित होने वाले कृष्ण (चक्रपाणि) आप लोगों की रक्षा करें।

Satyabhama–Who is knocking at the door with fingers?

Krishna–I am Madhava (Madhava = Krishna, Spring season)

Satyabhama–Are you Spring Season?

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

Krishna–No, I am Cakri (Cakri = Lord Krishna or a person with a wheel)

Satyabhama–Are you a Potter?

Krishna–No, I am Dharanidhara (Dharanidhara = Lord Krishna in Varaha Avatara, bearer of earth)

Satyabhama–Are you king of Snakes (Shesha)?

Krishna–I am not Shesa, but suppressor of a snake (Kaliya)

Satyabhama–Are you an eagle? (Khagapati = Krishna, King of birds)

Krishna–No, I am Hari (Hari = Lord Krishna or an animal who jumps i.e., monkey)

Satyabhama–Are you a Great Monkey?

In this way Cakrapani being defeated by Satyabhama's replay should save you all.

ସତ୍ୟଭାମା-କେଉଁ କୁଟିଳ ବ୍ୟକ୍ତି କବାଟରେ ଆଙ୍ଗୁଳିରେ ଡାକୁଛି ?

ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣ-(ମୁଁ) ମାଧବ । (ମାଧବ = କୃଷ୍ଣ, ବସନ୍ତ)

ସତ୍ୟଭାମା-କ'ଣ ବସନ୍ତ ଋତୁ ?

ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣ-ନାହିଁ, ମୁଁ ଚକ୍ରୀ (ଚକ୍ରୀ = କୃଷ୍ଣ, କୁମ୍ଭାର)

ସତ୍ୟଭାମା-କ'ଣ କୁମ୍ଭାର ?

ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣ-ନାହିଁ, ଧରଣୀଧର । (ଧରଣୀଧର = କୃଷ୍ଣ, ବାସୁକୀ)

ସତ୍ୟଭାମା-କ'ଣ ଦୁଇ ଜିହ୍ୱା ଯୁକ୍ତ ସର୍ପରାଜ ।

ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣ-ମୁଁ ଶେଷନାଗ ନୁହେଁ । ସର୍ପକୁ ମର୍ଦନ କରିଲାବାଲା ।(ଅହିମର୍ଦୀ = କୃଷ୍ଣ, ଗରୁଡ଼)

ସତ୍ୟଭାମା-କ'ଣ ଗରୁଡ଼ ?

ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣ-ନାହିଁ, ମୁଁ ହରି । (ହରି = ଶ୍ରୀହରି, ମାଙ୍କଡ଼)

ସତ୍ୟଭାମା-କ'ଣ ହନୁମାନ ?

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ଏହିପରି ସତ୍ୟଭାମାଙ୍କର ବାଣୀରେ ପରାଜିତ ଚକ୍ରପାଣି (କୃଷ୍ଣ) ତୁମ୍ଭମାନଙ୍କୁ ରକ୍ଷା କରନ୍ତୁ ।

स्वच्छन्दोच्छलदच्छकच्छकुहरच्छातेतराम्बुच्छटा-
मूर्च्छन्मोहमहर्षिहर्षविहितस्नानाह्निकाह्नाय वः।
भिद्यादुद्यदुदारदर्दुरदरी दीर्घादरिद्रद्रुम-
द्रोहोद्रेकमहोर्मिमेदुरमदा मन्दाकिनी मन्दताम्।।६।।

स्वच्छन्दरूप से उछलती हुई, (अच्छ) निर्मल और (कच्छ-कुहर) किनारे के गड्ढों में (छात दुर्बल, छातेतर) अत्यन्त वेग से प्रवाहित होने वाली जो (अम्बुच्छटा) जल की धारा, उससे जिनके मोह अज्ञान का (मूर्च्छा) नाश हो गया है, ऐसे महर्षियों के द्वारा जिसमें आनन्दपूर्वक स्नान तथा आह्निक (सन्ध्यावन्दन आदि) कार्य किये जा रहे हैं, इस प्रकार की मन्दाकिनी आपलोगों की मन्दता, अज्ञान अथवा पापादि को दूर करे।

Let the river Ganges drive out your sin or ignorance, which is flowing with its overwhelming water, dispelling all type of desires, creating happiness among seers who are engaged in performing Sandhyavandan on its bank.

(ସ୍ୱଚ୍ଛନ୍ଦ ଭାବରେ ଉଛଳୁଥିବା (ଅଚ୍ଛ) ନିର୍ମଳ (କଚ୍ଛକୁହର) ତଟର ଗର୍ତ୍ତରେ (ଛାତେତର = ଛାତ = ଦୁର୍ବଳ, ଛାତେତର = ବେଗଯୁକ୍ତ) ଅତ୍ୟନ୍ତ ବେଗରେ (ଅମ୍ବୁଚ୍ଛଟା) ପ୍ରବାହିତ ହେଉଥିବା ଜଳଧାରା (ମୂର୍ଚ୍ଛନ୍ ମୋହ) ମୋହକୁ ଦୂର କରିଥିବାରୁ (ମହର୍ଷି ହର୍ଷ ବିହିତ ସ୍ନାନ) ହର୍ଷିତ ମହର୍ଷିମାନେ ଯେଉଁଥିରେ ସ୍ନାନକରି (ଆହ୍ନିକ ଅହ୍ନା/) ସନ୍ଧ୍ୟାବନ୍ଦନାଦି କାର୍ଯ୍ୟ କରନ୍ତି, ସେହି ମନ୍ଦାକିନୀ ପାପକୁ ହରଣ କରନ୍ତୁ ।

हे हेरम्ब! किमम्ब? रोदिषि कथं? कर्णौ मुटत्यग्निभूः,
किं ते स्कन्द विचेष्टितं? मम पुरा संख्या कृता चक्षुषाम्।
नैतत्तेप्युचितं गजास्य चरितं, प्राङ् नासिका मोटिता
श्रुत्वैवं सुतयोर्गिरं गिरिसुता स्मेरानना पातु नः।।७।।

पार्वती गणेश से पूछती हैं—हे हेरम्ब। गणेश जी कहते हैं—क्या है माँ? पार्वती—क्यों रोते हो? गणेश—अग्नि से उत्पन्न होने वाले कार्तिकेय मेरे कानों को मलते हैं। पार्वती—अरे स्कन्द! क्यों ऐसा करते हो?

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्कन्द—पहले ये मेरी आँखों को गिन रहे थे। पार्वती—अरे हाथी के मुख वाले गणेश, यह तुम्हारा व्यवहार भी उचित नहीं है। गणेश—पहले इन्होंने मेरे नाक को मरोड़ा था। इस प्रकार अपने दोनों पुत्रों की वाणी को सुनकर मुस्कराहट से युक्त मुखवाली गिरिराजपुत्री पार्वती हमलोगों की रक्षा करें।

Parvati–O Heramba!

Ganesha–Mother, what happened?

Parvati–Why are you crying?

Ganesha–Agnibhu (Kartikeya) is drawing my ears.

Parvati–Skanda, why are you doing so?

Skanda–He has counted my eyes at first.

Parvati–O Elephant Headed One, such type of your behavior is not proper.

Ganesh–He has turned my nose (trunk) at first.

Listening such type of talks between two sons let the daughter of mountain (Girisuta) Parvati with a smiling face protect us.

ପାର୍ବତୀ-ହେ ହେରମ୍ବ !

ଗଣେଶ-କ'ଣ ହେଲା ମାତା !

ପାର୍ବତୀ-କାହିଁକି କାନ୍ଦୁଛ ?

ଗଣେଶ-ଅଗ୍ନିରୁ ଜାତ (କାର୍ତ୍ତିକେୟ) ମୋର କାନକୁ ମୋଡୁଛନ୍ତି ।

ପାର୍ବତୀ-ସ୍କନ୍ଦ, ତୁମେ ଏପରି କାହିଁକି କରୁଛ ?

ଗଣେଶ-ଇଏ ପ୍ରଥମେ ମୋର ଚକ୍ଷୁକୁ ଗଣିଲେ ।

ପାର୍ବତୀ-ହେ ହସ୍ତିମୁଖବାଲା, ତୁମେ ଏହା (ଠିକ୍) ଉଚିତ କରିନାହଁ ।

ଗଣେଶ-ପ୍ରଥମେ ଇଏ ମୋର ନାକକୁ ମୋଡିଥିଲେ ।

ଏହିପରି ଦୁଇପୁତ୍ରଙ୍କର ବଚନ ପୁଣି ସ୍ମିତମୁଖଯୁକ୍ତା ଗିରିସୁତା ଆମ୍ଭମାନଙ୍କର ରକ୍ଷା କରନ୍ତୁ ।

कस्त्वं बाल! बलानुजः, तदिह किं? मन्मन्दिराशङ्कया
बुद्धं, तन्नवनीतकुम्भविवरे, हस्तं कथं न्यस्यसि?

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कर्तुं तत्र पिपीलिकापनयनं, सुप्ता किमुद्बोधिता
बाला वत्सगतिं, विवेक्तुमिति सञ्जल्पन् हरिः पातु वः।।८।।

गोपी—हे बालक, तुम कौन हो?

कृष्ण—मैं बलराम का अनुज हूँ।

गोपी—तो यहाँ क्यों हो?

कृष्ण—मुझे लगा कि यह मेरा घर है।

गोपी—समझ गई। तो मक्खन के घड़े के मुँह में हाथ क्यों डाल रखा है?

कृष्ण—उस (घड़े) में चीटियाँ हैं, जिन्हें दूर कर रहा हूँ। (उससे चींटियाँ दूर करने के लिये हाथ डाला हूँ)।

इस प्रकार सोई हुई गोपी बच्चे की चाल समझने के लिये उठ गई है। इस प्रकार कहने वाले कृष्ण आप लोगों की रक्षा करें।

Gopi–O boy, who are you?

Krishna–Younger brother of Balarama.

Gopi–So why are you here?

Krishna–Thinking it my house.

Gopi–Understood. Then why are you putting hand inside the pot of creams?

Krishna–To clear the ants inside it.

Sleeping (cowherd) Lady might have arisen to notice the activities of the boy. Let Hari, who is saying this, may save you.

ଗୋପୀ-ହେ ବାଳକ, ତୁମେ କିଏ ?

କୃଷ୍ଣ-ବଳରାମଙ୍କର ଅନୁଜ ।

ଗୋପୀ-ତେବେ ଏଠାରେ କାହିଁକି ଅଛ ?

କୃଷ୍ଣ-ମୋର ଘର ଭାବିକି ।

ଗୋପୀ-ବୁଝିଲି । ତେବେ ଲହୁଣୀ ହାଣ୍ଡିରେ ହାତ କାହିଁକି ପୂରାଇଛ ?

କୃଷ୍ଣ-ସେଥିରୁ ପିମ୍ପୁଡି କାଢିବା ନିମନ୍ତେ ।

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ଶୋଇଥିବା ଗୋପୀ କ'ଣ ବାଳକର କାର୍ଯ୍ୟକୁ ଜାଣିବା ପାଇଁ ଉଠି ପଡିଲେ କି ? ଏହିପରି କହୁଥିବା ହରି ଆପଣମାନଙ୍କର ରକ୍ଷା କରନ୍ତୁ ।

विष्णोरागमनं निशम्य सहसा कृत्वा फणीन्द्रं गुणं
कौपीनं परिधाय चर्म करिणः शम्भुः पुरो धावति।
दृष्ट्वा विष्णुरथं सकम्पहृदयः सर्पोऽपतत् भूतले
कृत्तिर्विस्खलिता ह्रिया नतमुखो नग्नो हरः पातु वः।।९।।

एकाएक विष्णु का आना सुनकर सर्पराज को रज्जु बनाकर और गजचर्म की लँगोटी धारण कर शम्भु के सम्मुख दौड़ पड़ने पर विष्णु के रथ (गरुड़) को देखकर कम्पित-हृदय सर्प भूमि पर गिर पड़ा। गजचर्म खुल गया। तब लज्जा से मुख लटकाये हुए शंकर आप लोगों की रक्षा करें।

Listening the arrival of Vishnu, Shiva rushed forward wearing the skin of elephant demon as underwear tying the snake as belt. By seeing the chariot of Vishnu (Garuda / eagle) the snake fell down on the ground with shaking heart. Let this Hara may protect you all, who has bent down his head in shame due to nackedness caused by the falling of clothes (skin of an elephant).

ହଠାତ୍ ବିଷ୍ଣୁଙ୍କର ଆଗମନକୁ ଶୁଣି ନାଗରାଜଙ୍କୁ ମେଖଳା କରି ଗଜଚର୍ମକୁ କୌପୀନ କରି ପିନ୍ଧି ଶମ୍ଭୁ ଶୀଘ୍ର ଶୀଘ୍ର ଅଗ୍ରସର ହେବାବେଳେ ବିଷ୍ଣୁଙ୍କର ରଥ (ଗରୁଡ)କୁ ଦେଖି କମ୍ପମାନ ସର୍ପ ଭୂମିରେ ପଡିଗଲା । ଚର୍ମ (କୌପୀନ) ଖୋଲି ଯିବାରୁ ଲଜ୍ଜାରେ ନତମୁଖ ନଗ୍ନ ହର ଆପଣମାନଙ୍କର ରକ୍ଷା କରନ୍ତୁ ।

धन्या केयं स्थिता ते शिरसि शशिकला, किन्नु नामैतदस्या
नामैवास्याः तदेतत् परिचितमपि ते विस्मृतं कस्य हेतोः।
नारीं पृच्छामि नेन्दुं, कथयतु विजया न प्रमाणं यदीन्दु-
र्देव्या निह्नोतुमिच्छोरिति सुरसरितं शाठ्यमव्याद् विभोर्वः ॥१०॥

पार्वती—यह कौन धन्य-भाग्या तुम्हारे सिर पर है (हे शिव)?

शिव—यह चन्द्रमा की कला है।

पार्वती—क्या इसका नाम यह है?

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शिव—इसका नाम यही है, जो तुम्हारी परिचित भी है। किस कारण तुम इसे भूल गयी हो?

पार्वती—मैं स्त्री की बात पूछ रही हूँ, न कि चन्द्रमा की। उस विशिष्ट जय वाली का नाम बताओ, क्योंकि चन्द्रमा का प्रमाण नहीं चलेगा।

इस प्रकार गंगा की बात देवी (पार्वती) से छिपाने की जो विभु=व्यापक=शिव) की शठता है, वह आप लोगों की रक्षा करें।

Parvati–Who is she the fortunate one, to stay on your head?

Shiva–Shashikala. (The Kala (qualities) of moon).

Parvati–Is it her name?

Shiva–Though her name is familiar to you, why are you asking explanation?

Parvati–I am asking about the lady, not Indu (moon). Tell about the victorious lady (who has crowned your head). No explanation is needed regarding Indu.

The cheating of Vibhu regarding heavenly river (Ganges) which he wants to hide from Parvati may protect you all.

ପାର୍ବତୀ-କିଏ ଏହି ଧନ୍ୟା ଆପଣଙ୍କର ଶୀର୍ଷରେ ଅଛନ୍ତି ?

ଶିବ-ଏହା ଶଶିଙ୍କର କଳା ।

ପାର୍ବତୀ-କ'ଣ ଏହା ତାଙ୍କର ନାମ ?

ଶିବ-ଏହା ତାଙ୍କର ନାମ । ସେ ତୁମର ପରିଚିତ ମଧ୍ୟ । କ'ଣ ପାଇଁ ଭୁଲି ଯାଇଛ ?

ପାର୍ବତୀ-ନାରୀ ବିଷୟରେ ପଚାରୁଛି, ଇନ୍ଦୁ ବିଷୟରେ ନୁହେଁ । ସେହି ବିଜୟାଙ୍କ ସ୍ପଷ୍ଟୀକରଣ ଦିଅ, ଇନ୍ଦୁଙ୍କର ଆବଶ୍ୟକତା ନାହିଁ ।

ଦେବୀ ପାର୍ବତୀଙ୍କ ଠାରୁ ଲୁଚାଇବାକୁ ଚାହୁଁଥିବା ବିଭୁ (ଈଶ୍ୱର)ଙ୍କର ସୁରସରିତ (ଗଙ୍ଗା) ବିଷୟକ ଶଠତା ଆପଣମାନଙ୍କୁ ରକ୍ଷା କରୁ ।

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भिक्षार्थी स क्व यातः? सुतनु! बलिमखे, ताण्डवं क्वाद्य भद्रे
मन्ये बृन्दावनान्ते, क्व नु स मृगशिशुः? नैव जाने वराहम्।
बाले कच्चिन्न दृष्टः जरठवृषपतिः? गोप एवास्य वेत्ता,
लीलासंल्लाप इत्थं जलनिधिहिमवत्कन्ययोस्त्रायतां वः ।।११।।

लक्ष्मी—वह भिखारी कहाँ चला गया? हे (पार्वती), सुन्दर तनवाली।

पार्वती—(वह विष्णु) बलि के यज्ञ में गया है।

लक्ष्मी—हे कल्याणी, वह शिव का नृत्य (ताण्डव) कहाँ गया?

पार्वती—(वह कृष्ण) वृन्दावन गया है, ऐसा मानती हूँ।

लक्ष्मी—वह (मृग) हाथी का बच्चा (गणेश) कहाँ है?

पार्वती—मैं सुकर=वराह-अवतार के बारे में नहीं जानती।

लक्ष्मी—हे तरुणी (पार्वती), बूढ़े साँड़ का स्वामी शिव तो देखाई नहीं दे रहे हैं?

(पार्वती)—इसका पता गोपाल=कृष्ण को ही है।

इस प्रकार समुद्र की कन्या (लक्ष्मी) और हिमालय की पुत्री (पार्वती) की लीलापूर्ण वार्ता आप लोगों की रक्षा करें।

Lakshmi–O domsel Lady, where did that beggar go?

Parvati–To the sacrifice altar of Bali.

Lakshmi–O (Prestigious) Gentle Lady, where is the furious dance today?

Parvati–I think, it is in Vrindavana.

Lakshmi–Where is that elephant headed kid?

Parvati–I don't know about hog (incarnation of varāha).

Lakshmi–O young lady, the Master of old bull is not seen?

Parvati–The caretaker of cattles (Krishna) is the knower of this.

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

This pleasure talk between the daughter of ocean and the daughter of mountain may protect you.

ଲକ୍ଷ୍ମୀ-ହେ ସୁତନୁ, ସେହି ଭିଖାରୀ କୁଆଡେ ଗଲେ ?

ପାର୍ବତୀ-ବଳିଙ୍କର ଯଜ୍ଞସ୍ଥଳୀକୁ (ବାମନ ଅବତାରରେ ବିଷ୍ଣୁ ଭିକ୍ଷା ମାଗିଥିଲେ) ।

ଲକ୍ଷ୍ମୀ-ହେ ଭଦ୍ରେ, ଆଜି କେଉଁଠାରେ ତାଣ୍ଡବନୃତ୍ୟ ହେଉଛି ?

ପାର୍ବତୀ-ବୃନ୍ଦାବନରେ ହେଉଛି ବୋଲି ଭାବୁଚି ।

ଲକ୍ଷ୍ମୀ-ସେହି ମୃଗଶିଶୁ (ହାତୀର ଶିଶୁ ଗଣେଶ) କେଉଁଠାରେ ଅଛନ୍ତି ?

ପାର୍ବତୀ-ବରାହ କେଉଁଠାରେ ଜାଣିନାହିଁ । (ପାର୍ବତୀ ମୃଗ ଅର୍ଥାତ୍ ପଶୁ (ବାରାହ) ଅର୍ଥରେ ଗ୍ରହଣ କଲେ)

ଲକ୍ଷ୍ମୀ-ହେ ବାଳିକେ, ସେହି ବୃଦ୍ଧ ବୃଷଭର ସ୍ୱାମୀ (ଶିବ) କେଉଁଠାରେ ଦେଖାଯାଉ ନାହାନ୍ତି ।

ପାର୍ବତୀ-ଗୋପ (କୃଷ୍ଣ) ହିଁ ଏ କଥା ଜାଣିଥିବେ ।

ଜଳନିଧି (ସମୁଦ୍ର) ଙ୍କର କନ୍ୟା ଲକ୍ଷ୍ମୀ ଏବଂ ହିମାଳୟଙ୍କର କନ୍ୟା ପାର୍ବତୀଙ୍କର ଏହିପରି ଚତୁର ବାର୍ତ୍ତାଳାପ ଆପଣମାନଙ୍କର ରକ୍ଷା କରୁ ।

कोऽयं द्वारि? हरिः, प्रयाह्युपवनं, शाखामृगस्यात्र किं?
कृष्णोऽहं दयिते, बिभेमि सुतरां कृष्णादहं वानरात्।
राधेऽहं, मधुसूदनो, व्रज लतां, तामेव पुष्पान्विता-
मित्थं निर्वचनीकृतो दयितया, ह्रीणो हरिः पातु वः।।१२।।

राधा (बन्द द्वार के अन्दर से)—द्वार कौन खटखटा रहा है?

कृष्ण—मैं हरि हूँ (हरि=कृष्ण; वानर)।

राधा—बाग में जाओ। यहाँ बन्दर का क्या काम है?

कृष्ण—हे प्रिये, मैं कृष्ण हूँ।

राधा—मुझे काले (कृष्ण) बन्दर से बहुत डर लगता है।

कृष्ण—हे राधा, मैं मधुसूदन। (मधुसूदन=कृष्ण; भ्रमर)

राधा—तो (यहाँ तुम्हारा क्या काम?) पुष्पों से भरी हुई लताकुञ्ज में जाओं।

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस प्रकार प्रिया से निरुत्तर किये गये लज्जित कृष्ण आप लोगों की रक्षा करें।

Radha–Who is at the door?

Krishna–I am Hari (Hari = Krishna, monkey)

Radha–Go to the garden. What is the work of a monkey here?

Krishna–O beloved, I am Krishna.

Radha–So I am afraid of a black coloured monkey.

Krishna–O Radha, I am Madhusudana (Krishna, bee)

Radha–Go to that blossomed creeper.

Being made speechless by the beloved, the ashamed Hari may protect you all.

ରାଧା-ଦ୍ୱାରଦେଶରେ କିଏ ?

କୃଷ୍ଣ-ମୁଁ ହରି । (ହରି = କୃଷ୍ଣ, ବାନର)

ରାଧା-ବଗିଚାକୁ ଯାଅ । ଏଠାରେ ମାଙ୍କଡର କ'ଣ କାମ ?

କୃଷ୍ଣ-ହେ ପ୍ରିୟେ, ମୁଁ କୃଷ୍ଣ ।

ରାଧା-ଯେହେତୁ ମୁଁ କଳା ମାଙ୍କଡକୁ ଡ଼ରେ ।

କୃଷ୍ଣ-ହେ ରାଧେ, ମୁଁ ମଧୁସୂଦନ । (ମଧୁସୂଦନ = କୃଷ୍ଣ, ଭ୍ରମର)

ରାଧା-ପୁଷ୍ପରେ ଆଚ୍ଛାଦିତ ସେହି ଲତା ପାଖକୁ ଯାଅ ।

ଏହିପରି ପ୍ରିୟାଦ୍ୱାରା ନିରୁତ୍ତର କରାଯାଇଥିବା ଲଜ୍ଜିତ ହରି ଆପଣମାନଙ୍କୁ ରକ୍ଷା କରନ୍ତୁ ।

कस्त्वम्भो निशि? केशवः, शिरसिजैः किं नाम गर्वायसे?
भद्रे! शौरिरहं, गुणैः पितृगतैः पुत्रस्य किं गौरवम्?।
चक्री चन्द्रमुखि! प्रयच्छसि नु मे कुण्डीं घटीं दोहनाम्?
इत्थं गोपवधूजितोत्तरतया ह्रीणो हरिः पातु वः।।१३।।

राधा—अरे रात में तुम कौन हो, जो बन्द द्वार को रात्रि में खटखटा रहे हो?

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कृष्ण—मैं केशव (=कृष्ण; केशवाला) हूँ।

राधा—क्या बात है, जो केशों से घमण्ड करते हो?

कृष्ण—हे कल्याणि, मैं शौरि (=कृष्ण; शूरवंशी) हूँ।

राधा—पिता में स्थित गुणों से क्या पुत्र का गौरव हो सकता है?

कृष्ण—हे चन्द्रमुखी, मैं चक्रधर (=कृष्ण; कुम्हार) हूँ।

राधा—क्या मुझे दूध वाला कुण्डा या घड़ा दोगे?

इसप्रकार गोपवधू (राधा) से जिनके उत्तर पराजित हो गये हैं, वे लज्जित कृष्ण आप लोगों की रक्षक बने।

Radha–O Person, who are you at night?

Krishna–Keshava, (Keshava : Krishna, a person with hairs)

Radha–Why are you proud of your hairs?

Krishna–O Lady, I am Shauri, (Shauri = Krishna, related to glorious brave dynesty)

Radha–What to be proud of a son with the qualities of his father?

Krishna–O Lady, having beautiful face like moon, I am Cacradhara (Krishna/potter.)

Radha–What can you give me, pot for milk? In this way, Hari being defeated by Radha may save you.

ରାଧା-ରାତ୍ରିରେ ତୁମେ କିଏ ?

କୃଷ୍ଣ-କେଶବ ।

ରାଧା-କେଶକୁ ନେଇ କ'ଣ ଗର୍ବ କରୁଛ ? (ଶିରସିଜ = କେଶ)

କୃଷ୍ଣ-ହେ ଭଦ୍ରେ, ମୁଁ ଶୌରୀ ଅଟେ । (ଶୂରବଂଶୀ)

ରାଧା-ପିତାଙ୍କର ଗୁଣରେ (ବଂଶର ଗରିମାରେ), ପୁତ୍ରର କ'ଣ ବଡିମା ?

କୃଷ୍ଣ-ହେ ଚନ୍ଦ୍ରମୁଖୀ, ମୁଁ ଚକ୍ରୀ । (ଚକ୍ରୀ = କୃଷ୍ଣ, କୁମ୍ଭାର)

ରାଧା-କ'ଣ ମତେ ଦୁଗ୍ଧପାତ୍ର କୁଣ୍ଡୀ ଅଥବା ଘଡୀ ପ୍ରଦାନ କରିବ ?

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ଏହିପରି ଗୋପବଧୂଙ୍କର ଉତ୍ତରରେ ଜିଣା ଯାଇଥିବା ଲଜ୍ଜିତ କୃଷ୍ଣ ଆପଣମାନଙ୍କର ରକ୍ଷା କରନ୍ତୁ ।

रामाद्याचय मेदिनीं, धनपतेर्बीजं, बलाल्लाङ्गलं,
प्रेतेशान्महिषं, तवास्ति वृषभः फालं त्रिशूलं तव ।
शक्ताहं तव चान्नदानकरणे, स्कन्दोऽस्ति गोरक्षणे
खिन्नाऽहं तव भिक्षया कुरु कृषिं गौरीवचः पातु वः ।।१४।।

पार्वती—राम से धरती, कुबेर से बीज, बलराम से हल और यम से भैंसा माँग लो। तुम्हारे पास बैल और हल के फाल के रूप में त्रिशूल है (ही)। तुम्हें (अन्नपूर्णा होने से) मैं अन्नदान करने में समर्थ हूँ (ही) और तुम्हारे बैल की रक्षा के लिये स्वामी कार्तिकेय (जो सेनापति) है (ही)। तुम्हारे भीख माँगने से मैं खिन्न रहती हूँ। (अब) तुम खेती करो (जिससे मुझे लाज न आये)। ये पार्वती के (शिव से) कहे गये वचन आप लोगों की रक्षा करें।

Parvati–Ask earth from Rama (Parashurama), seeds from Dhanapati (Kubera), plough from Balarama, buffalo from Yama (King of deads). You have bull and trident to plough. I am able to provide you food and Skanda is there to take care of the cattles. I am sorry to see you begging. Do cultivation. Such type of the saying of Gauri may protect you all.

ରାମଙ୍କ (ପରଶୁରାମ ଯିଏ କ୍ଷତ୍ରିୟଙ୍କୁ ପରାସ୍ତ କରି ପୃଥିବୀ ଜୟ କରିଛନ୍ତି)ଠାରୁ ପୃଥିବୀ, କୁବେରଙ୍କଠାରୁ ବୀଜ, ବଳରାମଙ୍କଠାରୁ ଲଙ୍ଗଳ, ପ୍ରେତମାନଙ୍କର ଈଶ (ଯମ) ଠାରୁ ମଇଁଷୀ ମାଗ । ତୁମ ପାଖରେ ବୃଷଭ ଓ ଫାଳରୂପକ ତ୍ରିଶୂଳ ଅଛି । ତୁମକୁ ଅନ୍ନଦାନ କରିବା ନିମନ୍ତେ ମୁଁ ସମର୍ଥ ଅଟେ । ଗୋ ରକ୍ଷଣ କରିବା ନିମନ୍ତେ ସ୍କନ୍ଦ ସମର୍ଥ । ତୁମେ ଭିକ୍ଷା ମାଗୁଥିବାରୁ ମୁଁ ଦୁଃଖିତ । ତେଣୁ କୃଷିକର୍ମ କର ।

ଏହିପରି ଗୌରୀଙ୍କର ବଚନ ଆପଣମାନଙ୍କର ରକ୍ଷା କରୁ ।

पयः पीत्वा मातस्तव सपदि यातः सहचरैः
विमूढैः परन्तु क्वचिदपि न विश्रान्तिमगमम्।

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इदानीमुत्सङ्गे मृदुपवनसञ्चारशिशिरे
चिरादुन्निद्रं मां सदयहृदये शायय चिरम्।।१५।।

दयायुक्त हृदय वाली हे माँ गङ्गे, तुम्हारा पय (=दूध; जल) पीकर मैं तुरन्त ही अतिमूर्ख मित्रों के साथ विहार करने के लिये चल पड़ा था, पर मुझे विश्राम कहीं (भी) नहीं मिला। हे सहृदये, चिरकाल से न सो पाये मुझे अब मुदुल पवन के चलने से शीतल गोद में चिरकाल तक सुला दो।

गंगा-लहरी में पण्डितराज जगन्नाथ का यह करुणापूर्ण श्लोक इस कथा से चमत्कारपूर्ण बन गया है कि बावन सीढ़ियों वाले काशी-गंगा-तट की (प्रारम्भ से चलकर) अन्तिम सीढ़ी पर जैसे ही उन्होंने यह बावनवाँ श्लोक कहा, वैसे ही गंगा उन्हें बहा ले गई और उनका जीवन निःशेष हो गया।

O mother, after taking your water I roamed with my foolish friends to seek pleasure, but could not find rest anywhere. O compassionate one! in your lap which is cool with the gentle breeze, make me sleep for ever, as I have remained sleepless for a long time.

ହେ ମାତା, ତୋର ପୟ (ଦୁଗ୍ଧ, ଜଳ) ପାନ କରି ବିମୂଢ଼ ସାଥୀମାନଙ୍କ ସହିତ ବିହାର କରିବା ନିମନ୍ତେ ହଠାତ୍ ବାହାରିଗଲି । କିନ୍ତୁ କେଉଁଠାରେ ହେଲେ ବିଶ୍ରାମ ମିଳିଲାନି । ହେ ସଦୟହୃଦୟେ, ବହୁକାଳରୁ ଅନିଦ୍ର ମତେ ମୃଦୁପବନର ସଂଚାରରେ ଶୀତଳ ହୋଇଥିବା ନିଜର କୋଳରେ ଏବେ ଦୀର୍ଘସମୟ ନିମନ୍ତେ ଶୁଆଇଦିଅ । (ଲୋକକଥା ଅନୁସାରେ ପଣ୍ଡିତରାଜ ଜଗନ୍ନାଥ ୫୨ ପାହାଚ ଯୁକ୍ତ ପତିତପାବନୀ ଗଙ୍ଗାମାତାଙ୍କୁ ନିଜର ଗଙ୍ଗାଲହରୀର ୫୨ ଶ୍ଳୋକରେ ଏପରି ସ୍ତୁତି କରିବା ପରେ ମାତା ତାଙ୍କୁ ନିଜର ସ୍ରୋତରେ ବୁହାଇ ନେଇଥିଲେ ଏବଂ ଚିର ବିଶ୍ରାମ ଦେଇଥିଲେ ।) ଏହି ପଦ୍ୟଟି ଗଙ୍ଗା ଲହରୀରୁ ଉଦ୍ଧୃତ ।

दिगन्ते श्रूयन्ते मदमलिनगण्डाः करटिनः
करिण्यः कारुण्यास्पदमसमशीलाः खलु मृगाः।
इदानीं लोकेऽस्मिन्ननुपमशिखानां पुनरयं
नखानां पाण्डित्यं प्रकटयतु कस्मिन् मृगपतिः।।१६।।

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सुनते हैं कि माथे पर (बहते) जो मद (तरल वस्तु जो मस्त होने पर हाथी के मस्तक से बहने लगती है) प्रगट होता है, उससे मलिन कपोल वाले गज और हथिनियाँ दिशाओं की सीमा पर (डर से भाग कर) स्थित हैं। तो अब पशुओं का यह स्वामी (सिंह) अतुल नोक वाले नाखूनों का प्रचण्ड कौशल किस पर प्रगट करें, (डर से) विषम स्वभावयुक्त अन्य पशु करूणापात्र बने हुये हैं। पण्डितराज जगन्नाथ की यह गर्वोक्ति अपने पर घटित होती है।

It is listened that the elephants have reached the horizons whose cheeks are wetted by the secretion of frangrant water from the foreheads, the she-elephants have become pitiable, the animals surely have become disbalanced in behaviour. Now, O king of animals (Lion) upon whom you will show the skill of your pointed nails? (Pandit Raja Jagannath is comparing himself with a lion in the field of literatures.

ଶୁଣିବାକୁ ମିଳୁଛି ଯେ ମଦଜଳରେ ମଳିନ ହୋଇଥିବା ଗଣ୍ଡପ୍ରଦେଶଯୁକ୍ତ ଗଜମାନେ ଦିଗନ୍ତରେ ଆଶ୍ରୟ ନେଇଛନ୍ତି, ମାଈ ହାତୀମାନେ କରୁଣା (ଦୟା)ର ପାତ୍ର ହୋଇଛନ୍ତି । ଅନ୍ୟ ପଶୁମାନେ ନିଶ୍ଚିତ ଭାବରେ ବିଷମ ସ୍ୱଭାବଯୁକ୍ତ ହୋଇଛନ୍ତି । ପୁନଶ୍ଚ ବର୍ତ୍ତମାନ ଅନୁପମ ଶିଖା (ଜ୍ୟୋତି) ଯୁକ୍ତ ନଖଗୁଡିକର ପାଣ୍ଡିତ୍ୟ (ପରାକାଷ୍ଠା) ଏହି ମୃଗପତି (ସିଂହ) ଅନ୍ୟ କାହାଠାରେ ପ୍ରକଟ କରନ୍ତୁ ।

(ପଣ୍ଡିତରାଜ ଜଗନ୍ନାଥଙ୍କର ଏହି ଗର୍ବୋକ୍ତି ତାଙ୍କ ପ୍ରତି ସହାନୁଭୂତି ଉଦ୍ଦିଷ୍ଟ)

सङ्ग्रामाङ्गणमागतेन भवता चापे समारोपिते
देवाऽकर्णय, येन येन सहसा यद्यत् समासादितम्।
कोदण्डेन शराः, शरैररिशिरः, तेनापि भूमण्डलं,
तेन त्वं, भवता च कीर्तिरतुला, कीर्त्या च लोकत्रयम्।।१७।।

संग्राम-प्राङ्गण में आये हुये आप के द्वारा धनुष तान लेने पर, हे देव, जिस-जिस ने जो जो एकाएक पा लिया है, वह सुनिये। धनुष ने बाण, बाणों ने दुश्मन के सिर, उन्होंने (=सिरों ने) भू-मण्डल, उसने (=भू-मण्डल ने) तुम्हें और तुमने अतुलित यश और अतुलित यश ने तीनों लोक प्राप्त कर लिये हैं।

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

When you tied your bow in the battle field, O God, please listen, which one got what at once. The bow got the arrows, the arrows got the heads of enemies and those the world (spread on the earth), by the world you and you earned endless fame, the fame achieved the three worlds.

ଆପଣଙ୍କଦ୍ୱାରା ରଣପ୍ରାଙ୍ଗଣରେ ଧନୁ ଧାରଣ କରିବା ଫଳରେ ତୁରନ୍ତ କ'ଣ କାହାକୁ ପ୍ରାପ୍ତ ହୋଇଥିଲା, ହେ ଦେବ, ତାହା ଶ୍ରବଣ କରନ୍ତୁ । ଧନୁ ଶରକୁ, ଶର ଶତ୍ରୁର ଶିରକୁ, ତାହା (ଶତ୍ରୁର ଶିର) (ଭୂମଣ୍ଡଳ) ଭୂମିକୁ, ତାହା (ଭୂମଣ୍ଡଳ) ତୁମକୁ, ଆପଣ ଅତୁଳ କୀର୍ତ୍ତିକୁ, ଏବଂ କୀର୍ତ୍ତି ତ୍ରିଭୁବନକୁ (ପ୍ରାପ୍ତ ହୋଇଥିଲେ) ।

अर्धं दानववैरिणा गिरिजयाप्यर्धं शिवस्याहृतं,
देवेत्थं जगतीतले स्मरहराभावे समुन्मीलिति।
गङ्गा सागरमम्बरं शशिकला नागाधिपः क्ष्मातलं
सर्वज्ञत्वमधीश्वरत्वमगमस्त्वां, मां च भिक्षाटनम्।।१८।।

हे देव, इस प्रकार राक्षसों के वैरी (विष्णु) ने (शिव का अर्धभाग) और गिरिजा अपर अर्धभाग को हरण कर लिये और पृथ्वीतल पर (स्मर/कामदेव का संहर्ता) शंकर का प्रभाव अवलोकन कर गंगा सागर (पहुँची), चन्द्रकला आकाश (पहुँची), शेषनाग पाताल (पहुँचे) सर्वज्ञता और स्वामित्व तुम्हारे पास और मेरे पास भिक्षाटन पहुँच गया है।

O God, when the enemy of demons (Lord Vishnu) stole half of your body and other half was stolen by Girija, seeing the absence of the destroyer of cupid, the Ganges went over to the ocean, moon to the sky, the King of snakes to the bottom of the earth, Omniscience and power to rule to you and begging of alms came to me.

ଶିବଙ୍କର ଅର୍ଧଭାଗ ଦାନବଶତ୍ରୁ (ବିଷ୍ଣୁ) ଏବଂ ଅର୍ଧଭାଗ ଗିରିଜା (ପାର୍ବତୀ) ଙ୍କ ଦ୍ୱାରା ହରଣ ହେବା ପରେ ହେ ଦେବ, ପୃଥିବୀରେ ହର (ଶିବ) ଙ୍କର ଅଭାବକୁ ଦେଖି ଗଙ୍ଗା ସାଗରକୁ, ଶଶିକଳା ଆକାଶକୁ, ନାଗରାଜ ପାତାଳକୁ, ସର୍ବଜ୍ଞତ୍ୱ ଓ ଅଧୀଶ୍ୱରତ୍ୱ ଆପଣଙ୍କୁ ଓ ଭିକ୍ଷାଟନ ମୋତେ ପ୍ରାପ୍ତ ହୋଇଥିଲେ ।

कस्त्वं वानर! रामराजभवने लेखार्थसंवाहको
यातः कुत्र, पुराऽगतः? स हनुमान् निर्दग्धलङ्कापुरः।।

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बद्धो रावणसूनुनेति कपिभिः सन्ताडितस्तर्जितः
स व्रीडार्त्तपराभवो वनमृगः कुत्रेति न ज्ञायते।।१९।।

हे वानर, तुम कौन हो? राम के राजभवन में पत्र के अर्थ को पहुँचाने वाला कहाँ गया, पहले आया हुआ, लंकापुरी को जला डालने वाला वह हनुमान् कहाँ चला गया? रावणपुत्र (मेघनाद) के द्वारा बाँधा गया, इसलिए वानरों द्वारा पीड़ित अपमानित किया गया और लज्जा से पराभूत वह वनपशु कहाँ है? यह पता नहीं चल पा रहा है।

O monkey, who are you, the messenger of Sita's message at Rama's palace, who had burnt the Kingdom of Lanka, where has gone that Hanuman? Being tied by Ravana's son he was rebuked and blamed by monkeys, he might have gone with shame, which is not known to anybody.

ହେ ବାନର, ତୁମେ କିଏ? ରାମଙ୍କର ରାଜଭବନରେ ପତ୍ରର ଅର୍ଥକୁ ପହଞ୍ଚାଇ କୃତକାର୍ଯ୍ୟ ହୋଇଥିବା, ଲଙ୍କାପୁରୀକୁ ଜଳାଇଥିବା ସେହି ହନୁମାନ୍ କୁଆଡେ ଗଲେ ? ରାବଣ ପୁତ୍ରଦ୍ୱାରା ବନ୍ଧା ଯାଇଥିଲେ ବୋଲି ବାନରମାନଙ୍କଦ୍ୱାରା ପୀଡିତ ଓ ତାଡିତ ହୋଇ ଲଜ୍ଜାରେ ପରାଭୂତ ହୋଇଥିବା ବନମୃଗ କେଉଁଠାରେ ଅଛନ୍ତି ଜଣାନାହିଁ ।

रामे सीतावियोगज्वरजुषि विहितं लङ्घनं येन सिन्धोः
सीतायाः पथ्ययुक्तं प्रमदवनमनोन्मद्यलङ्काधिनेतुः।
दृक्षु न्यस्तः कषायो दनुजवरवधूलोचनेष्वम्बुपूरः
स्वास्थ्यं त्रैलोक्यजातं स जयति हनुमान् चित्रवैद्यः कपीन्द्रः ।।२०।।

कपिवर हनुमान् ने सीता के वियोग-ज्वर से राम के युक्त होने पर समुद्र लाँघा, सीता के लिये जो अनुकूल था, वे बातें कहीं, लङ्का-पति(रावण) का आनन्दवन उजाड़ा, दृष्टियों में कसैलापन डाला, श्रेष्ठ राक्षसों की वधूओं के नेत्रों में जल भरा और तीनों लोकों को स्वस्थ किया। वह कपिश्रेष्ठ अद्भुत वैद्य हनुमान् विजय को प्राप्त होता है।

That great monkey Hanuman wonderful physician be victorious; who crossed the ocean when Rama suffered form fever due to separation of Sita, burnt the pleasure garden of

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

the King of Lanka, made his eyes redish, filled the eyes of the wives of great demons with tears, brought healthy conditions to three worlds.

ଶ୍ରୀରାମ ସୀତା ବିରହ ଜନିତ ଜ୍ୱରରେ ଗ୍ରସ୍ତ ହେବା ପରେ ଯିଏ ସମୁଦ୍ର ଲଂଘନ କରିଥିଲେ, ସୀତାଙ୍କୁ ଆଶ୍ୱସ୍ତ କରିବା ପରି ବାକ୍ୟ କହିଥିଲେ, ଲଙ୍କାଧୀଶ୍ୱରଙ୍କର ପ୍ରମୋଦବନକୁ ବିଧ୍ୱଂସ କରିଥିଲେ, ଦୃଷ୍ଟିକୁ କଷାୟବର୍ଣ୍ଣ କରିଥିଲେ, ପ୍ରମୁଖ ରାକ୍ଷସମାନଙ୍କର ବଧୂମାନଙ୍କ ଲୋଚନରେ ଅଶ୍ରୁ ଭରିଥିଲେ, ତିନିଲୋକକୁ ସ୍ୱସ୍ତ କରିଥିଲେ, ସେହି ଅଦ୍‌ଭୁତ ବୈଦ୍ୟ ବାନରଶ୍ରେଷ୍ଠ ହନୁମାନ୍ ବିଜୟୀ ହୁଅନ୍ତି ।

काव्यं करोमि, नहि, चारुतरं करोमि,
यत्नात्करोमि यदि चारुतरं करोमि।।
भूपालमौलिमणिरञ्जितपादपीठ!
हे साहसाङ्क! कवयामि, वयामि, यामि।।२१।।

मैं काव्यरचना करता हूँ, पर उतनी सुन्दर नहीं कर पाता, पर अगर प्रयत्नपूर्वक रचना करता हूँ, तो अतिसुन्दर रच देता हूँ, हे साहसलक्षण से युक्त (राजन्) आपका पादपीठ भूपालों की मस्तक मणियों से रञ्जित है। मैं कविता रचता हूँ, बुनाई करता हूँ और घर जाता हूँ।

I am composing poetry, but not so beautiful. If I am composing with interest, then it is charming. O Great King (bravery is whose sign) whose feet are decorated with the crowns of other Kings. If you wish, I may compose, wave and leave.

କାବ୍ୟ ରଚନା କରୁଛି, କିନ୍ତୁ ସେତେ ସୁନ୍ଦର କରି ପାରୁନି । ଯଦି ଯତ୍ନରେ କରିବି, ତେବେ ଅଧିକ ସୁନ୍ଦର କରିବି । ରାଜାମାନଙ୍କର ମସ୍ତକରେ ଧାରଣ କରିଥିବା ମୁକୁଟର ମଣିରେ ରଞ୍ଜିତ (ସଜ୍ଜିତ) ହୋଇଥିବା ପଦଯୁଗଳ ଯୁକ୍ତ, ହେ ସାହସଂଙ୍କ । କାବ୍ୟ ରଚନା କରୁଛି, ଲୁଗା ବୁଣୁଛି, (ନଚେତ୍) ଯାଉଛି ।

क्रिया से एक-एक वर्ण लोप करने से चमत्कार है।

कस्त्वं ब्रह्मन्नपूर्वः क्व च तव वसतिः याखिला ब्रह्मसृष्टिः
कस्ते नाथोऽप्यनाथः क्व च तव जनको नैव तातं स्मरामि।

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

किं तेऽभीष्टं ददामि त्रिपदपरिमिता भूमिरल्पं किमेतत्
त्रैलोक्यं भावगर्भं बलिमिदमवदद्वामनो नः स पायात्।।२२।।

राजा बलि—हे ब्राह्मण, तुम कौन हो? वामन बने विष्णु—मैं अपूर्व हूँ। तुम्हारा घर कहाँ है? सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड। तुम्हारा स्वामी कौन है? मैं अनाथ हूँ और तुम्हारे पिता कहाँ हैं? वामन बने विष्णु—मुझे पिता की याद नहीं आती। राजा बलि—तुम्हें क्या इष्ट है? वह इष्ट मैं देता हूँ। तीन पदों से सीमित भूमि। यह तो अल्प है। यह तीन लोक को समझाता है—इस प्रकार बलि को बताता हुआ वह वामन हम लोगों की रक्षा करें।

Bali–O Brahman, who are you?

Brahman–My name is Apurva (not born previously)

Bali–Where is your shelter?

Brahman–This whole universe.

Bali–Who is your master?

Brahman–I have no master.

Bali – who is your father?

Brahman–I don't remember my father.

Bali–What do you want? I will give.

Brahman–Three steps of land.

Bali–This is very less.

Brahman–Three regions are understood by it.

That dwarf (Brahman Lord Vishnu) who told Bali (the demon king) like this may protect us.

ରାଜା ବଳି-ହେ ବ୍ରାହ୍ମଣ! ଆପଣ କିଏ?

ବ୍ରାହ୍ମଣ-ମୋ ନାମ ଅପୂର୍ବ।

ବଳି-ଘର କେଉଁଠାରେ ?

ବ୍ରାହ୍ମଣ-ଏହି ଅଖିଳ ବ୍ରହ୍ମାଣ୍ଡ।

ବଳି-ତୁମର ସ୍ୱାମୀ କିଏ ?

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ବ୍ରାହ୍ମଣ-ମୁଁ ଅନାଥ ।

ବଳି-ତୁମର ପିତା କେଉଁଠାରେ ଅଛନ୍ତି ?

ବ୍ରାହ୍ମଣ- ପିତାଙ୍କର ନାମ ସ୍ମରଣ ନାହିଁ ।

ବଳି-ତୁମେ କ'ଣ ଚାହଁ ? ମୁଁ ଦେବି ।

ବ୍ରାହ୍ମଣ-ତିନି ପାଦ ପରିମାଣର ଭୂମି ।

ବଳି-ଏହା ଅଳ୍ପ ଅଟେ । ଏଥିରେ କ'ଣ ପ୍ରୟୋଜନ ?

ବ୍ରାହ୍ମଣ-ଏଥିରେ ତିନିଲୋକର ଅର୍ଥ ଲୁଚି ରହିଛି ।

ବଳିକୁ ଏହିପରି କହିଥିବା ବାମନ ଆମର ରକ୍ଷା କରନ୍ତୁ ।

(वामन बने विष्णु—) इस भूमि के रूप में त्रिलोकी है। वामन (रूप से विष्णु) ने ऐसा कहा। वे हमारी रक्षा करें।

कौसल्यालसदालवालजनितः, सीतालतालिङ्गितः,
सिक्तः कङ्क्तिरथेन, सोदरमहीशाखाभिरभ्युन्नतः।
रक्षस्तीव्रनिदाघपाटवपटुच्छायाश्रितानन्दकृत्
युष्मद्वाञ्छितसत्फलानि तनुयात् श्रीरामकल्पद्रुमः ।।२३।।

श्री राम कल्प-वृक्ष हैं, जो कौसल्यारूपी कान्तिमान् आलवाल (जड़ के घेरे) में उत्पन्न हुआ है, जो सीतारूपी लता के द्वारा आलिङ्गित है, जो दशरथरूपी जल से सिक्त है, जो सहोदर-रूपी पृथ्वी-शाखाओं से समुन्नत है, जो राक्षसरूपी तीव्र ग्रीष्म को सहने में पटु है, छाया आश्रित जनों को आनन्दकारी है, वह तुम्हारे द्वारा इच्छित सत्फल प्रदान करें।

Shri Rama, the Kalpadruma (tree able to fulfill all desires) who took birth from the womb of Kausalya, embraced by Sita like creeper, watered by Dasaratha, made strong by own brothers like branches, clever to face the impact of strong strike of demons, provider of happiness like a shade, who came for resque, may fulfill your good wishes.

କୌଶଲ୍ୟା ରୂପକ କାନ୍ତିଯୁକ୍ତ ଆଳବାଳ (ମଳା) ବେଷ୍ଟିତରୁ ଜାତ, ସୀତା ରୂପକ ଲତାଦ୍ୱାରା ଆଲିଙ୍ଗିତ, ଦଶରଥ ରୂପକ ଜଳଦ୍ୱାରା ସିଂଚିତ, ସୋଦର ରୂପକ

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ମହୀଶାଖାଦ୍ୱାରା ଅଭ୍ୟୁନ୍ନତ, ରାକ୍ଷସ ରୂପ ତୀବ୍ର ଗ୍ରୀଷ୍ମକୁ ସହିବାରେ ସମର୍ଥ, ଛାୟା ଆଶ୍ରିତଙ୍କର ଆନନ୍ଦକର୍ତ୍ତା, (ଶରଣାଗତ ରକ୍ଷକ) ଶ୍ରୀରାମ ରୂପକ କଳ୍ପବୃକ୍ଷ ତୁମ୍ଭମାନଙ୍କର ଇଚ୍ଛିତ ସତ୍‌ଫଳମାନ (ଉତ୍‌ତମ ଅଭିଳାଷାକୁ) ପ୍ରଦାନ କରନ୍ତୁ ।

एका भार्या प्रकृतिमुखरा चञ्चला सा द्वितीया,
पुत्रोऽनङ्गस्त्रिभुवनजयी मन्मथो दुर्निवारः।
शेषश्शय्याप्युदधिशयनं वाहनं पन्नगारिः
स्मारं स्मारं स्वगृहचरितं दारुभूतो मुरारिः ।।२४।।

विष्णु की एक पत्नी लक्ष्मी स्वभाव से ही चंचल है और दूसरी पत्नी सरस्वती बहुत वाचाल है। बेटा अंगहीन (अनङ्ग=कामदेव) त्रिलोक का विजेता मन्मथ (कामदेव) और उसे रोके रहना मुश्किल है। शेषनाग विस्तर (शय्या) है, शयनस्थान समुद्र है और सवारी साँपों का शत्रु (गरुड़) है। अपने घर का हाल बार-बार याद कर मुरारि (विष्णु) काठ (लकड़ी) के हो गये।

One wife is talkative by nature, another is restless. Bodyless son Manmath who has won the three worlds is very difficult to control. The snake Shesa is the bed and the ocean is the cot. The enemy of snakes (Garuda) is the vehicle. Murari (Lord Vishnu) took wooden form having remembered the characteristics of his house.

ବିଷ୍ଣୁଙ୍କର ଜଣେ ପତ୍ନୀ (ସରସ୍ୱତୀ) ସ୍ୱଭାବରେ ମୁଖର, ଅନ୍ୟ ଜଣେ (ଲକ୍ଷ୍ମୀ) ଚଂଚଳା (ସ୍ଥିର ନୁହନ୍ତି ।) ପୁତ୍ର ଅନଙ୍ଗ (କାମଦେବ) ତ୍ରିଭୁବନ ବିଜୟୀ ମନ୍ମଥ ଓ ତାଙ୍କୁ ବାରଣ କରିବା କଷ୍ଟସାଧ । ଶେଷନାଗ ହେଉଛି ଶଯ୍ୟା, ସମୁଦ୍ରରେ ଶୟନ, ବାହନ ହେଉଛି ପନ୍ନଗାରୀ (ଗରୁଡ) । ମୁରାରୀ (ବିଷ୍ଣୁ) ନିଜ ଗୃହ ସଦସ୍ୟମାନଙ୍କର ଚରିତକୁ ସ୍ମରଣ କରି କରି କାଠ ପାଲଟିଗଲେ ।

अत्तुं वाञ्छति वाहनं गणपतेः आखुं क्षुधार्तः फणी,
तं च क्रौञ्चपतेः शिखी, स गिरिजासिंहोऽपि नागाननम्।
गौरी जह्नुसुतामसूयति, कलानाथं च भालानलो
निर्विण्णः स पपौ, कुटुम्बकलहादीशोऽपि हालाहलम्।।२५।।

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भूख से व्याकुल सर्प गणेश की सवारी चूहे को और उस साँप को कार्तिकेय का मोर तथा पार्वती का सिंह हाथी के मुँख वाले (गणेश) को खाना चाहते हैं। पार्वती गंगा से और मस्तक की आग (तीसरी आँख) चन्द्रमा से द्रोह करती है। वे ईश्वर (शंकर) परिवार की कलह से विरक्त दु:खी होकर महाविष (कालकूट) पी गये।

The hungry snake is eager to eat the rat, the vehicle of Ganapati and the peacock of Kraucapati (Kartikeya) wants to eat that snake, that lion of Girija also (wants to eat) Gajanana (Ganesh), Gouri is jealous of the daughter of Jahnu, the fire in forehead is of moon (Kalanidhi). Being downtrodden with the family quarrel Shiva drank poison.

ଗଣପତି (ଗଣେଶ)ଙ୍କର ବାହାନ (ଆଖୁ) ମୂଷାକୁ ଖାଇବା ପାଇଁ (କ୍ଷୁଧାର୍ତ୍ତ) ଭୋକିଲା ସାପ ଚାହୁଁଛି, ତାକୁ ପୁଣି (ଖାଇବା ନିମନ୍ତେ) କ୍ରୌଚଂପତି (କାର୍ତ୍ତିକେୟ) ଙ୍କର ମୟୂର, ଗିରିଜାଙ୍କର ସେହି ସିଂହ ମଧ୍ୟ ଗଜାନନ (ଗଣେଶ)ଙ୍କୁ (ଖାଇବାକୁ ଚାହୁଁଛି) ଗୌରୀ (ପାର୍ବତୀ) ଜହ୍ନୁସୁତା (ଗଙ୍ଗା)ଙ୍କୁ ଈର୍ଷା କରୁଛନ୍ତି । କଳାନାଥ (ଚନ୍ଦ୍ରମା)ଙ୍କୁ ଲଲାଟରେ ଥିବା ଅଗ୍ନି ଜଳାଉଛି । କୁଟୁମ୍ବଜନଙ୍କର କଳହରେ ପୀଡିତ ସେହି ଈଶ ହଳାହଳ ବିଷ ପାନ କରିଥିଲେ ।

कक्षे किं तव? पुस्तकं, किमुदकं? काव्यार्थसारोदकं,
गन्धः किं ? ननु रामरावणमहासङ्ग्रामरङ्गोद्भवः।
पुच्छः किं ? ननु तालपत्रलिखितं, किं पुस्तकं भो कवे?
राजन् भूमिसुरैश्च सेवितमिदं रामायणं पुस्तकम्।।२६।।

राजा—तुम्हारी काँख में क्या है? कवि—पुस्तक है।

राजा—जल क्यों चू रहा है? कवि—काव्य-अर्थ से उत्पन्न वस्तु रूपक जल है।

राजा—गन्ध क्यों आ रहा है? कवि—राम और रावण के महासंग्रामरूपी रङ्गशाला से उठने वाला गन्ध है। राजा—दुम (पूँछ) क्या है? कवि—भाई, वह ताड़ के पत्रों पर लिखा लेख है। राजा—हे कवि, कौन सी पुस्तक है? कवि—हे राजा, ब्राह्मणों द्वारा सेवित यह रामायण नामक पुस्तक है।

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

King–What is in your arm pit?

Poet–Book.

King–Which water is falling?

Poet–The suggested meaning of the poetry.

King–Which is the fragrance?

Poet–It is coming out from the great battle between Rama and Ravana.

King–Which one is the tail?

Poet–Composed on palm leaf.

King–O Poet, which book is it?

Poet–O king this is the book named Ramayana served by the Brahmins.

ରାଜା-ତୁମର କାଖରେ କ'ଣ ଅଛି ?

କବି-ପୁସ୍ତକ ।

ରାଜା-କି ପାଣି (ବାହାରୁଛି) ?

କବି-କାବ୍ୟାର୍ଥର ସାରଭୂତ ଜଳ ବିଶେଷ ।

ରାଜା-କି ଗନ୍ଧଯୁକ୍ତ ?

କବି-ନିଶ୍ଚିତ ଭାବରେ ରାମ-ରାବଣ ମହାସଂଗ୍ରାମ ରୂପକ ରଙ୍ଗଭୂମିରୁ ଉତ୍ପନ୍ନ ଗନ୍ଧ = ସନ୍ଦେଶ ।

ରାଜା-ଲାଞ୍ଜ କ'ଣ ଅଟେ ?

କବି-ନିଶ୍ଚିତ ଭାବରେ ତାଳପତ୍ରରେ ଲେଖାଯାଇଛି ।

ରାଜା-ହେ କବି, ଏହା କେଉଁ ପୁସ୍ତକ ?

କବି-ହେ ରାଜନ୍, ଭୂମିସୁର (ବ୍ରାହ୍ମଣ = ବିଦ୍ୱାନ୍) ମାନଙ୍କଦ୍ୱାରା ସେବିତ (ଆଦୃତ) ଏହା ହେଉଛି ରାମାୟଣ ପୁସ୍ତକ ।

प्रातर्द्यूतप्रसङ्गेन मध्याह्ने स्त्रीप्रसङ्गतः।
रात्रौ चोरप्रसङ्गेन कालो गच्छति धीमताम्।।२७।।

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बुद्धिमानों की सुबह जुए की चर्चा से, दोपहर स्त्री-प्रसंग से और रात्रिकाल चोरों के प्रसङ्ग से व्यतीत होती है। अर्थात् प्रातः द्यूत प्रसंगवाला आर्षकाव्य महाभारत, मध्याह्न स्त्री प्रसंगवाला काव्य रामायण एवं रात्रि में चोर प्रसङ्गवाला (श्रीकृष्ण) ग्रन्थ भागवत के अध्ययन से विद्वानों का समय व्यतीत होता है।

The morning is spent in discussion of gamble i.e., mahabharata, the midday about women i.e. Ramayana and the night about the thief Srimadbhagavata, In this way the time of wise persons goes.

(କଳିଯୁଗରେ) ବିଦ୍ୱାନମାନଙ୍କର ସକାଳ ଜୁଆଖେଳରେ ଅର୍ଥାତ୍ ମହାଭାରତ ଅଧ୍ୟୟନରେ, ଦ୍ୱିପ୍ରହରେ ସ୍ତ୍ରୀ ବିଷୟକ ରାମାୟଣ ଅଧ୍ୟୟନରେ ଏବଂ ରାତ୍ରିରେ ଚୋର ସମ୍ବନ୍ଧିତ ବିଷୟ ଭାଗବତ ପୁରାଣ ଅଧ୍ୟୟନରେ ସମୟ ବିତେ ।

प्रविश झटिति गेहं मा बहिस्तिष्ठ कान्ते,
ग्रहणसमयवेला वर्तते शीतरश्मेः।
तव मुखमकलङ्कं वीक्ष्य नूनं स राहु-
र्ग्रसति तव मुखेन्दुं पूर्णचन्द्रं विहाय।।२८।।

हे सुन्दरी, जल्दी से घर में प्रवेश करो, बाहर न खड़ी होओ; क्योंकि चन्द्रग्रहण का समय है। राहु तुम्हारा कलंकरहित चन्द्रतुल्यमुख देखकर पूर्ण चन्द्रमा को छोड़कर तुम्हें ग्रस लेगा।

O beloved, enter into the house immediately. Don't stay outside. It is the time of lunar eclipse. Seeing your spotless face that Rahu will surely swallow your face leaving the full moon which is spotted.

ହେ ପ୍ରିୟେ, ଶୀଘ୍ର ଗୃହ ମଧ୍ୟକୁ ପ୍ରବେଶ କର । ବାହାରେ ରୁହ ନାହିଁ । ଶୀତରଶ୍ମି (ଚନ୍ଦ୍ର)ଙ୍କର ଏହା ଗ୍ରହଣ ସମୟ ଅଟେ । ତୁମର ଅକଳଙ୍କ ମୁଖକୁ ଦେଖି ନିଶ୍ଚୟ ସେହି ରାହୁ ସକଳଙ୍କ ପୂର୍ଣ୍ଣଚନ୍ଦ୍ରଙ୍କୁ ଛାଡି ତୁମର ମୁଖଚନ୍ଦ୍ରକୁ ଗ୍ରାସ କରିବ ।

प्राणेश विज्ञप्तिरियं मदीया,
तत्रैव नेया दिवसाः कियन्तः।

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सम्प्रत्ययोग्यस्थितिरेष देशः,
करा हिमांशोरपि तापयन्ति।।२९।।

हे प्राणेश, मेरा यह निवेदन है कि तुम कुछ दिन वहीं व्यतीत करो। इस देश की स्थिति इस समय अयोग्य (खराब) है। हिमसदृशकिरणों वाले (चन्द्रमा) के कर (किरणें; हाथ) भी तप्त कर रहे हैं।। विरहिणी नायिका की यह उक्ति है। निषेध के व्याज से पति का आगमन चाहती है।

O my husband, this is my request that you should spend there some more days. The condition of this state (place) is not proper to stay now. The beams of moon are also painful. The suggested meaning is that she wants her husband immediately.

ହେ ପ୍ରାଣେଶ, ମୋର ଏହି ନିବେଦନ କି ସେହିଠାରେ ହିଁ କିଛି ଦିନ ବିତେଇବା ଉଚିତ୍ । ବର୍ତ୍ତମାନ ଏହି ଦେଶର ସ୍ଥିତି ରହିବା ଯୋଗ୍ୟ ନୁହେଁ । ହିମାଂଶୁ (ଚନ୍ଦ୍ର)ର କିରଣ ମଧ୍ୟ ସଂତାପ ଦେଉଛି । (ନିଷେଧ ଉକ୍ତି ମାଧ୍ୟମରେ ପତି ସମାଗମ ପ୍ରାର୍ଥିନୀ ଅଟେ ।)

मधु तिष्ठति वाचि योषितां, हृदि हालाहलमेव केवलम्।
अत एव निपीयतेऽधरो, हृदयं मुष्टिभिरेव पीड्यते।।३०।।

नारियों की वाणी में मधु (रहता है) और हृदय में सिर्फ भयानक विष (कालकूट) रहता है। इसलिए निचले ओंठ का पान किया जाता है और हृदय (छाती) मुट्ठियों से दबाया जाता है।

Honey is in the lips of women, only poison is in the heart. So the lip is suck and the heart is pressed down with fist.

ନାରୀମାନଙ୍କର ବାଣୀରେ ମଧୁ ଥାଏ, ହୃଦୟରେ କେବଳ ହଳାହଳ ବିଷ ହିଁ ଥାଏ । ତେଣୁ ଅଧର ପାନ କରାଯାଏ, ହୃଦୟକୁ ମୁଷ୍ଟିଘାତରେ ପୀଡିତ କରାଯାଏ ।

भट्टिर्नष्टो, भारविश्चापि नष्टो,
भिक्षुर्नष्टो, भीमसेनो विनष्टः।
भुक्कण्डोऽहं भूपतिस्त्वं हि राजन्!
भब्भा-पङ्क्तौ कालधर्मः प्रविष्टः ।।३१।।

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भट्टि (कवि) नष्ट हो गये, भारवि (नामक) कवि भी चले गये और भीमसेन (नामक भयंकर) पाण्डव भी सिधार गये। मैं भुक्कुण्ड हूँ (जिसके नष्ट होने की बारी है) और हे राजा, आप भूपति हैं, (मेरे बाद जिनका नाश होने वाला है।) अतः मुझे बचाइये, (अन्यथा आपका नाश हो जायेगा)। "भ" की पङ्क्ति भा, भि, भु, भू, भे, भै, भो, भौ में कालवृत्ति प्रविष्ट हो गई है।

The poet Bhatti has died / gone. Bharavi has also gone. Bhikshu died. Bhimasena has died. I am with a clay pot. O King you are master of earth. The characteristic of time/ death has entered into the 'Bha' group.

ଭଟ୍ଟି କବି ନଷ୍ଟ ହୋଇଗଲେ, ଭାରବି କବି ମଧ୍ୟ ନଷ୍ଟ ହୋଇଗଲେ । ବିକ୍ଷାନ ଭିକ୍ଷୁ ନଷ୍ଟ ହୋଇଗଲେ, ଭୀମସେନ ବିନଷ୍ଟ ହୋଇଗଲେ । ହେ ରାଜନ୍, ମୁଁ ଭୁକ୍କୁଣ୍ଡ, ଆପଣ ହିଁ ହେଉଛନ୍ତି ଭୂପତି । ଉପର୍ଯୁକ୍ତ 'ଭ' ଅକ୍ଷରରେ ଆରମ୍ଭ ସମସ୍ତଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ କାଳଧର୍ମ ପ୍ରବେଶ କରିଅଛି ।

वने चरामो, वसु चाहरामो, नदं तरामो, न भयं स्मराम।
इतीरयन्तो विपिने किराता, मुक्तिं गता रामपदानुषङ्गात्।।३२।।

हम वन में घूमते हैं, (रावण-जैसे की) सम्पत्ति (राज्य) छीनते हैं, नद (तालाब; समुद्र) में तैरते (समुद्र पार करते) हैं और भय का स्मरण (तक) नहीं करते। इस तरह वनस्थल में राम को कहते हुये भील रामजी के चरण से सम्बद्ध होने के कारण मोक्ष प्राप्त कर लेते हैं।

We are wondering in the forest and are stealing the wealth. We are crossing big river and are not remembering any fear. The hunters saying like this in the forest, got salvation in association with Rama's feet.

ବଣରେ ବିଚରଣ କରୁଛେ । ସମ୍ପତ୍ତି ମଧ୍ୟ ଲୁଟି ନେଉଛେ । ନଦୀ ସଂତରଣ କରୁଛେ, କେବେ ଭୟକୁ ଭାବୁନାହୁଁ । ବନ ମଧ୍ୟରେ ଏହିପରି କହୁଥିବା ବ୍ୟାଧ (ଶିକାରୀ) ରାମପାଦ ଅନୁସରଣ କରି ମୁକ୍ତିପ୍ରାପ୍ତ କଲା ।

विक्रेतुकामा किल गोपकन्या, मुरारिपादार्पितचित्तवृत्तिः।
दध्यादिकं मोहवशादवोचत्, गोविन्द दामोदर माधवेति ।।३३।।

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दही आदि बेचने के लिये इच्छुक (बेचती हुई) ग्वालकन्यायें, जिनकी चित्तवृत्ति कृष्णचरणों में अर्पित है, दही आदि (न कह कर) मोहवश (बेख्याली में) हे गोविन्द, (हे) दामोदर (हे) माधव बोल गईं।

The girls of Gopa (Braja) gone to sell curd, offered their mind at the feet of Murari, uttered Govinda, Damodara and Madhava etc in place of curd due to deep attachment.

(ବିକ୍ରି କରିବାକୁ ଇଚ୍ଛା ପ୍ରକାଶ କରୁଥିବା ଗୋପକନ୍ୟା) ମୁରାରୀ (ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣ)ଙ୍କର ପାଦରେ ମନର ଭାବନାକୁ ଅର୍ପଣ କରିଥିବାରୁ ଦହି ଆଦି କହିବା ବଦଳରେ ମୋହ ବଶରେ ହେ ଗୋବିନ୍ଦ, ହେ ଦାମୋଦର, ହେ ମାଧବ ବୋଲି କହିଥିଲେ ।

कालिन्दीपुलिनोदरेषु मुसली यावद्गतः खेलितुं
तावत्कर्बुरिकं पयः पिब हरे! वर्धिष्यते ते शिखा।
इत्थं बालतया, प्रतारणपदं श्रुत्वा यशोदागिरः
पायान्नः स्वशिखां स्पृशन् समुदितः क्षीरेऽर्द्धपीते हरिः ।।३४।।

खेलने के लिये जैसे ही बलराम यमुनातट पहुँचे, वैसे ही बोलीं कि हे कन्हैया, दूध पी ले। (इससे) तेरी (सिर की) चोटी बड़ी हो जायेगी। यशोदा के छल-भरे वचन सुनकर दूध का आधा भाग पीने के बाद लड़कपन के कारण अपनी चोटी छूते हुये प्रसन्न कृष्ण हमारी रक्षा करें।

When Musali/Baralam went near the river Kalindi / Yamuna to play, mother Yashoda asked Krishna to drink milk to grow his hairs. By drinking half of the milk he touched his hairs with child like behaviour to see whether grown or not. This delighted Hari may protect us.

ମୁସଳୀ (ବଳରାମ) ଯମୁନାର ତଟରେ ଖେଳିବା ନିମନ୍ତେ ଯେତେବେଳେ ଗଲେ, ହେ ହରି, ଦୁଗ୍ଧ ପିଅ, ଏଥିରେ ତୁମର ଶିଖା ବଢିବ । ଏହିପରି ଭୁଲାଇବାକୁ କୁହାଯାଇଥିବା ଯଶୋଦାଙ୍କର ବଚନକୁ ଶୁଣି ବାଳ ସୁଲଭ ଗୁଣରେ ଅଧା କ୍ଷୀର ପିଇ ନିଜର ଶିଖାକୁ ଛୁଇଁ ଆନନ୍ଦିତ ହେଇଥିବା ହରି ଆମ୍ଭମାନଙ୍କର ରକ୍ଷା କରନ୍ତୁ ।

ओष्ठं मुञ्च हरे बिभेमि भवता पानैर्हता पूतना
कण्ठाश्लेषममुं जहीहि दलितावालिङ्गनेनार्जुनौ।

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मा देहि च्छुरितं हिरण्यकशिपुर्नीतो नखैः पञ्चता-
मित्थं हारितरात्रिकेलिरवताल्लक्ष्म्युपहासाद् हरिः।।३५।।

(विष्णु से उनकी प्रिया कहती हैं कि मेरे ओंठ में लगा अपना होंठ) हटाओ; क्योंकि तुम्हारे होंठ के पान करने से पूतना मर गयी। कण्ठ-आलिंगन त्याग दो, जिसने यामलार्जुन को गिरा दिया था। नाखून मत गड़ाओ, नख-क्षत जिन्होंने हिरण्यकशिपु को मौत की राह दिखा दी थी। इस प्रकार विनोद से विलास पूर्ण रात्रि को विष्णु बितायें।

O hari, don't suck the lips, as Putana was killed by your sucking, give up this embracement as such uprooted / emashed twin Arjunas (Trees). Don't press the nails as Hiranyakashipu was killed by these nails. This Hari may protect who was betrayed by Lakshmi at night pleasurely in this way.

ହେ ହରି, ଓଷ୍ଠ ଛାଡିଦିଅ (ଅଧର ପାନ କରନାହିଁ), ଆପଣଙ୍କର ପାନ କରିବାଦ୍ୱାରା ପୁତନା ହତ ହୋଇ ଥିବାରୁ ଡରୁଛି । ଏହି କଣ୍ଠାଶ୍ଳେଷକୁ ପରିତ୍ୟାଗ କର, ଯେହେତୁ ଆଲିଙ୍ଗନ ଦ୍ୱାରା ଯାମଳାର୍ଜୁନ ମୂଳୋତ୍‌ପାଟିତ ହୋଇଥିଲେ । ନଖାଘାତ କର ନାହିଁ କାରଣ ନଖଦ୍ୱାରା (ବିଦାରଣ କରି) ହିରଣ୍ୟକଶିପୁକୁ ମୃତ୍ୟୁପ୍ରାପ୍ତ କରାଇଥିଲେ । ଏହିପରି ଲକ୍ଷ୍ମୀଙ୍କଦ୍ୱାରା ଉପହାସରେ ରାତ୍ରିକେଳି ବାରଣ କରାଯାଉଥିବା ହରି ରକ୍ଷା କରନ୍ତୁ ।

गेहे गेहे जङ्गमा हेमवल्ली,
वल्ल्यां वल्ल्यां पार्वणश्चन्द्रबिम्बः।
बिम्बे बिम्बे कोकिलानां विरावो
रावे रावे जायते पञ्चबाणः ।।३६।।

गृह-गृह में स्वर्णलता गतिशील है, लता-लता में शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा पर चन्द्र-बिम्ब वास करता है, बिम्ब-बिम्ब में कोकिलों की कूक विराजित होती है और प्रत्येक कूक में कामदेव होता है।

Golden creeper is spreading in every house. The beam of fullmoon is spread in every creeper. The melody of cuckoo is spread in every beam. The arrow of cupid

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(attraction) develops in every sound. (This is sign of spring season which invokes cupid)

ଘରେ ଘରେ ସ୍ୱର୍ଣ୍ଣଲତା ମାଡିଛନ୍ତି, ଲତା ଲତାରେ ପୂର୍ଣ୍ଣିମାର ଚନ୍ଦ୍ରବିମ୍ବ ପଡିଛି, ବିମ୍ବ ବିମ୍ବରେ କୋକିଳର ବିରାବ ଶୁଭୁଛି, ରାବ ରାବରେ କାମଭାବନା ଜାଗରିତ ହୋଇଅଛି ।

वेदा विभिन्नाः स्मृतयो विभिन्ना
नैको मुनिर्यस्य मतं न भिन्नम्।
धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायां
महाजनो येन गतः स पन्थाः।।३७।।

वेद परस्पर भिन्न हैं, स्मृतियाँ (शास्त्र) भिन्न-भिन्न हैं। ऐसे एक भी ऋषि नहीं हैं, जिनके विचार भिन्न न हों। वास्तव में धर्म-तत्त्व गुफा में बन्द है (स्पष्ट रूप से बोधगम्य नहीं है।) अतः जिस मार्ग से महापुरुष चले हैं, वही मार्ग प्रशस्त है। परस्पर विपरीत विचारों को देख-सुनकर सभी लोग भ्रान्त रहते हैं। अतः उन विचारों के प्रपंच में न पड़कर किसी श्रेष्ठ मनुष्य के आचरण के समान अपना आचरण बनाना चाहिये। यह लाख बातों में एक है।

The Vedas are different. The regulating books are different. There is not a single seer whose view is not different. The theme of religion is kept in secret. In what way the great person went is the right path.

ବେଦ ଭିନ୍ନ ଭିନ୍ନ, ସ୍ମୃତି ଗ୍ରନ୍ଥ ଭିନ୍ନ ଭିନ୍ନ, ଜଣେ ହେଲେ ମୁନି ନାହାନ୍ତି, ଯାହାଙ୍କର ମତ ଭିନ୍ନ ନୁହେଁ । ଧର୍ମର ତତ୍ତ୍ୱ ଗୁହା ମଧ୍ୟରେ ଲୁକ୍ କାୟିତ । ମହାଜନ (ଶ୍ରେଷ୍ଠଜନ) ଯେଉଁ ରାସ୍ତାରେ ଯାଇଛନ୍ତି, ତାହା ଅନୁସରଣୀୟ ମାର୍ଗ ।

उपासतामात्मविदः पुराणाः परं पुमांसं निहितं गुहायाम्।
वयं यशोदाशिशुबाललीलाकथासुधासिन्धुषु लीलयामः।।३८।।

आत्मज्ञानी पुराने लोग गुफा में बन्द परम पुरुष (भगवान्) की उपासना करें। हम (तो वैसा न कर) यशोदा के शिशु (कृष्ण) की बाल-लीलारूपी अमृतसागरों में डुबकी लगाते रहते हैं।

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

Let the traditional people worship the great person (soul) living in the secret place (heart), but we live (in Krishna) being merged in the nectar of ocean of the childhood activities of Yashoda's child.

ପ୍ରାଚୀନ ଆତ୍ମବିଦ୍ ବିଦ୍ୱାନମାନେ ଗୁହାରେ ନିହିତ ପରମ ପୁରୁଷଙ୍କର ଉପାସନା କରିଥାନ୍ତି । ଆମ୍ଭେମାନେ ଯଶୋଦାଙ୍କର ଶିଶୁ (ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣଙ୍କର) ବାଲ୍ୟଲୀଳା କଥା ରୂପକ ଅମୃତ ସାଗରରେ ସ୍ନାନ କରୁଛୁ ।

न कश्चित्कस्यचिन्मित्रं न कश्चित्कस्यचिद् रिपुः।
व्यवहारेण जायन्ते मित्राणि रिपवस्तथा।।३९।।

न कोई किसी का मित्र होता है और न कोई किसी का शत्रु। व्यवहार से (ही) मित्र बनते हैं और व्यवहार से ही शत्रु। आशय यह है कि हम जिससे अच्छा व्यवहार करते हैं, वह मित्र बन जाता है और जिससे अनुचित व्यवहार करते हैं, वह शत्रु हो जाता है।

There is no body friend of anybody, no body enemy of anybody. Behavior makes friend or enemy.

କେହି କାହାରି ମିତ୍ର ନୁହନ୍ତି, କେହି କାହାରି ଶତ୍ରୁ ନୁହନ୍ତି । ବ୍ୟବହାରରୁ ମିତ୍ର ତଥା ଶତ୍ରୁ ଜାତ ହୋଇଥାନ୍ତି ।

सरस्वती स्थिता वक्त्रे लक्ष्मीर्वेश्मनि ते स्थिता।
कीर्तिः किं कुपिता राजन्! केन देशान्तरं गता?।।४०।।

हे नृप, तुम्हारे मुख में सरस्वती स्थित है, तुम्हारे गृह में लक्ष्मी टिकी हुई है। कीर्ति तुमसे रूठ गयी है क्या? दूसरे देश में क्यों चली गयी?

O King, Sarasvati (the goddess of learning) is staying in your mouth, Lakshmi (the goddess of wealth) is staying at your home. Perhaps the fame is annoyed with you. Why has it been to other country?

ହେ ରାଜନ୍, ତୁମର ବାଣୀରେ ସରସ୍ୱତୀ ଅଛନ୍ତି, ଗୃହରେ ଲକ୍ଷ୍ମୀ ଅଛନ୍ତି । କେଉଁ କାରଣରୁ କୀର୍ତ୍ତି କ୍ରୋଧାନ୍ୱିତା ହୋଇ ଭିନ୍ନ ଦେଶକୁ ଗମନ କରିଛି ?

उरसि फणपतिः शिखी ललाटे,
शिरसि विधुः सुरवाहिनी जटायाम् ।

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रियसखि! कथयामि किं रहस्यं,
परमधनस्य रहः शशंस वः ।।४१।।

शिव—हे प्रिय सखि, मेरे सीने पर सर्प है, ललाट में अग्नि रहती है, सिर पर चन्द्रमा है और जटा में गंगा है। कौन सा रहस्य है, जिसे बताऊँ? (पार्वती) हे देव (स्वामी) परम धन का रहस्य बताइये।

O beloved, the king of snake is in the chest, the fire is in the forehead, the moon is in the head, the heavenly river is in the matted hairs. What secret should I speak? The secret of the supreme wealth should be disclosed.

ହେ ପ୍ରିୟସଖି, ବକ୍ଷରେ ନାଗେନ୍ଦ୍ର, ଲଲାଟରେ ଅଗ୍ନି, ମସ୍ତକରେ ଚନ୍ଦ୍ର, ଜଟାରେ ଦେବନଦୀ (ଗଙ୍ଗା), ଏହାର ରହସ୍ୟ କ'ଣ କହିବି । ପରମ ଧନର ରହସ୍ୟ କୁହ ।

दुराशा दुर्दशा चेति द्वे भार्ये मे पतिव्रते।
दुराशा पुरतो याति, दुर्दशा मां न मुञ्चति।।४२।।

मेरी दो पतिव्रता पत्नियाँ हैं। एक दुराशा है और दूसरी दुर्दशा है। दुराशा सामने गतिशील है और दुर्दशा मेरा पिण्ड नहीं छोड़ती।

I have two sincere wives named Durasha and Durdasha. Durasha is running before and Durdasha is not making me free.

ଦୁରାଶା ଓ ଦୁର୍ଦ୍ଦଶା ହେଉଛନ୍ତି ମୋର ଦୁଇ ପତିବ୍ରତା ଭାର୍ଯ୍ୟା । ଦୁରାଶା ଆଗରେ ଚାଲେ, ଦୁର୍ଦ୍ଦଶା ମତେ ଛାଡେ ନାହିଁ ।

दिव्यं चूतरसं पीत्वा, गर्वं नायाति कोकिलः।
पीत्वा कर्दमपानीयं भेको टरटरायते।।४३।।

कोकिल आम्र का दिव्य रस पीकर (भी) गर्व नहीं करता, (ज़ब कि) कीचड़ भरा पानी पीकर मेढ़क टर्र-टर्र करता है।

Drinking the divine juice of mango, the cuckoo does not become proudly. Drinking the muddy and dirty water the frog makes high sound.

ଦିବ୍ୟ ଆମ୍ବରସ ପାନ କରି କୋକିଳ ଗର୍ବିତ ହୋଇ ନ ଥାଏ । କାଦୁଅ ପାଣି ପିଇ ବେଙ୍ଗ ଟର୍ ଟର୍ କରିଥାଏ ।

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जामाता जठरं जाया, जातवेदा जलाशयः।
पूरिता नैव पूर्यन्ते जकाराः पञ्चदुर्लभाः।।४४।।

जामाता (दामाद), जठर (=उदर), जाया (भार्या) जातवेदा (=अग्नि) और जलाशय (=सरोवर) ये पाँच दुर्लभ "ज" पूर्ण किये जाने पर भी पूर्ण नहीं होते हैं।

By giving more and more one cannot fulfill the ambition of five uncommon elements starting with the alphabet Ja like bridegroom (Jamata), Stomach (Jathara), Wife (Jaya), Fire (Jataveda), Reservoir (Jalashaya).

(ଜାମାତା) ଜ୍ୱାଇଁ, (ଜଠର) ଉଦର, (ଜାୟା) ପତ୍ନୀ, (ଜାତବେଦ) ଅଗ୍ନି, (ଜଳାଶୟ)ପୁଷ୍କରିଣୀ, ଏହି ପାଂଚଟି ଅସାମାନ୍ୟ (ଦୁର୍ଲଭ) । କାରଣ ଏହି ଜ'କାର ମାନଙ୍କୁ ପୂରଣ କଲେ ମଧ୍ୟ ପୂରି ନ ଥାନ୍ତି ।

सप्तैतानि न पूर्यन्ते पूर्यमाणान्यनेकशः।
ब्राह्मणोऽग्निः यमो राजा पयोधिरुदरं गृहम्।।४५।।

ब्राह्मण, अग्नि, यम, राजा, समुद्र, उदर और गृह ये सात बार-बार पूर्ण किये जाने पर भी पूर्ण नहीं होते।

By trying to fulfill in many ways, these seven like Brahman, Fire, Yama (the death god). King, Ocean, Stomach and House cannot be fulfilled.

ବ୍ରାହ୍ମଣ, ଅଗ୍ନି, ଯମ, ରାଜା, ସମୁଦ୍ର, ଉଦର ଓ ଗୃହ- ଏହି ସାତଟି ବାରମ୍ବାର ପୂରଣ କରାଗଲେ ମଧ୍ୟ ପୂର୍ଣ୍ଣ ହୋଇ ନ ଥାନ୍ତି ।

सम्पत् सरस्वती सत्यं सन्तानं सदनुग्रहः।
सत्ता सुकृतिसम्भारः सकारास्सप्त दुर्लभाः।।४६।।

सम्पत्ति, सरस्वती, सत्य, सन्तान, सज्जनों का अनुग्रह, सत्ता और पुण्यकोष—ये सात "सकार" दुर्लभ हैं।

Seven things starting with the alphabet Sa like wealth (Sampat), Sarasvati, Truth (Satya), offspring (Santana), well wishes (Sadanugraha), Power (Satta), treasure of good deeds (Sukruta sambhara) are difficult to achieve.

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ସଂପତି, ସରସ୍ୱତୀ, ସତ୍ୟ, ସନ୍ତାନ, ସଜ୍ଜନଙ୍କର ଅନୁଗ୍ରହ, ସତ୍ତା (ଅଧିକାର), ସକୃତ ସମ୍ଭାର (ପୁଣ୍ୟପୁଞ୍ଜ) - ଏହି ସାତଟି ସ'କାର ଦୁର୍ଲଭ ।

कज्जले कमलं भाति, कानने भाति सुस्मितम्।
कपटे चित्रितं भाति, कवि रामे किमद्भुतम्।।४७।।

यह कितना अद्भुत विषय है कि कुजल (पङ्क) में कमल शोभित होता है, जंगल में सुन्दर मुस्कान शोभित होती है, छल में विविध चित्रण शोभित होता है और कवि रामकथा रचना में शोभित होता है।

What a strange that lotus is found in muddy water, innocent smile in the forest, different activities in wicked person and a poet narrating the character of Rama.

ପଙ୍କରେ ପଦ୍ମ ଶୋଭା ପାଏ, ବନରେ ମଧୁର ହାସ୍ୟ ଶୋଭାପାଏ, କୁଟିଳ ଜନଠାରେ ବିବିଧ ବ୍ୟବହାର ଶୋଭାପାଏ, ରାମବିଷୟରେ (ରାମ ବିଷୟକ କାବ୍ୟ ରଚନାରେ) କବି ଶୋଭାପାଏ - ଏହା କି ଅଦ୍ଭୂତ ।

का शम्भुकान्ता किमु नेत्ररम्यं
शुकार्भकः किं कुरुते फलानि ।
मोक्षस्य दाता स्मरणेन को वा
गौरीमुखं चुम्बति वासुदेवः ।।४८।।

शिव की प्रिय पत्नी कौन है? (उत्तर—गौरी=पार्वती), नेत्रों से रम्य कौन है? (उत्तर—मुख), तोते का बच्चा फलों को क्या करता है ? (उत्तर—चूमता है)। स्मरण करने पर कौन मोक्ष-दान करता है? (उत्तर—वासुदेव) । (गौरी मुख चूमता है वासुदेव) (अन्तिम चरण में क्रमशः जो उत्तर दिये गये हैं, चौंकाते हैं। वह यह हे कि गौरी का मुख वासुदेव चूमते हैं।)

Who is the beloved of Shambhu? What brings satisfaction to eyes? What the baby parrot does with fruits? Who gives salvation at a remembrance? Gauri mukham cumbati Vasudevah – These four words are answers to above four questions, which give a wonderful meaning.

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ଶିବଙ୍କର କିଏ ପତ୍ନୀ ? (ଉତ୍ତର = ଗୌରୀ), କ'ଣ ଆଖିକୁ ଭଲ ଲାଗେ ? (ଉତ୍ତର = ମୁଖ), ଶୁକ ଶାବକ ଫଳକୁ କ'ଣ କରେ ? (ଉତ୍ତର = ଚୁମ୍ବନ (ଚଂଚୁସ୍ପର୍ଶ)କରେ), ସ୍ମରଣ ମାତ୍ରକେ ମୋକ୍ଷ ଦାତା କିଏ ? (ଉତ୍ତର = ବାସୁଦେବ), ଗୌରୀ ମୁଖକୁ ବାସୁଦେବ ଚୁମ୍ବନ କରନ୍ତି - ଏହି ଅନ୍ତିମ ବାକ୍ୟ ପ୍ରଥମ ଚାରି ବାକ୍ୟର କ୍ରମଶଃ ଉତ୍ତର ଅଟେ । ଏହା ଅଦ୍‌ଭୁତ ଅର୍ଥ ପ୍ରକାଶ କରୁଥିବାରୁ ଚମତ୍‌କାର, କାରଣ ଗୌରୀମାତା ବାସୁଦେବଙ୍କର ସମ୍ମାନନୀୟ ଅଟନ୍ତି ।

का पाण्डुपत्नी गृहभूषणं किं को रामशत्रुः किमगस्त्यजन्म ।
कस्सूर्यपुत्रः शृणु वैपरीत्ये कुन्तीसुतौ रावणकुम्भकर्णौ।।४९।।

पाण्डु की पत्नी कौन है? उत्तर—कुन्ती। गृह का आभूषण क्या है? उत्तर—पुत्र। राम का शत्रु कौन है? (उत्तर—रावण) अगस्त्य का जन्म जिससे हुआ वह कौन है? उत्तर—कुम्भ। सूर्य का पुत्र कौन है? उत्तर—(कर्ण)! मिलाकर पढ़ने से—कुन्ती पुत्र रावण और कुम्भकर्ण हैं, इसकी विपरीतता के विषय में सुनिये। क्रमशः देखिये—कुन्ती पुत्र-रावण-कुम्भ-कर्ण), जो क्रमशः प्रश्नों का उत्तर हैं।

Who is the wife of Pandu? What is the ornament of a house? Who is the enemy of Rama? From which Agastya took birth? Who is the son of Sun? The answers of these questions are Kunti, Son, Ravana, Kumbha and Karna respectively. This gives a wonderful meaning that Ravan and Kumbhakarna are sons of Kunti. This is a Prahelika.

କିଏ ପାଣ୍ଡୁଙ୍କର ପତ୍ନୀ ? (ଉତ୍ତର = କୁନ୍ତୀ), କ'ଣ ଗୃହର ଭୂଷଣ ? (ଉତ୍ତର =ପୁତ୍ର), କିଏ ରାମଙ୍କର ଶତ୍ରୁ ? (ଉତ୍ତର =ରାବଣ), ଅଗସ୍ତ୍ୟଙ୍କର ଜନ୍ମ କେଉଁଠାରୁ ? (ଉତ୍ତର =କୁମ୍ଭ), କିଏ ସୂର୍ଯ୍ୟଙ୍କର ପୁତ୍ର ? (ଉତ୍ତର =କର୍ଣ୍ଣ) କୁନ୍ତୀ-ପୁତ୍ର-ରାବଣ-କୁମ୍ଭକର୍ଣ୍ଣକୁ ପଶ୍ଚାତ୍ ଜୋଡି ଶୁଣ । (ଏହିସବୁ ପୂର୍ବ ପ୍ରଶ୍ନମାନଙ୍କର ଉତ୍ତର ।)

तैलं तपनताम्बूले तूलिका तप्तभोजनम्।
तप्तवारि तरुणाङ्गी शीते सप्त सुखानि च।।५०।।

तेल (की मालिश), (तपन) ऊष्मा, ताम्बूल, तूल (रुई) सूत वस्त्र, तप्त भोजन, तप्त जल और तरुण अंग वाली वनिता—ये शीत काल के

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सात सुख हैं। यह समस्त शब्द त वर्ण से आरम्भ है। अत: चमत्कार अर्थ प्रदान करता है।

Oil, sun, battle leaf, cotton bed, hot meals, hot water and young lady – these seven things are pleasurable in winter. This is wonderful because all of them start with syllable Ta.

ତେଲ (ତୈଳ), ସୂର୍ଯ୍ୟ (ତପନ), ପାନ (ତାମ୍ବୁଳ), ତୁଳାରେ ପ୍ରସ୍ତୁତ ଶଯ୍ୟା (ତୂଳିକା), ଗରମ ଭୋଜନ, ଗରମ ପାଣି, ତରୁଣୀ- ଶୀତ ଦିନରେ ଏହି ସାତଟି ସୁଖକାରୀ । ଏହି ସାତଗୋଟି ପଦ 'ତ' ବର୍ଣ୍ଣରୁ ଆରମ୍ଭ ।

का त्वं बाले काञ्चनमाला कस्याः पुत्री कनकलतायाः।
हस्ते किं ते तालीपत्रं का वा रेखा काखागाघाः।।५१।।

प्रश्न—हे तरुणी, तुम कौन हो?

उत्तर—मैं कांचनमाला हूँ।

प्रश्न—तुम किसकी बेटी हो?

उत्तर—मैं कनकलता की बेटी हूँ।

प्रश्न—तुम्हारे हाथ में क्या है?

उत्तर—मेरे हाथ में तालपत्र पाथि है।

प्रश्न—यह पंक्ति क्या है?

उत्तर—यह पंक्ति क-ख-ग-घ है।

Q.–Girl, who are you?

Girl–My name is Kanchanamal

Q.–Whose daughter are you?

Girl–I am daughter of Kanakalata

Q.–What is in your hand?

Girl–I have a palm leaf manuscript in my hand.

Q.–What is this line?

Girl–This is the combination of Ka, Kha, Ga and Gha.

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ପ୍ରଶ୍ନ-ହେ ତରୁଣୀ, ତୁମେ କିଏ ?

ଉତ୍ତର -ମୁଁ କାଂଚନମାଳା ଅଟେ ।

ପ୍ରଶ୍ନ-ତୁମେ କାହାର କନ୍ୟା ?

ଉତ୍ତର-ମୁଁ କନକଲତାର କନ୍ୟା ।

ପ୍ରଶ୍ନ-ତୁମର ହାତରେ କ'ଣ ଅଛି ?

ଉତ୍ତର -ତାଳପତ୍ର ।

ପ୍ରଶ୍ନ-ସେଥିରେ ଲେଖା ହୋଇଥିବା ରେଖା (ପଙ୍କ୍ତି) କ'ଣ ?

ଉତ୍ତର -ଏହା କ-ଖ-ଗ-ଘ ର ପଙ୍କ୍ତି ।

का काली? का मधुरा का शीतलवाहिनी गङ्गा ?
कं संजघान कृष्ण? कं बलवन्तं न बाधते शीतम्।।५२।।

(जो प्रश्न है, वही उत्तर है)

प्रश्न—काली क्या है?

उत्तर—काकों की अली अर्थात् कौवों की पङ्क्ति।

प्रश्न—क्या मधुर हैं?

उत्तर—काम मधुर हैं।

प्रश्न—शीतलवाहिनी गङ्गा कहाँ हैं?

उत्तर—काशी के निकट बहनेवाली गङ्गा है।

प्रश्न—कृष्णने किसकी जान ली?

उत्तर—कृष्णने कंस की जान ली।

प्रश्न—वह कौन बली है, जिसे शीत पीड़ा नहीं पहुँचाती?

उत्तर—जो कम्बलधारी है, उन्हें शीत पीड़ा नहीं पहुँचाती।

Q.–What is black?

A.–The line of crows.

Q.–What gives pleasure?

A.–Kama gives pleasure.

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

Q.–Where the River Ganges flows with its cold water?

A.–The River Ganges flows near Kashi.

Q.–To whom Krishna killed?

A.–Krishna killed Kamsa.

Q.–To which strength person does the winter not affect?

A.–The winter does not affect the person having blankets.

ପ୍ରଶ୍ନ-କଳା କ'ଣ ?

ଉତ୍ତର-କାକପଙ୍କ୍ତି ।

ପ୍ରଶ୍ନ-କ'ଣ ମଧୁର ?

ଉତ୍ତର-କାମ

ପ୍ରଶ୍ନ-କୃଷ୍ଣ କାହାକୁ ମାରିଥିଲେ ?

ଉତ୍ତର-କୃଷ୍ଣ କଂସକୁ ମାରିଥିଲେ ।

ପ୍ରଶ୍ନ-ଶୀତଳ ବାହିନୀ (ଶୀତଳ ପ୍ରବାହ ଯୁକ୍ତ) ଗଙ୍ଗା କେଉଁଠାରେ ?

ଉତ୍ତର-କାଶୀ ନିକଟରେ ପ୍ରବାହିତ ହେଉଥିବା ଗଙ୍ଗା ।

ପ୍ରଶ୍ନ-କେଉଁ ବଳବାନ୍‌କୁ ଶୀତ ବାଧେ ନାହିଁ ?

ଉତ୍ତର-କମ୍ବଳଧାରୀଙ୍କୁ ଶୀତ ବାଧେ ନାହିଁ ।

न तस्यादिर्न तस्यान्तः मध्ये यस्तस्य तिष्ठति।
तवाप्यस्ति ममाप्यस्ति यदि जानासि तद्वद।।५३।।

(यह पहेली है।)

उसका न आदि है और न अन्त।

उसके मध्य में य ठहरता है।

वह तुम्हारे पास भी है और मेरे पास भी।।

उत्तर = नयन

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

It starts with Na and ends with na. Ya stays in between. You have this, I have also this. If you know, please tell. Answer-eyes.

ତାହାର ଆଦି ରେ ନ'କାର ଏବଂ ଅନ୍ତରେ ନ'କାର ।

ତାହାର ମଝିରେ (ୟ) ଅଛି ।

ତୁମ ପାଖରେ ଅଛି, ମୋ ପାଖରେ ମଧ୍ୟ ଅଛି ।

ଯଦି ଜାଣିଛ, କୁହ । ଉତ୍ତର - ନୟନ (ଏହା ଏକ ପ୍ରହେଳିକା)

विराटनगरे रम्ये कीचकादुपकीचकम्।
तत्र क्रियापदं वक्तुं हैमं दास्यामि कङ्कणम्।।५४।।

रम्य विराटनगर में कीचक के ऊपर कीचक है। उस विषय में क्रियापद बताने के लिये (बताने पर) मैं सोने का कंगन प्रदान करूँगा। यहाँ पर वि:+आट=विराट क्रिया पद है, जिसका अर्थ है, वि:=पक्षी, आट=घमुती थी (एक बाँस से दूसरे बाँस पर)।

The bamboo is coming out of another bamboo in the beautiful city named Virata. (The verb word is hiding inside). Who will tell the verb, I would give a golden bangle.

ସୁନ୍ଦର ବିରାଟ ନଗରରେ କୀଚକଠାରୁ କୀଚକ ବାହାରିଛି । ସେଠାରେ (ଏହି ବାକ୍ୟରେ) କ୍ରିୟାପଦ କହିଲେ ସୁନାର କଙ୍କଣ ଦେବି ।

पाण्डवानां सभामध्ये दुर्योधनः समीहया।
तस्मै गां च सुवर्णं च सुवर्ण्याभरणानि च।।५५।।

पाण्डवों की सभा के बीच दुर्योधन आ टपका। उसके लिये गाय सुवर्ण और सारे अलंकार दिया। यहाँ मध्ये के पश्चात् अवग्रह लगाने से अदु: क्रिया बन जायेगी। तब अर्थ यह होगा जो धन की इच्छा से आये उन्हें गाय, सुवर्णादि आभरण दिये गये।

Duryodhan entered into the meeting place of Pandavas, who got cow, gold and ornaments. Here there is a verb Aduh and the suggested meaning shall be those who came to the court of Pandavas got cows, gold and ornaments.

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ପାଣ୍ଡବମାନଙ୍କର ସଭା ମଧ୍ୟରେ ଦୁର୍ଯ୍ୟୋଧନ ଆସି ପହଁଚିଲେ । ତାଙ୍କ ନିମନ୍ତେ ଗାଈ, ସୁବର୍ଣ୍ଣ, ସମସ୍ତ ଅଳଙ୍କାର ଦିଆଗଲା । ଏଠାରେ ଅଦୃଷ୍ଟ କ୍ରିୟା ଗୁପ୍ତ ଅଛି । ଏଣୁ ଅର୍ଥ ହେବ- ପାଣ୍ଡବଙ୍କ ସଭାରେ ଯେଉଁମାନେ ଆସିଲେ ସେମାନେ ଉପଯୁକ୍ତ ଦ୍ରବ୍ୟ ପାଇଲେ ।

अस्मानवेहि कलमानलमाहतानां
येषां पुनर्विशदता भवतीह सैव।
स्नेहं विमुच्य सहसा खलतां प्रयान्ति
ये स्वल्पपीडनवशान्न वयं तिलास्ते।।५६।।

हमें वे धान समझिये खूब घेरे जाने पर पीड़ित होने पर भी जिनकी श्रेष्ठता वही रहती है। हम वे तिल नहीं हैं, जो अल्पपीड़न पाने पर स्नेह (=प्रेम, तेल) तजकर एकाएक खल (=खली; नीच) बन जाते हैं।

Know us as strong paddy which does not give its quality though pressed upon. We are not like the sesamum which gives up its oiliness and becomes hard with a little pressure.

ଆମକୁ ସେହି ଧାନ ଜାଣ ଯାହା (ଖୁବ୍) ଅଧିକ ପୀଡିତ ହେବା ପରେ ମଧ୍ୟ ଯାହାଙ୍କର ଶ୍ରେଷ୍ଠତା ସେହିପରି ଥାଏ । ଆମେ ସେହି ରାଶି ନୁହଁ, ଯାହା ଅଳ୍ପ ପେଡା ହେଲେ ହଠାତ୍ ସ୍ନେହ (ପ୍ରେମ, ଚିକ୍‌କଣ) କୁ ଛାଡି ଖଳ ନୀଚ ହୋଇଯାଆନ୍ତି ।

केशवं पतितं दृष्ट्वा पाण्डवा हर्षमाप्नुयुः।
रुदन्ति कौरवास्सर्वे हा हा केशव केशव।।५७।।

केशव को गिरा देखकर पाण्डव हर्षित हो गये। हा हा केशव, केशव, कह कर सभी कौरव रो रहे हैं। (ऊपर वह अर्थ दिया गया है, जो चक्कर में डालने वाला है। सही अर्थ नीचे द्रष्टव्य है।)

जल (क=जल) में लाश पड़ी हुई है, जिसे देखकर गिद्ध हर्षित हो गये । "हाय हाय शव तुम जल में पड़े हो, शव तुम जल में पड़े हो" कह कह कर सियार रो रहे हैं (क्योंकि=सियार पानी के अन्दर प्रवेश कर शव का भक्षण नहीं कर सकते।)।

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

Seeing a dead body in the water, the Pandavas (crow/ vultures) became happy. All Kauravas (jackles) cried shouting O Keshava, O keshava. (Here the meaning of the word Keshava is not Krishna, but ke = in the water, Shava = dead body. Pandavas means vultures and 'Kauravas means jackles. So the inner meaning of this stanza is that seeing the dead body floating in the water, the vultures became happy, as they could eat it by sitting on it. But the jackals cried as they could not enter into the water.)

(କେଶବଂ = କେ ଶବଂ) ଜଳରେ ଶବ ପଡିଥିବାର ଦେଖି (ପାଣ୍ଡୁମାନେ) ଶାଗୁଣାମାନେ ହର୍ଷିତ ହେଲେ । ସମସ୍ତ (କୌରବ) ଶୃଗାଳ କାନ୍ଦିବାକୁ ଲାଗିଲେ, ହାୟ କେଶବ, ହାୟ କେଶବ । (ଜଳରେ ଶବ ଉପରେ ବସି ଶାଗୁଣାମାନେ ଖାଇ ପାରିବେ, ଶୃଗାଳମାନେ ଜଳରେ ପଶି ଖାଇ ପାରିବେ ନାହିଁ । ତେଣୁ ଶାଗୁଣାମାନେ ଖୁସୀ ହେବା ବେଳେ ଶୃଗାଳମାନେ ଦୁଃଖୀ ହେଲେ ।)

नपुंसकमिति ज्ञात्वा, प्रियायै प्रेषितं मनः।
तत्तु तत्रैव रमते, हताः पाणिनिना वयम्।।५८।।

मन नपुंसक (संस्कृत में मन नपुंसक लिंग वाला है) है, यह जानकर हमने उसे अपनी प्रिया के पास भेजा (मन को प्रिया के चिन्तन में लगाया)। किन्तु वह (मन) वही (प्रिया के संग) विहार में लग गया। हाय पाणिनि (संस्कृत व्याकरण रचने वाले विद्वान्) द्वारा हम मारे गये।

Knowing that mind is neuter. I sent, it near my beloved. But it stayed there engaged with her. We are betrayed by Panini. (According to the grammar school of Panini, the mind is in neuter gender. But in practice if attached with somebody, is difficult to withdraw.)

ମନ ନପୁଂସକ ଜାଣି (ପାଣିନି ବ୍ୟାକରଣ ଅନୁସାରେ) ପ୍ରିୟା ପାଖକୁ ପଠାଇଲେ । ତାହା ସେହିଠାରେ ରମଣ କରୁଛି । (ମନକୁ ପ୍ରିୟାର ଚିନ୍ତନରେ ଲଗାଇବାରୁ ତାହା ପ୍ରିୟା ସଙ୍ଗରେ ବିହାର କରିବାକୁ ଲାଗିଲା ଅର୍ଥାତ୍ ପ୍ରିୟା ଚିନ୍ତାରେ ମଗ୍ନ ହୋଇଗଲା । ଏହିପରି ବ୍ୟାକରଣ ରଚନା କରିଥିବା ପାଣିନିଙ୍କ ଦ୍ୱାରା ଆମ୍ଭେମାନେ ପ୍ରତାଡିତ ହେଲୁ ।

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यस्य षष्ठी चतुर्थी च विहस्य च, विहाय च।
अहं यस्य द्वितीया स्यात्, द्वितीया स्यामहं कथम्।।५९।।

कन्या बोल रही है—यो 'विहस्य' को षष्ठी विभक्ति, विहाय को चतुर्थी विभक्ति, 'अहं' को द्वितीया विभक्ति बता रहा है, (अहं) मैं उसका द्वितीया (पत्नी) कैसे बनूँगी?

अध्यापक अपने एक शिष्य से अपनी कन्या का व्याह कराना चाहता था। एक समय वह शिष्य को यह श्लोक पढ़ाने चला। इस श्लोक में आये विहस्य, विहाय, और अहम् क्या हैं, यह अध्यापक ने उस शिष्य से पूछा। शिष्य महामूर्ख था; "बालक" शब्द का रूप आता था जिसके अनुसार उसने उन चार शब्दों की विभक्ति क्रमशः षष्ठी, चतुर्थी, और द्वितीया बताई, जबकि उनका अर्थ क्रमशः मुस्कराकर, छोड़कर, और मैं हैं।

Who is answering that Vihasya (Smiling) is in sixth case sign, Vihaya (giving up) is in forth case sign and Aham (I) is in second case sign, how could I be the second to him. Which means how could I marry such a foolish person?

ଯିଏ ବିହସ୍ୟକୁ ଷଷ୍ଠୀ, ବିହାୟକୁ ଚତୁର୍ଥୀ, ଅହଂକୁ ଦ୍ୱିତୀୟା କହୁଛି ଅର୍ଥାତ୍ ଲ୍ୟପ୍ ପ୍ରତ୍ୟୟର ପ୍ରୟୋଗକୁ ଜାଣି ପାରୁନି, ଅନୁସ୍ୱାର ଦେଖି ଅହଂକୁ ଦ୍ୱିତୀୟା କହୁଛି ଅର୍ଥାତ୍ ବାଳକ ଶବ୍ଦରୂପ ପରି ସମସ୍ତ ରୂପକୁ କହୁଛି, ତା'ର ମୁଁ ଦ୍ୱିତୀୟା ଅର୍ଥାତ୍ ପତ୍ନୀ କିପରି ହେବି ?

(ସ୍ୱୟଂବରରେ ବରର ଜ୍ଞାନର ପରୀକ୍ଷା ନିଆଯାଉଥିଲା ।)

अस्ति कुक्षिः शिरो नास्ति, बाहुरस्ति, निरङ्गुलिः।
अपदो नरभक्षी च, यो जानाति स पण्डितः।।६०।।

(यह पहेली है जिसे समझिये।)

इसका पेट है, सिर नहीं।

भुजा है, पर ऊँगली नहीं।

यह पद-रहित और मनुष्य-भक्षी है।

इसे जो जानता है, वह महान्-बुद्धि वाला है।

उत्तर—सर्ट (कुर्ता)

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

It has belly, but no head. It has hands, but no finger. It has no feet, but swallows human beings, who knows this is a wise person. Answer-Shirt

ପେଟ ଅଛି, (ମସ୍ତକ) ମୁଣ୍ଡ ନାହିଁ । ହାତ ଅଛି, ଆଙ୍ଗୁଳି ନାହିଁ । ପାଦ ନାହିଁ କିନ୍ତୁ ମନୁଷ୍ୟକୁ ଗିଳି ଦେଉଛି । ଏହା ଯିଏ ଜାଣିଛି, ସିଏ ପଣ୍ଡିତ । (ଜାମା = ସାର୍ଟ)

अपदो दूरगामी च, साक्षरो न च पण्डितः।
अमुखः स्फुटवक्ता च, यदि जानासि तद्वद।।६१।।

(यह पहेली है, इसे समझिये।)

यह पद-रहित है, पर दूर तक पहुँचने वाला है।

यह साक्षर है, पर पण्डित नहीं।

यह मुख-रहित है, पर स्पष्टवक्ता है।

यदि तुम इसे जानते हो, तो कहो।

उत्तर—पत्र (चिट्ठी)

It has no feet, but goes far places. It is literate, but not a wise person. It has no face, but expression is very clear. If you know it, please tell. Answer-Letter

ଏହାର ପାଦ ନାହିଁ, କିନ୍ତୁ ବହୁତ ଦୂରକୁ ଯାଇପାରେ । ଅକ୍ଷର ଯୁକ୍ତ, କିନ୍ତୁ ପଣ୍ଡିତ ନୁହଁ । ମୁଖ ନାହିଁ କିନ୍ତୁ ସ୍ପଷ୍ଟ ଭାବରେ ବ୍ୟକ୍ତ କରିଥାଏ । ଯଦି ଜାଣିଛ ତାହା, ତେବେ କୁହ । (ଉତ୍ତର = ଚିଠି)

चूर्णमानीयतां तूर्णं, पूर्णचन्द्रनिभानने।
पर्णानि स्वर्णवर्णानि, कर्णान्तायतलोचने।।६२।।

हे पूर्ण चन्द्र के समान मुख वाली, हे कर्ण तक पहुँचे नेत्रों वाली सुन्दरी, ये पत्ते स्वर्ण के वर्ण वाले हैं।

O beautiful lady with a dazzling face like full moon and long eyes expanded to ears. Please bring golden coloured betel leaves with churna as quick as possible.

ପୂର୍ଣ୍ଣଚନ୍ଦ୍ର ପରି ସୁନ୍ଦରମୁଖୀ; କାନ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ବିସ୍ତୃତ ନେତ୍ରଯୁକ୍ତା, ସ୍ୱର୍ଣ୍ଣବର୍ଣ୍ଣ (ହଳଦିଆ) ଯୁକ୍ତ ପାନ ଓ (ଚୂର୍ଣ୍ଣ) ଚୂନ ଶୀଘ୍ର ଆଣ ।

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

राज्याभिषेके मदविह्वलायाः हस्तच्युतो हेमघटो युवत्याः।
सोपानमार्गे च करोति शब्दं टटं, ट, टं,टं, ट, टटं, टटं, टः ।।६३।।

राज्याभिषेक के समय मद से व्याकुल तरुणी के हाथ से सोने का घड़ा गिर गया। वह सीढ़ी के रास्ते लुढकते हुए टटं टटंटं टटटं ट टं टः शब्द करता है। यह एक समस्यापूर्त्ति है।

During the coronation ceremony, the golden water pot fallen from the hand of a overwhelmed drunken young lady is making sound of Tatam-Ta-Tam-Tam-Ta-Tatam-Tatam-Tah while rolling on the stair cases. This is a Citra Kavya and Samasyapurti.

ରାଜ୍ୟାଭିଷେକ ସମୟରେ ମଦମତ୍ତ ଯୁବତୀର ହାତରୁ ଖସି ଗଡିଥିବା ସୁନାର ଗରା ପାହାଚଶ୍ରେଣୀରେ (ଗଡି ଗଲା ବେଳେ) ଟଟଂ, ଟ, ଟଂ,ଟଂ, ଟ, ଟଟଂ, ଟଃ ଶବ୍ଦ କରୁଛି । ଏହା ଏକ ଚିତ୍ର କାବ୍ୟ ।

जम्बू-फलानि पक्वानि पतन्ति विमले जले।
कपिकम्पितशाखाभ्यो गुलग् गुल-गुलुग् गुलू।।६४।।

बन्दरों के द्वारा जामुन पेड़ को हिलाने से निर्मल जल में गिरने से "गुलुग् गुल-गुलुग् गुलू" शब्द होता है। यह एक समस्यापूर्त्ति है।

The ripe black-berries from the branches, shaked by monkeys are falling in clean water, making sound as Gulag-Gul-Gulug-Gulu. This is a Samasyapurti.

ମାଙ୍କଡ ହଲାଉଥିବା ଡାଳରୁ ପାଚିଥିବା ଜାମୁକୋଳି ଗୁଳଲୁ-ଗୁଳ-ଗୁଳୁଲୁ-ଗୁଳୁ ଶବ୍ଦ କରି ନିର୍ମଳ ଜଳରେ ପଡୁଛି ?

ଏହା ଏକ ସମସ୍ୟାପୂର୍ତ୍ତି ।

वने वसति को वीरो चास्थिमांसविवर्जितः।
असिवत्कुरुते कार्यं कार्यं कृत्वा वनं गतः।।६५।।

प्रश्न—हड्डी और माँस से रहित कौन वीर (जंगल) में रहता है, जो तलवार की तरह कार्य करता है और कार्य करके वन में पहुँच जाता है?

उत्तर—कुलालसूत्र।

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

Who is that brave person staying in the forest without bone and flesh. Works like a sword and after the work goes to the forest. The answer Thread of a potter. Here the meaning Vana means water. After pot is created the thread detaches it from the clay and remains in the water.

ଅସ୍ଥି ଓ ମାଂସ ବିହୀନ କେଉଁ ବୀର ବନରେ ବାସ କରୁଛି ? ଖଡ୍‌ଗ ପରି କାମ କରୁଛି ଓ କାମ କରି ସାରି ବନକୁ ଯାଉଛି । (ଉତ୍ତର - କୁମ୍ଭାରର ସୂତା) ଏଠାରେ ବନର ଅର୍ଥ ଜଳ ।

खचरस्य सुतस्य सुतः खचरो
जननी खचरी न पिता खचरः।
खचरस्य सुतेन हतः खचरो
खचरी परिरोदिति हा खचरः।।६६।।

खचर:=पवन:, खचरस्य सुत:=भीम:, खचर सुतस्य सुत:=घटोत्कच:, खचरी जननी=हिडिम्बा, (ख=आकाश। खचर=आकाश में चलने वाला। खचरी=आकाश में चलने वाली। खचर के पुत्र का पुत्र (=पौत्र) खचर है। माता खचरी है (पर); पिता खचर नहीं है। खचर के पुत्र ने खचर का वध किया। (जिससे) खचरी "हाय खचर" कहती हुई रुदन करती है।

The son of a son of a middle region is Khacara. The mother is Khacari and the father is not Khacara. The son who is a khacara was killed by a Khacara. The mother is weeping on Khacara.

Here the meaning of Khacara is - Kha means sky, one who can fly is a khacara. The god-wind, the father of Bhima is a Khacara. Wife Hidimba being a demoness is a Khacari. The son being a demon is a Khacara. Karna who killed Ghatotkaca is the son of sun god who is also Khacara.

ଖଚର (ଖଚର = ଆକାଶରେ ଯାଉଥିବା ପବନ)ଙ୍କର ପୁତ୍ରର (ଭୀମର) ପୁତ୍ର (ଘଟୋତ୍କଚ) ଖଚର । ତା'ର ମାତା (ରାକ୍ଷସୀ) ମଧ୍ୟ ଖଚରୀ, ପିତା ଖଚର ନୁହନ୍ତି ।

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ଖଚର ଖ-ଆକାଶ, ଅର୍ଥାତ୍ ଆକାଶରେ ସୂର୍ଯ୍ୟ ବିଚରଣ କରନ୍ତି । ଖଚର ପୁତ୍ରଦ୍ୱାରା (ସୂର୍ଯ୍ୟପୁତ୍ର କର୍ଣ୍ଣ) ଖଚର ଘଟୋତ୍କଚ ମରାଗଲା । ଖଚରୀ ହିଡିମ୍ବା ପୁତ୍ର ବିୟୋଗରେ କାନ୍ଦୁଛନ୍ତି ।

चक्री त्रिशूली न हरो न विष्णुः,
महाबलिष्ठो न च भीमसेनः ।
स्वच्छन्दचारी, नृपतिर्न योगी,
सीतावियोगी न च रामचन्द्रः ।।६७।।

वह चक्रधर और त्रिशूलधर है, पर न तो विष्णु है और न शंकर। वह महाबलवान् है, पर भीमसेन नहीं है। वह स्वच्छन्द घूमने वाला है, पर न तो राजा है और न योगी। वह सीता से वियुक्त है, पर रामचन्द्र नहीं हैं।

It is which has a sign of wheel and trident, but not Vishnu or Hara (Shiva). It is strong, but not Bhimasena. It is free to move, but it is not a King or a Saint. It is separated from Sita (the queen/plough), but he is not Ramachandra. Answer is a Bull.

ସେ ଚକ୍ରଧାରୀ, ସେ ତ୍ରିଶୂଳଧାରୀ । କିନ୍ତୁ ସେ ବିଷ୍ଣୁ ନୁହନ୍ତି କି ଶିବ ନୁହନ୍ତି । ବହୁତ ବଳୁଆ, କିନ୍ତୁ ଭୀମସେନ ନୁହନ୍ତି । ସ୍ୱେଚ୍ଛାରେ ବୁଲନ୍ତି । କିନ୍ତୁ ରାଜା ନୁହନ୍ତି କି ଯୋଗୀ ନୁହନ୍ତି । ସୀତା (ଲଙ୍ଗଳ) ବିୟୋଗୀ, କିନ୍ତୁ ରାମଚନ୍ଦ୍ର ନୁହନ୍ତି । ଉତ୍ତର - (ବୃଷଭ)

वने जाता वने त्यक्ता, वने तिष्ठति नित्यशः।
पण्यस्त्री न तु सा वेश्या, यो जानाति स पण्डितः।।६८।।

वह नारी वन में पैदा हुई और वन में छोड़ दी गई, वन में ही हमेशा ठहरती है। वह बाजार में स्थित स्त्री है अर्थात् पैसे से मिलने वाली है, पर वेश्या नहीं है, इसे जो जानता है, वह विशेषज्ञानी है।

उत्तर—नौका

She who took birth in the forest, left in the water. Lives in the water always. She is worth buying, but not a prostitute. Who knows her is a wise person. (Boat) Here the meaning vana is water and forest.

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ସେ ବନରେ ଜନ୍ମ, ବନରେ ଛାଡି ଦିଆଯାଇଛି, ସର୍ବଦା ବନରେ ହିଁ ରହେ। ପଇସାଦ୍ୱାରା ପ୍ରାପ୍ତ ସ୍ତ୍ରୀ, କିନ୍ତୁ ସେ ବେଶ୍ୟା ନୁହେଁ । ଯିଏ ଜାଣିଛି, ସିଏ ପଣ୍ଡିତ। (ନୌକା)

कस्तूरी जायते कस्मात्, को हन्ति करिणां कुलम्।
किं कुर्यात् कातरो युद्धे, मृगात् सिंहः पलायते।।६९।।

प्रश्न—कस्तूरी किससे पैदा होती है?

प्रश्न—वह कौन है, जो हाथियों के कुल को मार डालता है ?

प्रश्न—कायर युद्ध में क्या करता है?

प्रश्न—पशु (के सामने) से सिंह भाग जाता है।

अन्तिम चरण एक वाक्य दिखता है, पर वह ऊपर के तीन प्रश्नों का क्रमशः उत्तर है मृग से, सिंह, पलायन कर जाता है।

Where does the musk born? Who kills the race of elephants? What does a coward do in the battle? The lion runs away from a deer. (From the Deer, Lion and runs away are the answers of above questions.) This is a Samasyapurti.

କସ୍ତୁରୀ କାହାଠାରୁ ଉତ୍ପନ୍ନ ହୁଏ। (ମୃଗଠାରୁ)

କିଏ ହାତୀକୁଳକୁ ମାରିଥାଏ। (ସିଂହ)

ଡରୁଆ ଯୁଦ୍ଧରେ କ'ଣ କରିଥାଏ। (ପଳାଇଥାଏ)

ମୃଗଠାରୁ ସିଂହ ପଳାଇଥାଏ-ଏହି ଚତୁର୍ଥ ବାକ୍ୟ କ୍ରମଶଃ ଉପର୍ଯ୍ୟୁକ୍ତ ବାକ୍ୟଗୁଡିକର ଉତ୍ତର। ଉତ୍ତରମାନଙ୍କୁ ଯୋଡି ଅର୍ଥ କଲେ ଚମତ୍କାର ପ୍ରତୀତ ହୋଇଛି।

काकाल्लौल्यं यमात् क्रौर्यं स्थपतेः दृढघातिताम्।
एकैकाक्षरमादाय कायस्थः केन निर्मितः।।७०।।

(काक=) कौवे से चंचलता, यमराज से क्रूरता, स्थपति (=बढ़ई) से दृढ़ घातक होना। इनके (प्रथम) एक-एक अक्षर लेकर किसने कायस्थ की सृष्टि की।

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

From the crow, Yama and carpenter having the qualities of frickleness, cruelty and strong strike respectively, who has created the (kayastha) by taking one one letter from each word kaka, yama and stapati.

କାକ ଠାରୁ ଚଂଚକତା, ଯମଠାରୁ (ନିର୍ଦ୍ଦୟତା) କ୍ରୁରତା, (ସ୍ଥପତି) ବଢେଇଠାରୁ କଠୋର ଘାତକ ହେବା, ଗୋଟିଏ ଗୋଟିଏ ଅକ୍ଷରକୁ ନେଇ କିଏ କାୟସ୍ଥକୁ ନିର୍ମାଣ କରିଛି ।

(କାକ, ଯମ, ସ୍ଥପତି = ପ୍ରତ୍ୟେକ ପଦର ପ୍ରଥମ ଅକ୍ଷରକୁ ମିଶାଇଲେ କାୟସ୍ଥ ଶବ୍ଦ ସୃଷ୍ଟି ହୋଇଛି ।)

कर्पदादुल्लस्य प्रणयमिलिदर्धाङ्गयुवतेः
पुरारेः प्रेङ्खन्त्यो मृदुलतरसीमन्तसरणौ।
भवान्या सापत्न्यस्फुरितनयनं कोमलरुचा
करेणाक्षिप्तासौ जननि! विजयन्तां लहरयः।।७१।।

हे जननी! आपके लहरी के समूह का विजय हो, जो शिवजी के मृदुल सीमन्तसरणीसे नीचे की ओर प्रवाहित हो कर उनके अर्धांग के रूप में वामभाग में अवस्थिता पार्वती के द्वारा सापत्न्यजनीत ईर्ष्या के कारण रोषस्फुटित नयन से कोमल हस्त से आक्षिप्त हो रहा है।

O Mother! may your waves be victorious-waves, which are surging out of the matted hairs of Shiva whose half of the body, owing to love, is mingled with femine counterpart, and flowing through the soft simanta path are warded off by Parvati with her tender hand, with eyes quivering with annoyance of rivalry.

ହେ ଜନନୀ ! ତୁମର ଲହରୀସମୂହର ବିଜୟ ହେଉ ଯାହା ଶିବଙ୍କର ମୃଦୁଳ ସୀମନ୍ତସରଣୀରୁ ତଳଭାଗକୁ ପ୍ରବାହିତ ହୋଇ ତାଙ୍କ ଅର୍ଧାଙ୍ଗରୂପେ ବାମ ଭାଗରେ ଥିବା ପାର୍ବତୀଙ୍କ ଦ୍ୱାରା (ସାପତ୍ନ୍ୟଜନିତ ଈର୍ଷ୍ୟାରୁ) ରୋଷସ୍ଫୁରିତ ନୟନରେ କୋମଳ ହସ୍ତରେ ଆକ୍ଷିପ୍ତ ହେଉଅଛି ।

नैर्गुण्यमेव साधीयो, धिगस्तु गुणगौरवम्।
शाखिनोऽन्ये विराजन्ते, खण्ड्यन्ते चन्दनद्रुमाः।।७२।।

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गुण-रहित होना भला है। गुणों के गौरव के प्रति धिक्कार हो। चन्दनवृक्ष से इतर वृक्ष (तो) शोभित होते हैं और चन्दन के वृक्ष काट दिये जाते हैं।

It is better to be of less qualities than having more qualities. Other trees are found in forest well grown but the sandlewoods are cut off.

ନିର୍ଗୁଣ ହେବା ଭଲ, ଅଧିକ ଗୁଣଯୁକ୍ତ ହେବାକୁ ଧିକ୍‌କାର । ଅନ୍ୟ ବୃକ୍ଷମାନେ ଶୋଭା ପାଉଛନ୍ତି (ଅଛନ୍ତି); ଚନ୍ଦନବୃକ୍ଷ କଟା ହେଉଛନ୍ତି ।

वाणिज्येन गतः स मे गृहपतिर्वार्तापि न श्रूयते
प्रातस्तज्जननी प्रसूततनयाजामातृगेहं गता।
बालाहं नवयौवना निशि कथं स्थातव्यमस्मद्गृहे
सायं संप्रति वर्तते पथिक हे स्थानान्तरं गम्यताम्।।७३।।

वाणिज्य करने हेतु मेरे स्वामी परदेश गये हैं, जिनकी कोई खबर नहीं है। ननंद को बच्चा होने के कारण सास आज सुबह उसके घर चली गई हैं, मैं बाला और नवयौवना हूँ। अत: हे पथिक! आप कैसे मेरे घर में रह सकते हैं। अभी शाम हो रही है, अत: अन्यत्र जा कर ठहरो । प्रकारान्तर से इस पद्य में नायिका स्वयं दूती है। पथिक को अपने आवास पर ठहरने हेतु निमन्त्रण करती है। प्रत्येक चरण नास्ति वाचक शब्द अस्ति वाचक बन जाती है। अर्थात् पति का परदेश में होना, सास का ननद के घर में होना, स्वयं को नवयौवना बताकर उपभोग्य क्षमा बताना पथिक को अपने वहाँ ठहरने हेतु निमन्त्रण मात्र है। अत: यहाँ व्यङ्ग्यातिशय होने से उत्तम काव्य का उदाहरण है।

My husband has gone in business work, no message is heard. His mother in the morning, went to her son-in-law's house to attend the daughter who has given birth in the morning. I am teen aged and full of youth. How could you stay in my house at night? O traveller, now it is evening, go to another place. (In this verse the lady is indirectly inviting the youth to stay at night.)

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ବାଣିଜ୍ୟ (ବ୍ୟବସାୟ) କରିବା ନିମନ୍ତେ ମୋର ପତି ଯାଇଛନ୍ତି, ଯାହାର କୌଣସି ଖବର ନାହିଁ । ସକାଳେ ତାଙ୍କର ମାତା (ଶାଶୁ) ଝିଅ (ନଣନ୍ଦ) ପ୍ରସବ କରିଥିବାରୁ ଭାଇଙ୍କର ଘରକୁ ଯାଇଛନ୍ତି । ମୁଁ ଅଳ୍ପବୟସ୍କା ଓ ନବଯୌବନା, ତେଣୁ ରାତିରେ ଆମ ଘରେ କିପରି ରହିବ ? ହେ ପଥିକ, ଏବେ ସନ୍ଧ୍ୟା ସମୟ, ଅନ୍ୟ ସ୍ଥାନକୁ ଯାଅ ।

(ଏହି ପଦ୍ୟରେ ନାୟିକା ସ୍ୱୟଂ ଦୂତୀ । ପଥିକକୁ ନିଜ ଘରେ ରହିବା ନିମନ୍ତେ ଆମନ୍ତ୍ରଣ କରୁଛି । ପ୍ରତ୍ୟେକ ଚରଣର ନାସ୍ତିବାଚକ ପଦ ଅସ୍ତିବାଚକ ଅର୍ଥକୁ ବତାଉଛି । ଅର୍ଥାତ୍ ପତି ବିଦେଶରେ ହେବା, ଶାଶୁ ନଣନ୍ଦ ଘରକୁ ଯିବା, ସ୍ୱୟଂ ନବଯୌବନା ହୋଇଥିବାରୁ ଉପଭୋଗ ଯୋଗ୍ୟା କହି ପଥିକକୁ ନିଜ ଘରେ ରହିବା ନିମନ୍ତେ ଆମନ୍ତ୍ରଣ କରୁଛି । ବ୍ୟଙ୍ଗାତିଶୟ ହୋଇଥିବାରୁ ଏହା ଉତ୍ତମ କାବ୍ୟ ଅଟେ ।)

दारिद्र्याद् ह्रियमेति ह्रीपरिगतः प्रभ्रश्यते तेजसः
निस्तेजाः परिभूयते परिभवा न्निर्वेदमापद्यते।
निर्विण्णः शुचमेति शोकपिहितो बुद्ध्या परित्यज्यते
निर्बुद्धिः क्षयमेत्यहो निधनता सर्वापदामास्पदम्।।७४।।

मानव दरिद्रता से लज्जित होता है। लज्जा से घिरने पर तेज से च्युत होता है। तेजरहित होने से परिभव (दबाव)ग्रस्त होता है। परिभव से वैराग्य की प्राप्ति करता है। विरक्त शोक का शिकार होता है। शोक से बद्ध होकर बुद्धि द्वारा त्याग दिया जाता है, बुद्धि रहित व्यक्ति नाश के वशीभूत होता है। इससे सिद्ध होता है कि गरीबी सारी विपत्तियों का घर है।

Person feels shame due to poverty. Shameness decreases the strength. The strengthless is surrounded by thoughts. Over thinking brings frustration. Frustrated person becomes narrow minded. Intellect gives up a sorrowful person. One meets down fall without intellect. So the poverty is the cause of all calamities.

ମାନବ ଦରିଦ୍ରତା ହେତୁ ଲଜ୍ଜିତ ହୋଇଥାଏ । ଲଜ୍ଜାର ବଶୀଭୂତ ହୋଇ ତେଜହୀନ ହୋଇଥାଏ । ତେଜହୀନ ହେବାରୁ ପରିଭବ (ଚିନ୍ତାଗ୍ରସ୍ତ) କୁ ପ୍ରାପ୍ତ ହୁଏ । ପରିଭବରୁ ବୈରାଗ୍ୟକୁ ପ୍ରାପ୍ତ ହୋଇଥାଏ । ବୈରାଗୀ ଶୋକଗ୍ରସ୍ତ ହୁଏ । ଶୋକରେ ଆଚ୍ଛାଦିତକୁ ବୁଦ୍ଧି ତ୍ୟାଗ କରେ । ବୁଦ୍ଧିହୀନ ନାଶକୁ ପ୍ରାପ୍ତ ହୋଇଥାଏ । (ଏଥିରୁ ସ୍ପଷ୍ଟ ଯେ ନିର୍ଧନତା ସବୁ ବିପତ୍ତିର କାରଣ ।)

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वनानि दहतो वह्नेः सखा भवति मारुतः।
स एव दीप नाशाय, सखे कुत्रास्ति सौहृदम्।।७५।।

वायु जंगल जलाते हुये आग का मित्र बन जाता है। वही दीपक को बुझाता है। भाई-सौहार्द कहाँ है?

Wind becomes friend of fire while burning the forests. The same extinguishes the candle. O friend, where is the friendship?

ବଣକୁ ଜଳାଉଥିବା ଅଗ୍ନିର ସଖା (ସହାୟକ) ପବନ ହୋଇଥାଏ । ସେ ହିଁ ଦୀପକୁ ଲିଭାଇଥାଏ । ହେ ମିତ୍ର, ବନ୍ଧୁତା କେଉଁଠାରେ ଅଛି ?

अङ्कं, केऽपि शशङ्किरे, जलनिधेः पङ्कं परे मेनिरे
सारङ्गं कतिचिच्च, सञ्जगदिरे, भूच्छायमैच्छन् परे।
इन्दौ यद्वलितेन्द्रनीलशकला श्यामा दरीदृश्यते
तत्सान्द्रं निशि पीतमन्धतमसं कुक्षिस्थमाचक्ष्महे।।७६।।

चन्द्रमा में लिपटा जो नीलम का काला भाग बार-बार दिखता है, उसे कुछ लोग चन्द्रमा का कलंक है, यह सन्देह किया करते हैं। उसे अन्य लोगों ने समुद्र का कीचड़ (जो समुद्र-मन्थन के समय निकले हुये चन्द्रमा के साथ आया था) माना। कुछ ने उसे चन्द्रमा में हिरन है, यह कहा। उसे हम रात में पी लिये गये घोर और गाढ़ अन्धकार पेट में स्थित है, यह कहते हैं।

The deep dark spot seen in the moon prominently is described in many ways. Some doubt that it is a black spot. Some thought that it is the mud of ocean. Some told that it is a deer. Others thought it as the shadow of earth. We tell that it is the deep darkness of night, drunken by moon stored in the stomach.

ଚନ୍ଦ୍ରମାରେ ଯେଉଁ କଳା ଚିହ୍ନ ଦେଖାଯାଉଚି, ତାହାକୁ କେହି କଳଙ୍କ ବୋଲି ଶଙ୍କା କଲେ, ଅନ୍ୟ କେହି ସମୁଦ୍ରର ପଙ୍କ ବୋଲି ମାନିଲେ (ସମୁଦ୍ର ମନ୍ଥନ ସମୟରେ ଚନ୍ଦ୍ରମା ସହିତ ପଙ୍କ ଲାଗି ଯାଇଥିଲା ବୋଲି ଭାବିଲେ ।) କେତେକ ତାହାକୁ ହରିଣ ବୋଲି କହିଲେ । ଅନ୍ୟ କେହି ତାକୁ ପୃଥିବୀର ଛାଇ (ଛାୟା) ବୋଲି ଚିନ୍ତା କଲେ । ଆମେ ତାହାକୁ ଚନ୍ଦ୍ର ଦ୍ୱାରା ରାତିରେ ପିଇ ଯାଇଥିବା ଗାଢ଼ ଅନ୍ଧକାର ପେଟରେ ସ୍ଥିତ ବୋଲି କହୁଛୁ ।

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रामाश्लिष्टवपुर्निधिर्भवति मे, नूनं मदीयैव तत्
वारिधेर्लङ्घनमत्र नास्त्यतिशयो तीर्णोऽसि मद्वर्चसा।
लङ्कानिर्दहनं सुरारिहननं शौर्याणि वै मत्पतेः।
इत्थं ह्रीकुसुमैर्विवर्धितहनुः पायाद् हनूमान् सर्वदा।।७७।।

राम द्वारा आलिंगित मेरा शरीर मेरी निधि है। निश्चित रूप से वह निधि मेरी ही है। समुद्र को लाँघ देना इस समय अतिशययुक्त कार्य नहीं है। मेरे तेज से (प्रभु के) उसे पार कर लिया है। लङ्का को भली-भाँति फूँक देना और राक्षसों को मार डालना निश्चय ही मेरे स्वामी का (ही) शौर्य है (मेरा शौर्य नहीं) इस प्रकार लज्जारूपी पुष्पों से जिनकी दाढ़ फूल गई है, वे हनुमान् सदा रक्षा करें।

The body embraced by Rama is my treasure, certainly it is my treasure. To cross the ocean is not redundant, as it was done with his order. Burning of Lanka and killing of demons are all valour of my master. Hanuman, whose jaw is widened with all these obliged flowers of shame may protect always.

ରାମଙ୍କର ଆଶ୍ଳେଷ ପ୍ରାପ୍ତ ମୋର ଶରୀର ନିଧି ଅଟେ, ନିଶ୍ଚୟ ତାହା ମୋର ହିଁ ଅଟେ । ସମୁଦ୍ରକୁ ଲଙ୍ଘନ କରିବା ଏଠାରେ ଅତିଶୟୋକ୍ତି ନୁହେଁ, ମୋର ପ୍ରଭୁଙ୍କ ଦ୍ୱାରା ପାର କରିଛି । ଲଙ୍କାକୁ ଧ୍ୱଂସ (ଦହନ) କରିବା, ରାକ୍ଷସଙ୍କୁ ମାରିବା, ସମସ୍ତ ହେଉଛି ମୋର ସ୍ୱାମୀଙ୍କର ବୀରତା । ଏହିପରି ଲଜ୍ଜା କୁସୁମରେ ଯାହାଙ୍କର ହନୁ ଫୁଲି ଯାଇଛି, (ସେହି) ହନୁମାନ୍ ସଦା ରକ୍ଷା କରନ୍ତୁ ।

गीर्भिर्गुरूणां परुषाक्षराभिः,
तिरस्कृता यान्ति नरा महत्त्वम्।
अलब्धशाणोत्कषणान्नृपाणां
न जातु मौलौ मणयो वसन्ति ।।७८।।

गुरुजनों की कठोर वर्णों वाली वाणियों से तिरस्कृत होने वाले लोग (ही) महान् दशा को प्राप्त करते हैं। वे मणियाँ जो सान से घिसना (घिसने का सौभाग्य) प्राप्त कर नहीं सकी हैं, वे कभी (भी) नृपों के मस्तक पर बसने का सौभाग्यवाली नहीं होती हैं।

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

The persons scolded by elders with strong words deserve respect. The precious stones, not polished by instrument, are not used in the crown of Kings.

ଗୁରୁଜନମାନଙ୍କର କଠୋର ବର୍ଣ୍ଣଯୁକ୍ତ ବାଣୀଦ୍ୱାରା ତିରସ୍କୃତ ବ୍ୟକ୍ତି ସମ୍ମାନନୀୟ ହୋଇଥାନ୍ତି । ଶାଣଦ୍ୱାରା ଉତ୍କର୍ଷତାକୁ ପ୍ରାପ୍ତକରି ନ ଥିବା ମଣି ରାଜାମାନଙ୍କର ମୁକୁଟରେ ସ୍ଥାନ ପାଇ ନ ଥାନ୍ତି ।

भिक्षो मांसनिषेवणं किमुचितं? किं तेन मद्यं विना?
मद्यं चापि तव प्रियं? प्रियमहो वाराङ्गनाभिस्सह।
वारस्त्रीरतये कुतस्तव धनं? द्यूतेन चौर्येण वा
चौर्यद्यूतपरिश्रमोऽस्ति भवतो? नष्टस्य कान्या गतिः।।७९।।

भिक्षुक से कोई कह रहा है कि हे भिखारी, क्या माँस का सेवन करना उचित है? यह प्रश्न सुनकर भिखारी बोला कि शराब के बिना उसका मज्जा क्या है? दारू भी तुम्हें प्रिय है क्या? अरे वह वेश्याओं के साथ (ही) प्रिय है । वेश्या के प्रति रति के लिये तुम्हारे पास धन कहाँ से आता है? वह धन जुआ खेलने या चोरी से प्राप्त होता है। चोरी और जुआ खेलना तुम्हारा काम है? जो नष्ट हो गया है, उसकी अन्य गति क्या है?

Is it proper for a beggar to eat meat? What is that without wine? Is the wine your favourite? It is favourite while taking with prostitutes. Where do you arrange money to enjoy wine and courtesan? By gambling or theft. Is theft or gambling your work? What can other be the manner of a fainted person?

ଭିକ୍ଷୁକ କ'ଣ ମାଂସ ଭୋଜନ କରିବା ଉଚିତ ?

- ମଦ୍ୟ ବିନା ସେଥିରୁ କ'ଣ ଲାଭ ?

- ମଦ୍ୟ ମଧ୍ୟ ତୁମର ପ୍ରିୟ ?

- ତାହା ବେଶ୍ୟାମାନଙ୍କ ସହିତ ପ୍ରିୟ ।

- ମଦ୍ୟ ଏବଂ ବେଶ୍ୟା ପ୍ରେମ ପାଇଁ ତୁମ ପାଖରେ ଧନ କେଉଁଠାରୁ ଆସୁଛି ?

- ଜୁଆ ଖେଳିକି ନ ହେଲେ ଚୋରି କରିକି ।

- ଚୋରି ଏବଂ ଜୁଆଖେଳରେ ମଧ୍ୟ ଶ୍ରମ କରୁଛ ?

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

– ନଷ୍ଟ ହେବାକୁ ଚାହୁଁଥିବା ବ୍ୟକ୍ତିର କ'ଣ ଆଉ ଅନ୍ୟ ଗତି ହେବ ? (ଅନ୍ତିମ ପଙ୍‌କ୍ତି ଏକ ସମସ୍ୟାପୂର୍ତ୍ତି)

अनुरागवती सन्ध्या दिवसस्तत्पुरस्सरः।
अहो दैवगतिश्चित्रा तथापि न समागमः।।८०।।

सन्ध्या अनुरागिणी है और उसके आगे-आगे दिवस है। अरे भाग्य की दशा विचित्र है। फिर भी मिलन नहीं होता।

The evening is desirous downgraded for union with her lover i.e. Day. The day is going ahead. What a strange of the arrangement of fate, yet there is no union.

ସନ୍ଧ୍ୟା ଦିବସ ପ୍ରତି ଅନୁରାଗବତୀ, ଦିବସ ତା'ର ଆଗେ ଆଗେ । ଆହା, ଦୈବର ଗତି କି ବିଚିତ୍ର ଅଟେ, ତଥାପି ସମାଗମ ହେଉନାହିଁ ।

वृक्षाग्रवासी न च पक्षिराजः,
त्रिनेत्रधारी न च शूलपाणिः।
जलं धरित्री न घटो न मेघः
त्वग्वस्त्रधारी न यतिः, न शम्भुः ।।८१।।

वह पेड़ के ऊपर निवास करता है, पर गरुड़ नहीं है। वह तीन नेत्र धारण करता है, पर शिव नहीं है। वह जल धारण करता है, पर न घड़ा है और न बादल है। वह पेड़ की छाल वस्त्र के रूप में धारण करता है, पर न संन्यासी है, और न शंकर (ही) है। (नारियल फल)

Stays at the top of a tree, but not a vulture. Bears three eyes, but not Shulapani (Shiva), carries water, but not a pot or cloud. Wears clothes of skin, but not a saint or Shambhu (Shiva).

A.–Coconut.

ବୃକ୍ଷର ଅଗ୍ର ଭାଗରେ ବାସ କରେ, କିନ୍ତୁ ପକ୍ଷିରାଜ ଗରୁଡ ନୁହେଁ । ତିନୋଟି ଆଖି ଧାରଣ କରିଛି, କିନ୍ତୁ ଶୂଳପାଣି ଶିବ ନୁହନ୍ତି । ଜଳକୁ ଧାରଣ କରିଛି, କିନ୍ତୁ ଘଟ ନୁହେଁ କି ମେଘ ନୁହେଁ । ବଲ୍‌କଳ ଧାରୀ, କିନ୍ତୁ ଯତି ନୁହେଁ କି ଶମ୍ଭୁ ନୁହେଁ । ଉତ୍ତର – ନାରିକେଳ । ଏହା ଏକ ପ୍ରହେଳିକା ।

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अनेकशतभाण्डानि, भिन्नानि मम मस्तके।
अहो भाग्यवती नारी! भाण्डमूल्यं न याचते।।८२।।

मेरे मस्तक में विविध रूप वाले पात्र सैकड़ों में (पाये) जाते हैं। आश्चर्य है कि भाग्यवती नारी पात्रों के मूल्य की याचना नहीं करती।

Hundreds of pots are broken on my head. Oh fortunate lady, (she) is not asking the value of the pots.

ମୋର ମସ୍ତକରେ ଶହ ଶହ ସଂଖ୍ୟାର ପାତ୍ର ଭଙ୍ଗା ଯାଇଛି । ଅହୋ ଭାଗ୍ୟବତୀ ନାରୀ, ପାତ୍ରର ମୂଲ୍ୟ ମାଗୁ ନାହାଁନ୍ତି ।

अद्य धारा निराधारा, निरालम्बा सरस्वती।
पण्डिताः खण्डितास्सर्वे भोजराजे दिवङ्गते।।८३।।

राजा भोज के स्वर्ग चले जाने पर धारा (नामक नगरी) आधार-हीन हो गई है, सरस्वती का सहारा छिन गया है। सभी विशिष्ट विद्वान् खण्डित हो गये हैं। कालिदास के भोज का हाल पूछने पर राजा भोज ने तब कहा था कि मेरी मृत्यु होने पर क्या होगा, तब कालिदास इस बुरी बात से गुस्सा होकर दूर चले गये थे। संयोग से एक दिन संन्यासी का वेश धारण कर भोज कालिदास को पा गये और कालिदास ने उनसे पूछा कि राजा भोज का हाल समाचार क्या है? तब संन्यासी वेशधारी भोज ने कहा कि भोज तो मर गये। यह सुनकर कालिदास विदीर्ण होकर उक्त श्लोक कह उठे। फिर गौर से देखने पर पहचान गये कि ये भोज ही हैं "जिन्होंने संन्यासी का वेश धारण कर ठगा है। तब उनके मुख से निम्न श्लोक निकला।

When the King Bhoja went to the heaven, today the city named Dhara is unprocted. Goddess Sarasvati is shelterless and all the learned persons are neglected.

ଭୋଜରାଜା ସ୍ୱର୍ଗକୁ ଚାଲିଯିବା ପରେ ଆଜି ଧାରା ନଗରୀ ଆଧାର ହୀନ । ସରସ୍ୱତୀ ଆଶ୍ରୟହୀନା, ସମସ୍ତ ପଣ୍ଡିତ ଖଣ୍ଡିତ ହୋଇ ଶ୍ରୀହୀନ ହୋଇ ଯାଇଛନ୍ତି ।

अद्य धारा सदाधारा सदालम्बा सरस्वती।
पण्डिता मण्डिताः सर्वे भोजराजे भुवं गते।।८४।।

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

राजा भोज के भुवन में आने पर अब धारा (नामक नगरी) सदा आधारधारी हो गई है, सरस्वती को नित्य आधार मिल गया है और सारे विशिष्ट विद्वान् मण्डित (शोभित) हो गये हैं।

When the King Bhoja reached the earth today the city named Dhara has become full in motion, Goddess Saraswati is well sheltered, All the educated persons are honoured.

ରାଜା ଭୋଜ ଆଗମନରେ ଆଜି ଧାରା ନଗରୀ ସଦା ଆଧାରଯୁକ୍ତା, ସରସ୍ୱତୀ ସର୍ବଦା ବୃଦ୍ଧିଯୁକ୍ତା, ସମସ୍ତ ପଣ୍ଡିତ ମଣ୍ଡିତ ହୋଇଛନ୍ତି ।

(ରାଜା ଭୋଜ ତାଙ୍କ ଅନ୍ତେ କ'ଣ ସ୍ଥିତି ହେବ ଜାଣିବା ନିମନ୍ତେ ସନ୍ୟାସୀ ବେଶ ଧାରଣ କରି କାଳିଦାସଙ୍କୁ ପଚାରିଥିଲେ । ଯେଉଁଥିରେ ବିରକ୍ତ ହୋଇ କାଳିଦାସ ଅଦ୍ୟ ଧାରା ନିରାଧାରା ଶ୍ଳୋକ କହିଥିଲେ, କିଛି ଦିନ ପରେ ରାଜା ଭୋଜ ସଂନ୍ୟାସୀ ବେଶରେ ଆସି ଭୋଜଙ୍କର ଆଗମନରେ କ'ଣ ସ୍ଥିତି ହେବ ପଚାରିବାରୁ ଭୋଜଙ୍କୁ ଚିହ୍ନିପାରି କାଳିଦାସ ଅଦ୍ୟଧାରା ସଦାଧାରା ଶ୍ଳୋକ କହିଥିଲେ ।)

तं वीक्ष्य वेपथुमती सरसाङ्गयष्टि-
र्निक्षेपणाय पदमुद्धतमुद्वहन्ती।
मार्गाचलव्यतिकराकुलितेव सिन्धुः
शैलाधिराजतनया न ययौ न तस्थौ।।८५।।

उन (शिव) को देखकर काँपती हुई सरस अङ्गयष्टि (=पतली) वाली शैलाधिराज (हिमालय) की कन्या (पार्वती) आगे बढ़ता पैर उठाये हुई रास्ते में आये पर्वत की बाधा से व्याकुल नदी की भाँति न तो बढ़ सकी और न टिक सकी।

The daughter of the King of mountain Himalayas, who had a beautiful lean body, who had raised one leg to step ahead, who was shaking having seen Lord Shiva, could not stand or go like a river blocked by a mountain coming in its path.

ସେହି (ଶିବ)ଙ୍କୁ ଦେଖି କମ୍ପୁଥିବା ସୁନ୍ଦର କ୍ଷୀଣ ଶରୀରଯୁକ୍ତା ଯିବାପାଇଁ ପାଦକୁ ଉପରକୁ ଉଠାଇଥିବା ହିମାଳୟଙ୍କର କନ୍ୟା (ପାର୍ବତୀ) ରାସ୍ତାରେ ପର୍ବତ ଗତିରୋଧ ହେଲେ ଆକୁଳିତ ହୋଇ ଉଠୁଥିବା ନଦୀ ପରି ଯାଇପାରିଲେନି କି ରହି ପାରିଲେନି ।

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तं गौरवं बुद्धगतं चकर्ष
भार्यानुरागः पुनराचकर्ष।
सोऽनिश्चयान्नापि ययौ न तस्थौ
तरंस्तरङ्गेष्विव राजहंसः।।८६।।

उसे बुद्ध का गौरव खींच ले गया और फिर धर्मपत्नी का प्रेम खींचा। अनिश्चय से वह लहरों में तैरते हुये राजहंस की तरह न तो बढ़ सका और न रुक सका। इन दोनों श्लोकों में अन्तिम चरण की चरण-स्थिति का वर्णन हृदयङ्गम करने योग्य है। पहले श्लोक में कालिदास ने और दूसरे श्लोक में अश्वघोष ने कलम तोड़ दी है। इस पंक्ति से पता नहीं चलता कि किसने दूसरे कवि की कृति का अनुकरण किया है। कौन कवि पहले पैदा हुआ और कौन बाद में, यह कालिदास के समय को जानने के लिये निर्णायक हो जायेगा।

The good qualities of Buddhadev attracted him. Again the attachment of wife attracted him. He could not go or stay in uncertainty just like a goose floating in the waves.

The prvious one was written by the great poet Kalidasa and the latter one by the Buddhist poet Ashvaghosa. Who wrote first is not yet decided.

ବୁଦ୍ଧଙ୍କ ପ୍ରତି ଅନୁଗତ ଭାବ ତାଙ୍କୁ ଆକର୍ଷିତ କଲା । ପୁନଶ୍ଚ ଭାର୍ଯ୍ୟ ପ୍ରତି ଅନୁରାଗ ଆକର୍ଷିତ କଲା । ତରଙ୍ଗରେ ପହଁରୁଥିବା ରାଜହଂସ ଯେପରି ଆଗକୁ ପଛକୁ ହୋଇ ଅନିଶ୍ଚିତତା ମଧ୍ୟରେ ଯାଇପାରେନି କି ରହିପାରେନି, ସେପରି ସେ କ'ଣ କରିବେ, କେଉଁ ଆଡକୁ ଯିବେ ସ୍ଥିର କରି ପାରିଲେନି । (ଅଶ୍ୱଘୋଷଙ୍କର ଏହି ପଦ୍ୟ ସହ କାଳିଦାସଙ୍କ ପୂର୍ବୋକ୍ତ ଶ୍ଳୋକର ସମତା ରହିଛି ।)

मान्धाता च महीपतिः कृतयुगालङ्कारभूतो गतः
सेतुर्येन महोदधौ विरचितः, क्वासौ, दशास्यान्तकः।
अन्ये चापि युधिष्ठिरप्रभृतयो याता दिवं भूपते
नैकेनापि समं गता वसुमती मुञ्ज! त्वया यास्यति?।।८७।।

राजा भोज के पिता के मरने के बाद राज्य भोज को मिलना था, पर उनके चाचा जिनका नाम मुंज था राज-पद भोज को न मिलकर मुझे मिल

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जाय, इसलिए हत्यारे से भोज को मार डालने के लिए कहा। जब हत्यारा भोज को एकान्त में ले जाकर उन्हें मारने चला, तब भोज ने उक्त श्लोक कहा जिससे सदय होकर हत्यारे ने उन्हें न मारकर छिपा दिया और मुंज से कहा कि भोज ने मरने के समय यह श्लोक आपको दिखाने के लिये दिया है। इस श्लोक से मुञ्ज के नेत्र खुल गये और वे पछताये। तब हत्यारे ने नाटक कर मुंज को भोज के सामने कर दिया।

श्लोक का अर्थ है—सतयुग के अलंकार राजा मान्धाता गत हो चुके हैं, जिन दस सिर वाले (रावण) के नाशक (राम) ने महासागर में पुल रच दिया था, वे अब कहाँ हैं? युधिष्ठिर आदि राजा भी स्वर्ग चले गये। किसी एक के भी साथ धरती (राज्य) नहीं गयी। हे मुंज तुम्हारे साथ धरती (राज्य) जायेगी।

Mandhata, the King who was considered as the ornament of Kruta (Satya) era left, where is the destroyer of the ten faced Ravana, who also constructed bridge on the ocean, Others also just like Yudhistira etc. went to the heaven, The earth has gone with none, but O Munja it will go definitely with you.

ସତ୍ୟଯୁଗର ଅଳଙ୍କାର ସଦୃଶ ରାଜା ମାନ୍ଧାତା ଚାଲିଗଲେ, ଦଶମୁଖ (ରାବଣ)କୁ ବଧ କରିଥିବା, ସମୁଦ୍ରରେ ସେତୁ ବାନ୍ଧିଥିବା ଏହି (ରାମ) କେଉଁଠାରେ ? ଯୁଧିଷ୍ଠିର ପ୍ରଭୃତି ଅନ୍ୟମାନେ ମଧ୍ୟ ସ୍ୱର୍ଗକୁ ଚାଲିଗଲେ । ହେ ଭୂପତି ମୁଞ୍ଜ ! କୌଣସି ଜଣଙ୍କ ସହିତ ପୃଥିବୀ ଗଲା ନାହିଁ । ନିଶ୍ଚିତ ତୁମ ସହିତ ଯିବ ?

आपद्गतः किल महाशयचक्रवर्ती
विस्तारयत्यकृतपूर्वमुदारभावम्।
कालागरुर्दहनमध्यगतः समन्तात्
लोकोत्तरं परिमलं प्रकटीकरोति।।८८।।

उच्च कोटि के महाशय आफत आने पर ऐसी उदारता दिखाते हैं, जो पहले नहीं हो पाई थी। काला अगरु (वस्तु-विशेष) जब आग में पड़ता है, तब चारों ओर लोकोत्तर सुगन्ध प्रकट करता है।

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कवि जगन्नाथ की यह चुटीली रचना बताती है कि जो सज्जन हैं, उसकी उदारता संकट आने पर चमक उठती है, न कि दब जाती है।

A great emperor shows unseen generosity when in a danger just like the scented powder (Agaru) spreads its uncommon fragrance in all directions while falling in fire.

ବିପତ୍ତି ଆସିଲେ ଉଚ୍ଚକୋଟିର ବ୍ୟକ୍ତି ପୂର୍ବରୁ ନ ଦେଖାଇଥିବା ଉଦାର ଭାବକୁ ପ୍ରକାଶ କରିଥାନ୍ତି,ଯେପରିକି କଳା ଅଗୁରୁ ନିଆଁରେ ପଡିଲେ ଅପୂର୍ବ ସୁଗନ୍ଧ ଚାରିପଟକୁ ବିସ୍ତାର କରିଥାଏ ।

न नटा न विटा न गायका न परद्रोहनिबद्धबुद्धयः।
नृपसद्मनि नाम के वयं कुचभारानमिता न योषितः ।।८९।।

हम न तो नट (एक्टर) हैं, न विट (खल) हैं, न गायक हैं, न परद्रोह से हमारी बुद्धि बँधी है और न स्तन-भार से झुकाई गई स्त्री हैं। हम राजदरबार में कौन हैं? (हम राज-दरबार से वंचित हैं)।

इस श्लोक में राजाओं के दरबार की कलई खोल दी गई है, जिससे भले आदमी को बच रहने का गूढ़ उपदेश है।

We are not actors, not cunning persons, not signers, not jealous persons and also not women with beautiful physic. Then who are we in the King's palace? This means that the above mentioned people stay with the King. Thus one should be very careful.

ଆମ୍ଭେମାନେ (ନଟ) ଅଭିନେତା ନୁହଁ କି (ବିଟ) ଖଳ ନୁହଁ, ଗାୟକ ନୁହଁ କି ପରଦ୍ରୋହରେ ବୁଦ୍ଧି ଲାଗି ନାହିଁ । ସ୍ତନଭାରରେ ନତ ସ୍ତ୍ରୀଲୋକ ମଧ୍ୟ ନୁହଁ । ତେବେ ରାଜପ୍ରାସାଦରେ ଆମ୍ଭେମାନେ କିଏ? ରାଜପ୍ରାସାଦରେ ଉପର୍ଯୁକ୍ତ ଲୋକମାନେ ରହିଥାନ୍ତି । ଏହି ଶ୍ଳୋକରେ ସେମାନଙ୍କଠାରୁ ସତର୍କ ରହିବା ପାଇଁ କବି ଚେତାଇ ଦେଉଛନ୍ତି ।

जयत्यदभ्रविभ्रमद्भ्रमद्भुजङ्गमश्वसद्
विनिर्गमक्रमस्फुरत्करालभालहव्यवाट्।
धिमिद्धिमिद्धिद्ध्वनन्मृदङ्गतुङ्गमङ्गल-
ध्वनिक्रमप्रवर्तितप्रचण्डताण्डवः शिवः।।९०।।

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उच्च-कोटि के विलासपूर्वक बार-बार दौड़ते हुये भुजङ्ग (सर्प) से श्वास लेने वाला और विनिगम क्रम से जिनके ललाट का हव्यवाट् (अग्नि) चमकता और कराल (भीषण) है तथा धिमिद्धिमिद्धिद्ध्वनि करने वाले मृदङ्ग (वाद्यविशेष) से उच्च मङ्गल ध्वनि-क्रम से प्रवर्तित भयङ्कर ताण्डव वाले शिव की जय हो।

Who is taking breath with a special movement of snake in the neck, in whose fore head the fire is burning furiously and who is engaged in Tandava dance with the sound of the musical instrument Mridanga, that Shiva be victorious.

ଜଟା ରୂପକ ଜଙ୍ଗଲରୁ ପ୍ରବାହିତ ହେଉଥିବା ଜଳପ୍ରବାହରେ ପବିତ୍ର ହୋଇଥିବା ଗଳା ସ୍ଥାନକୁ ଅବଲମ୍ବନ (ଆଶ୍ରୟ) କରି ଥିବା ସର୍ପର ଦୀର୍ଘ ମାଳାଯୁକ୍ତ, ଡମଡ୍‌ଡମଡ୍‌ଡମ ଶବ୍ଦ କରୁଥିବା ଡମ୍ବରୁ ଯୁକ୍ତ ପ୍ରଚଣ୍ଡ ତାଣ୍ଡବ କରୁଥିବା ଶିବ ଆମ୍ଭମାନଙ୍କର ମଙ୍ଗଳ କରନ୍ତୁ । ୯୦

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले
गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम्।
डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं
चकार चण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम्।।९१।।

जटा-रूपी जंगल से गिरते हुये जल-प्रवाह से जिसका स्थान पावन बना दिया गया है, उस कण्ठ में सर्प से ऊँची लटकती हुई माला का सहारा लेकर "डमड्डमड्डमडमड्" शोर करने वाला डमरू जहाँ बज रहा था, प्रचण्ड ताण्डव (नृत्य) किया, वे शिव हमारा शिव (कल्याण) करें।

Shiva may bring welfare to us who did furious dance (Tandava) with the dama-ddama-ddama sound of hand drum (Dambaru), who has a long garland of snake hanging in the neck, the place which is purified by the stream flowing from thick hairs.

ଜଟା ରୂପକ ଜଙ୍ଗଲରେ ଭ୍ରମରେ ଭ୍ରମଣ କରୁଥିବା ଦେବନଦୀର (ଝରଣାର) ସୁଚଂଚଳ ଲହରୀ ରୂପକ ଲତା ଯାହାଙ୍କର ମସ୍ତକରେ ଶୋଭା ପାଉଛି ଧଗଦ୍-ଧଗଦ୍-ଧଗଦ୍ ଶବ୍ଦ କରି ଯାହାଙ୍କର ଲଲାଟରେ ଅଗ୍ନି ଜଳୁଛି, କିଶୋରଚନ୍ଦ୍ରଙ୍କୁ ଶିଖରରେ ଧାରଣ କରିଥିବା ଶିବଙ୍କଠାରେ ମୋର ରତି ପ୍ରତିକ୍ଷଣ ରହୁ । ୯୦

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भर्ता मे महिषासुरः कृतयुगे देव्या भवान्या हत-
स्तस्मात् तद्दिनतो भवामि विधवा वैधव्यधर्मादहम्।
दन्ता मे गलिताः कुचा विगलिता भग्नं विषाणद्वयं
तस्मात्सम्प्रति गर्भधारणकथां पृच्छन्न किं लज्जसे।।९२।।

राजा भोज ने एक कवि की कविता सुनकर आदेश दिया कि इनकी सेवा में एक भैंस भेजो। जो भैंस उन्हें दी गई, वह बूढ़ी थी और गर्भ-धारण नहीं कर सकती थी, जिससे कवि को दुग्ध की प्राप्ति नहीं हो सकती थी, यह ताड़कर कवि ने अपने कान भैंस के मुँह से लगाकर सुनने का अभिनय करते हुये राजा से कहा कि (खेद है कि) यह भैंस यह कह रही है।

सतयुग में मेरे स्वामी महिषासुर का वध देवी पार्वती ने कर दिया था, जिसके कारण उस (वध) दिन से मैं वैधव्य धर्म का पालन करनें के कारण विधवा हो गई हूँ। मेरे दाँत गल गये हैं, थन बिल्कुल गलित हो गये हैं और दोनों सींगें टूट गई हैं, इसलिये इस समय गर्भधारण की बात पूछते हुये तुम्हें लाज नहीं आती।

My husband Mahisasura was killed by goddess Bhavani in Kruta era. So from that day I have become widow leading a life of widowhood. My teeth are broken, breasts are fallen down, both my horns are broken. So now don't you feel shame while asking about bearing the foetus?

ମୋର ପତି ମହିଷାସୁରକୁ ଦେବୀ ଭବାନୀ ସତ୍ୟଯୁଗରେ ମାରିଥିଲେ । ତେଣୁ ସେହି ଦିନଠାରୁ ମୁଁ ବିଧବା ହୋଇ ବୈଧବ୍ୟଧର୍ମ ପାଳନ କରୁଛି । ମୋର ଦାନ୍ତ ପଡିଗଲାଣି, ସ୍ତନ ଧୁକୁଡି ଗଲାଣି । ଶିଙ୍ଗ ଦୁଇଟି ଭାଙ୍ଗି ଗଲେଣି । ତେଣୁ ବର୍ତ୍ତମାନ ଗର୍ଭଧାରଣ ବିଷୟରେ ପଚାରି କ'ଣ ଲଜ୍ଜା ଅନୁଭବ କରୁନାହଁ ?

(ରାଜା ଭୋଜ ଜଣେ କବିଙ୍କୁ ମଇଁଷୀ ଦେଇଥିଲେ । ଥରେ କବିଙ୍କର ପ୍ରସନ୍ନତା ବିଷୟରେ ଜାଣିବାକୁ ଚାହିଁବାରୁ କିପରି ବୁଢୀ ମଇଁଷୀ ରାଜକର୍ମଚାରୀ ଦେଇଛନ୍ତି, ତାହା ମଇଁଷୀ ମୁହଁରେ କବି ଏପରି ବ୍ୟକ୍ତ କଲେ । ଏହା ଏକ ଅନ୍ୟୋକ୍ତିପରକ ଶ୍ଳୋକ)

नाहं जानामि केयूरे न च जानामि कुण्डले।
नुपूरे त्वभिजानामि नित्यं पादाभिवन्दनात्।।९३।।

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सीता ने हरण के समय विमान से अपने जो अलंकार नीचे फेंक दिये थे, उन्हें पहचानने के लिये कहने पर लक्ष्मण बोले मैं न तो दोनों केयूर (बिजायट) पहचानता हूँ और न दोनों कुण्डल। इसके विपरीत दोनों नूपुर (बिछियायें) भाभी सीता के नित्य चरण-वन्दना करने से पहचानता हूँ। (कैसा श्रद्धा का अतिरेक है!)

I don't recognize the armlet or the ear rings. But I recognize the anklets due to worshipping the feet everyday. This reflects the devotion of Lakshman to Sita.

ମୁଁ କେୟୂର ଜାଣିନି କି କୁଣ୍ଡଳ ଜାଣିନି । ପ୍ରତିଦିନ ପାଦ ବନ୍ଦନ କରୁଥିବାରୁ ନୂପୁର ଚିହ୍ନିଛି । ଏହି ପଦ୍ୟରେ ଲକ୍ଷ୍ମଣ ସୀତାଙ୍କ ପ୍ରତି ଭକ୍ତି ବର୍ଣ୍ଣନ କରାଯାଇଛି ।

इतरपापशतानि निजेच्छया
वितर तानि सहे, चतुरानन।
अरसिकेषु कवित्वनिवेदनं,
शिरसि मा लिख मा लिख मा लिख ।।९४।।

हे चतुरानन ब्रह्मा! स्वेच्छा से अन्य सैकड़ों पापों को करने के लिए मेरे भाग्य पंक्ति में लिख दो, परन्तु मेरे भालपट्ट में अरसिक जनों को कविता सुनाने के लिए मत लिखो, मत लिखो, मत लिखो।

O Chaturanana ! (Fourheaded one), give me hundreds of sin, at your own wish, I shall tolerate. Please don't write, don't write, don't write on my forehead (fate) to recite poem before a person who does not appreciate beauty or excellence of it.

ହେ ଚତୁରାନନ (ବ୍ରହ୍ମା), ନିଜ ଇଚ୍ଛାରେ ଅନ୍ୟ ଶହ ଶହ ପାପ ଦିଅ, ତାହାକୁ ସହିବି, ହେଲେ ମୋର ଲଲାଟରେ (ଭାଗ୍ୟରେ) ଅରସିକକୁ କବିତା ଶୁଣାଇବା ଲେଖ ନାହିଁ, ଲେଖ ନାହିଁ, ଲେଖ ନାହିଁ ।

हे पान्थ पुस्तकधर क्षणमत्र तिष्ठ
वैद्योऽसि वा गणकशास्त्रविशारदोऽसि।
केनौषधेन मम पश्यति नक्तमम्बा
किं वागमिष्यति पतिः सुचिरप्रवासी।।९५।।

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हे पथिक, हाथ में पुस्तक रखने वाले! क्षण भर रुको। तुम क्या वैद्य हो अथवा ज्योतिषविद्या में निपुण हो? किस दवाई से मेरी माँ (जो कि दृष्टिहीन है) रात में देख सकती है? (अर्थात् वह देख नहीं सकती) (और यदि तुम ज्योतिषी हो) मेरे पति जो चिरकाल प्रवास में रहने वाले हैं, कब भला घर में लौटेंगे?। (यहाँ स्वयं दूती बन कर नायिका पथिक को आमन्त्रित कर रही है)

O traveller, holding books in hands, please hear me for some moments. Are you a doctor or an astrologer. With the help of which medicine my mother-in-law is able to see at night (in darkness) or when my hundand will be back who has gone abroad for a long time? The suggested meaning is that mother in law is unable to see and the husband is out of station. Thus she is indirectly inviting the stranger.

ହାତରେ ପୁସ୍ତକ ଧରିଥିବା ହେ ପଥିକ ! ଏଠାରେ କ୍ଷଣମାତ୍ର ରହିଯାଅ । ତୁମେ ବୈଦ୍ୟ ଅଥବା ଗଣକଶାସ୍ତ୍ର (ଜ୍ୟୋତିଷଶାସ୍ତ୍ର) ବିଶାରଦ । ଯଦି ବୈଦ୍ୟ କେଉଁ ଔଷଧ ଖାଇଲେ ମୋର ଶାଶୁ ରାତିରେ ଦେଖି ପାରିବେ, ଅଥବା (ଯଦି ଜ୍ୟୋତିଷ) ଦୀର୍ଘ ଦିନରୁ ବିଦେଶ ଯାଇଥିବା ପତି କେବେ ଫେରିବେ ? (ବ୍ୟଞ୍ଜନା ମାଧ୍ୟମରେ ଶାଶୁର ନ ଦେଖି ପାରିବା ଏବଂ ପତି ଘରେ ନ ଥିବା କଥା କହି ନାୟିକା ପରପୁରୁଷ କାମନା କରୁଛି)

यौ तौ शङ्खकपालभूषितकरौ मालास्थिमालाधरौ।
देवौ द्वारवतीश्मशाननिलयौ नागारिगोवाहनौ।
द्विचक्षौ बलिदक्षयज्ञमथनौ श्रीशैलजावल्लभौ
पापं ते हरतां सदा हरिहरौ श्रीवत्सगङ्गाधरौ।।९६।।

जो दो देवता ऐसे हैं, जिनमें एक का हाथ शंख से विभूषित है, तो दूसरे का कपाल से विभूषित है। एक वैजयन्ती की माला धारण करने वाले हैं, तो दूसरा अस्थि की ही माला धारण करते हैं। एक द्वारवती में निवास करते हैं, तो दूसरे ने श्मशान को ही अपना घर बनाया है। एक सर्पों के शत्रु गरुड को अपना बाहन बनाया है, दूसरे ने वृषभ को वाहन बनाया है । एक दो आँख वाले हैं, तो दूसरे तीन आँख वाले। एक ने बलि के यज्ञ का मन्थन किया था, तो दूसरे ने दक्ष के यज्ञ का, एक श्री लक्ष्मी के वल्लभ

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हैं, तो दूसरे पर्वत से उत्पन्न गौरी के पति हैं, एक अपने छाती पर श्रीवत्स का चिह्न धारण करते हैं, तो दूसरे ने अपने माथे से गङ्गा को ही धारण कर रखा है, ऐसे हरि विष्णु और हर शिव सदा आप के पापों का हरण करते रहैं।

Those two gods in whose hands there is counch and skull, who bear garland and a chain of skulls, whose residence (rest place) are Dwaravati and funeral groud, whose vehicles are the enemy of snakes (Garuda) and bull, who have two and three eyes, who had destroyed the rites of Bali (King of demons) and Daksha, who are husbands of Shri (Lakshmi) and Shailaja (Parvati), who are bearing the foot sign of Shrivatsa and the river Ganges respectively.Those two gods Hari and Hara may take away your sins always.

ସେହି ଯେଉଁ ଦୁଇ ଦେବତା ଜଣଙ୍କ ହାତରେ ଶଙ୍ଖ ଓ ଅନ୍ୟ ଜଣଙ୍କ ହାତରେ କପାଳ ଶୋଭା ପାଉଛି । ଜଣେ ମାଳା ତଥା ଅନ୍ୟଜଣେ ମୁଣ୍ଡମାଳା ଧାରଣ କରିଛନ୍ତି । ଜଣଙ୍କର ନିବାସ ଦ୍ୱାରିକାରେ ତଥା ଅନ୍ୟଜଣେ ଶ୍ମଶାନରେ ବାସ କରୁଛନ୍ତି, ଜଣେ ନାଗଙ୍କର ଶତ୍ରୁ ଗରୁଡଙ୍କୁ ତଥା ଅନ୍ୟଜଣେ ବୃଷଭଙ୍କୁ ବାହନ କରିଛନ୍ତି, ଜଣଙ୍କର ଦୁଇଟି ଓ ଅନ୍ୟ ଜଣଙ୍କର ତିନୋଟି ଆଖି, ଜଣେ (ଦାନବରାଜା) ବଳିଙ୍କର ତଥା ଅନ୍ୟ ଜଣେ ଦକ୍ଷଙ୍କର ଯଜ୍ଞ ଧ୍ୱଂସ କରିଥିଲେ । ଜଣେ ଶ୍ରୀ(ଲକ୍ଷ୍ମୀ)ଙ୍କର ଅନ୍ୟଜଣେ ଶୈଳଜା (ପାର୍ବତୀ)ଙ୍କର ପତି, ଏହିପରି ଶ୍ରୀବତ୍ସ ପଦଚିହ୍ନ ଓ ଗଙ୍ଗାଙ୍କୁ ଧାରଣ କରିଥିବା ହରି ଓ ହର ସର୍ବଦା ତୁମର ପାପକୁ ହରଣ କରନ୍ତୁ ।

दर्भाङ्कुरेण रचिता जननी वनान्ते
प्राणेश्वरोऽपि वदति त्वरितं प्रयाहि।
एषोऽग्रतः कुलपतिस्तपति प्रचण्डो
वामे विधौ भवति वाममयं हि विश्वम्।।९७।।

जब विधाता विपरीत होते हैं, तो सम्पूर्ण विश्व ही विपरीत आचरण करने वाला हो जाता है। देखिये न, सीता के लिए वन के प्रान्त भाग में उनकी माता पृथिवी ने ही कुशों के अंकुर से काँटा बिछा दिया। उस पर भी

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उनके प्राणों के प्रिय पतिदेव शीघ्र चलने के लिए कहते हैं। इससे भी आगे उनके कुल के स्वामी सूर्यदेव प्रचण्ड रूप से तप रहे हैं।

When the fate is adverse, everything shall be negative. When Sita went to the forest, there the land was scattered with thorns of grass, the husband (Rama) was asking to walk speedly (on that ground) and the father of solar dynesty i.e; sun-god is heating strongly from the front side. (Though all of them were liking Sita, yet behave cruelly due to her misforture.)

ବିଧି (ଭାଗ୍ୟ) ବିପରୀତ ହେଲେ ସମସ୍ତ ଜଗତ ବିପରୀତ ପରିସ୍ଥିତି ଯୁକ୍ତ ହୋଇଥାଏ । (ଯେପରି ସୀତା ବନବାସ କାଳରେ) ତାଙ୍କର ଜନନୀ (ପୃଥିବୀ) ବନପ୍ରାନ୍ତରେ କୁଶର ଅଙ୍କୁର ରୂପକ କଂଟା ବିଛେଇ ଦେଇଛନ୍ତି । ସେଥିରେ ପ୍ରାଣେଶ୍ୱର (ସ୍ୱାମୀ) ଶୀଘ୍ର ଆସିବା ନିମନ୍ତେ କହୁଛନ୍ତି । କୁଳର ପତି (ଦେବତା) ସୂର୍ଯ୍ୟ ପ୍ରଚଣ୍ଡ ଉତ୍ତାପ ଦେଉଛନ୍ତି ।

भवित्री रम्भोरु! त्रिदशवदनग्लानिरधुना
स ते रामस्त्राता न युधि कुशलो लक्षणसखः।
ध्रुवं गच्छत्युच्चैर्विपदमधुना वानरचमू-
लघिष्ठेदं षष्ठाक्षरपरविलोपात्पठ पुनः।।९८।।

हे रम्भोरु! देवताओं के मुख पर इस समय ग्लानि होने वाली है। तुम्हारी रक्षा करने वाले लक्ष्मण के भाई राम युद्ध में कुशल नहीं होंगे। निश्चित ही इस समय वानरों की सेना बहुत बड़ी विपत्ति में पड़ने वाली है। ऊपर के प्रत्येक पाद के षष्ठ अक्षर के पर अर्थात् सप्तम अक्षर को निकाल कर पुनः पढ़ो। तब 'त्र' हटाने से दशवदन रावण इस समय ग्लानि को प्राप्त होने वाला है। द्वितीय पद के सप्तम अक्षर 'न' अक्षर के लोप करने पर तुम्हारे रक्षक राम युद्ध में कुशल होंगे। इसी प्रकार तृतीय पाद के सप्तम अक्षर 'वि' पद के लोप करने पर निश्चित ही वानरी सेना युद्ध में उन्नत पद को प्राप्त करेगी।

O lady with beautiful thighs, now the sign of sorrow will be seen on the gods faces. That Rama who has come

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

with Lakshman to save you will not succeed in battle today. Surely the army of monkeys will fall in great trouble now. Again read the same by dropping the seventh letter. Then the meaning will be now the sign of sorrow will be seen on Ravana's face, Your protector that Rama with Lakshman will succeed in battle today. Surely the army of monkeys will achieve a high position today – by dropping the letters seven respectively in above three lines.

ହେ ରମ୍ଭୋରୁ, ଦେବତାମାନଙ୍କର ମୁଖରେ ଏବେ (ବର୍ତ୍ତମାନ) ଗ୍ଲାନି ହେବାକୁ ଯାଉଛି । ତୁମର ରକ୍ଷା କରିବାବାଲା ଲକ୍ଷ୍ମଣଙ୍କ ସଖା ରାମ ଯୁଦ୍ଧରେ କୁଶଳ ହେବେ ନାହିଁ । ନିଶ୍ଚିତ ଭାବରେ ବାନର ସେନା ବର୍ତ୍ତମାନ ବଡ ବିପଦରେ ପଡିବେ । ଏହା ଶୁଣି ସୀତା ରାବଣଙ୍କୁ କହିଛନ୍ତି ଏହି ଶ୍ଳୋକରେ ଷଷ୍ଠ ଅକ୍ଷର ପରବର୍ତ୍ତୀ (ସପ୍ତମ) ଅକ୍ଷରକୁ ଲୋପ କରି ଛୋଟ କରି ପୁଣି ପଢ ।

ଏପରି କଲେ ଅର୍ଥ ହେବ (ତ୍ରି) ଦଶବଦନ (ରାବଣ)ର ଏବେ ମୁଖରେ ଗ୍ଲାନି ହେବାକୁ ଯାଉଛି । ତୁମର ଭ୍ରାତା ଲକ୍ଷ୍ମଣଙ୍କ ସଖା ରାମ ଯୁଦ୍ଧରେ କୁଶଳ (ନ) ହେବେ । ବାନରସେନା ନିଶ୍ଚିତ ଭାବରେ ବର୍ତମାନ ଉଚ୍ଚ(ବି) ପଦକୁ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବେ । ଏହା ବର୍ଣ୍ଣଲୋପର ଏକ ଚମତ୍କାର ଉଦାହରଣ ।

पञ्चत्वं तनुरेतु भूतनिचयाः स्वांशे विशन्तु ध्रुवं
धातारं प्रणिपत्य नम्रशिरसा याचे तमेकं वरम्।
तद् वापीसु पयस्तदीयमुकुरे ज्योतिस्तदीयाङ्गन
व्योग्नि व्योम तदीयवर्त्मसु धरा तत्तालवृन्तेऽनिलः।।९९।।

नत मस्तक होकर प्रणिपातपूर्वक विधाता से एक वर माँगता हूँ कि मेरे पञ्चमहाभूत के स्व स्व अंश (निम्नानुसार) उनके लिए स्नान के उपयोग जलाशय में मेरे जलतत्त्व, दर्पण में अग्नि तत्त्व, उनके मन्दिर के ऊपर मेरा आकाश तत्त्व, उनके मार्ग पर मेरा भूतत्त्व एवं उनके तालवृत्त में मेरा वायुतत्त्व विलीन हो।

I bow down to the creator Lord with reaccess a lowered head, do beg for that lone boon. Let my body disperse in to the five elements let the aggregate of the elements certainly

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

to their own parts. Let the water be in the wells, the light (fire) in reflecting mirror, the ether in the sky of the courtyard sky, the earth on his paths and the air in the palm leave fan.

ମୋର ଶରୀରର ପଞ୍ଚମହାଭୂତଙ୍କୁ ସ୍ୱ ସ୍ୱ ଅଂଶରେ ନିଶ୍ଚିତ ରୂପେ ବିଲୀନ କରିଦେବା ନିମନ୍ତେ ମୁଁ ବିଧାତାଙ୍କ ନିକଟରେ ନତ ଶିରରେ ପ୍ରଣିପାତ ପୂର୍ବକ ଏକ ବର ଯାଚନା କରୁଅଛି । ତାଙ୍କ(ଈଶ୍ୱରଙ୍କ) ସ୍ନାନ ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟରେ ଆସୁଥିବା ବାପିଜଳରେ ମୋର ଜଳତତ୍ତ୍ୱକୁ, ତାଙ୍କ ଦର୍ପଣରେ ମୋର ଅଗ୍ନିତତ୍ତ୍ୱକୁ, ତାଙ୍କ ମନ୍ଦିର ଉପରେ ଥିବା ଆକାଶରେ ମୋର ଆକାଶତତ୍ତ୍ୱକୁ , ତାଙ୍କ ଚଲାପଥରେ ମୋର ମୃତ୍ତିକା ତତ୍ତ୍ୱକୁ ଏବଂ ତାଙ୍କ ତାଳବୃନ୍ତରେ ମୋର ବାୟୁତତ୍ତ୍ୱକୁ ମିଶାଇ ଦିଅନ୍ତୁ । (ଏହାଦ୍ୱାରା ମୃତ୍ୟୁ ପରେ ମଧ୍ୟ ମୁଁ ଭଗବତ୍ ସାନ୍ନିଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ କରି ପାରିବି)

अहि रिपुपतिकान्ता-तातसम्बद्धकान्ता-
हरतनयनिहन्तृ-प्राणदातृध्वजस्य।
सखिसुतसुतकान्तातातसंपूज्यकान्ता-
पितृशिरसि पतन्ती जाह्नवी वः पुनातु।।१००।।

सर्पों के शत्रु गरुड, उनके स्वामी विष्णु, उनकी पत्नी लक्ष्मी, उनके पिता समुद्र, समुद्र को बाँधने वाले राम, उनकी पत्नी सीता, उनका हरण करने वाला रावण, उनका पुत्र इन्द्रजित, उसको मारने वाले लक्ष्मण, उनके प्राणदाता हनुमान् जो अर्जुन के ध्वज पर विराजमान हैं, उनके (अर्जुन के) सखा कृष्ण, उनका पुत्र प्रद्युम्न, उनका पुत्र अनिरुद्ध, उनकी पत्नी उषा, उनका पिता बाणासुर, उनके आराध्य शिव, उनकी पत्नी पार्वती, उनके पिता हिमालय, उनके ऊपर अवतरिता जाह्नवी (गंगा) आपकी रक्षा करें। आपको पवित्र करें।

Let the daughter of Janhu, Ganga, descending upon serpents' enemy (Garuda)'s Lord's consort's father's beloved's kidnapper's son's slayer's life bestower's friend's son's son's wife's father's son's adored consort's father's head, son's sanctify you all/render you all sacred.

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ଅହିରିପୁ ଗରୁଡ, ତାଙ୍କ ସ୍ୱାମୀ ବିଷ୍ଣୁ, ତାଙ୍କ ପତ୍ନୀ ଲକ୍ଷ୍ମୀ, ତାଙ୍କ ପିତା ସମୁଦ୍ର, ତାଙ୍କୁ ବାନ୍ଧିଥିବା ରାମ, ତାଙ୍କ ପତ୍ନୀ ସୀତା, ତାଙ୍କ ହର୍ତ୍ତା ରାବଣ , ତାଙ୍କ ପୁତ୍ର ଇନ୍ଦ୍ରଜିତ୍, ତାଙ୍କ ହନ୍ତା ଲକ୍ଷ୍ମଣ, ତାଙ୍କ ପ୍ରାଣଦାତା ହନୁମାନ୍ ଯେ କି ଅର୍ଜୁନଙ୍କର ଧ୍ୱଜରେ ରହିଛନ୍ତି । ସେହି ଅର୍ଜୁନଙ୍କର ସଖା କୃଷ୍ଣ, ତାଙ୍କ ସୁତ ପ୍ରଦ୍ୟୁମ୍ନ,ତାଙ୍କ ପୁତ୍ର ଅନିରୁଦ୍ଧ,ତାଙ୍କ ସ୍ତ୍ରୀ ଉଷା ,ତାଙ୍କ ପିତା ବାଣାସୁର, ତାଙ୍କ ଆରାଧ୍ୟ ଶିବ, ତାଙ୍କ ପତ୍ନୀ ପାର୍ବତୀ , ତାଙ୍କ ପିତା ହିମାଳୟରେ ଅବତରିତା ଜାହ୍ନବୀ (ଗଙ୍ଗା) ଆପଣ ମାନଙ୍କୁ ରକ୍ଷା କରନ୍ତୁ ।

रामे प्रव्रजनं बलेर्नियमनं पाण्डुसुतानां वनं
वृष्णीनां निधनं नलस्य नृपतेः राज्यात्परिभ्रंशनम्।
कारागारनिषेवणं च मरणं संचिन्त्य लङ्केश्वरे
सर्वः कालवशेन नश्यति नरः को वा परित्रायते।।१०१।।

राम का निर्वासन, राजा बलि का पातालगमन, पाण्डवों का वनगमन, वृष्णियों (यादवों) का निधन, नल का राज्य से निष्कासन एवं कारागारवास, लङ्केश्वर राणव का निधन ये सबसे लगता है कि सब कुछ काल के वश में है। इससे कोई बच नहीं सकता।

Rama suffered exide, Bali was sent down, the sons of Pāṇḍu went to the forest, the Vṛṣṇis were anihilated, the king Nala was dethroned from his kingdom, the Lord of Lanka was killed–all human beings indeed meet with their end through the operation of time: who indeed could ever escape?

ରାମଙ୍କ ବନବାସ, ବଳିଙ୍କର ନିୟମନ (ପାତାଳଗମନ),ପାଣ୍ଡବମାନଙ୍କର ବନଗମନ, ବୃଷ୍ଣିବଂଶର ନିଧନ, ରାଜା ନଳଙ୍କର ନିର୍ବାସନ ଏବଂ କାରାଗାରବାସ, ଲଙ୍କେଶ୍ୱର ରାବଣର ମରଣ ଦେଖି ବୋଧ ହେଉଛି, ସବୁ କିଛି କାଳ ବଶରେ । କୌଣସି ମନୁଷ୍ୟ କାଳ ପ୍ରଭାବରୁ ନିଜକୁ ରକ୍ଷା କରି ପାରିବ ନାହିଁ ।

एके सत्पुरुषाः परार्थघटकाः स्वार्थं परित्यज्य ये
सामान्यास्तु परार्थमुद्यमभृतः स्वार्थाविरोधेन ये।
तेऽमी मानुषराक्षसाः परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति ये
ये निघ्नन्ति निरर्थकं परहितं ते के न जानीमहे ।।१०२।।

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुछ ऐसे सत्पुरुष हैं, जो अपने स्वार्थ को त्याग कर दूसरों का उपकार करते हैं, सामान्यलोग अपने स्वार्थ के अविरोध में दूसरों की भलाई करते हैं, वे मनुष्य रूपी राक्षस हैं, जो अपने कार्य साधने के लिए परहित को नाश कर देते हैं। जो लोक निरर्थक दूसरे के हित को नष्ट करते हैं, वे किस प्रकार के हैं, हम नहीं जानते हैं।

A few righteous persons are those that ensure public good by relinquishing their selfish interest; the mediocre are those that without compromising their self, do make attempts to benefit others; but those are the demons in human form, who damage others interests for serving their self; but finally there are those who destroy others interests without any purpose of their own and we sadly fail to recognise as to who they are.

କିଛି ସତ୍ ପୁରୁଷ ନିଜ ସ୍ୱାର୍ଥକୁ ପରିତ୍ୟାଗ କରି ଅନ୍ୟ କାର୍ଯ୍ୟ ନିମନ୍ତେ ଉଦ୍ୟମ କରିଥାନ୍ତି । ଯେଉଁମାନେ ନିଜର ସ୍ୱାର୍ଥ ବ୍ୟାହତ ନ ହେଉଥିଲେ ଅନ୍ୟର ଉପକାର କରନ୍ତି, ସେମାନେ ସାମାନ୍ୟ ଜନ । ସେମାନେ ମନୁଷ୍ୟ ରୂପୀ ରାକ୍ଷାସ, ଯେଉଁମାନେ ନିଜ ସ୍ୱାର୍ଥ ନିମନ୍ତେ ପରହିତକୁ ନଷ୍ଟ କରନ୍ତି । ଯେଉଁମାନେ ନିରର୍ଥକ ପରହିତକୁ ନଷ୍ଟ କରିଥାନ୍ତି ସେମାନେ କେଉଁ ପ୍ରକାରର ଆତ୍ମକୁ ଜଣାନାହିଁ ।

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

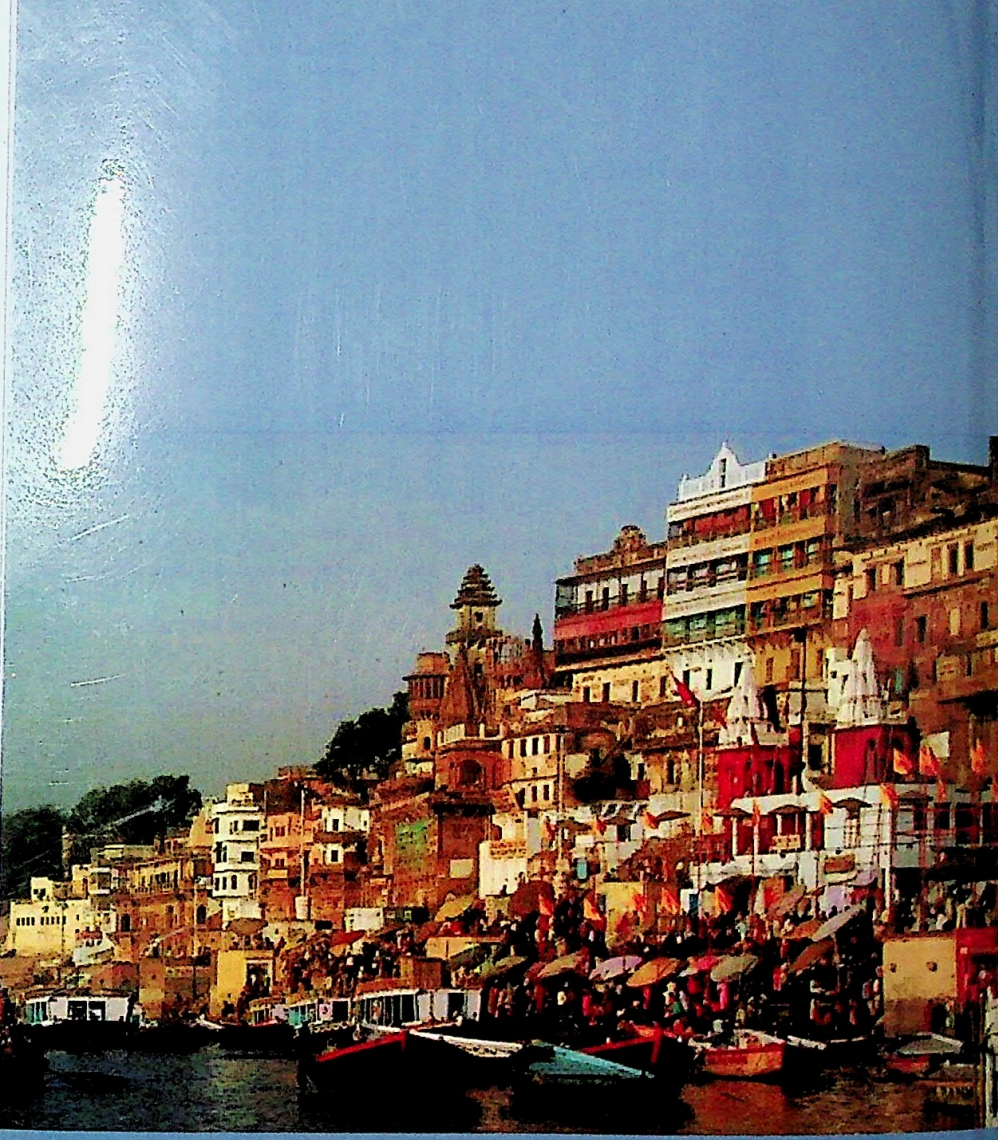

शैवभारतीशोधप्रतिष्ठानम्

डी. ३५/७७, जंगमवाड़ीमठ, वाराणसी-२२१००१

978-93-82639-32-9

₹ 250.00

CC-0. Jangumwadi Math Collection. Digitized by eGangotri